राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 धोनी ने 42वां जन्मदिन मनाया, वो 7 मौके जब गुस्से में आए.....

कांग्रेस गहलोत के चेहरे पर चुनाव क्यों नहीं लड़ना चाहती? सचिन पायलट..... 12

वर्ष : 14 | अंक : 55 | नई दिल्ली, शनिवार, 08 जुलाई, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

विकास में पिछड़े क्षेत्रों में आज भारत कर रहा इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास : प्रधानमंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को रायपुर में सुबह एक सार्वजनिक कार्यक्रम में विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया। इस दौरान प्रधानमंत्री ने इंफ्रास्ट्रक्चर को विकास से जोड़ते हुए कहा कि पिछले 9 साल में उनकी सरकार द्वारा किए गए विकास कार्यों से सबसे ज्यादा लाभ पिछड़े क्षेत्रों को हुआ है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में दशकों तक इंफ्रास्ट्रक्चर कमजोर रहा जिसके चलते विकास में देरी हुई। आज भारत उन क्षेत्रों में अधिक इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित कर रहा है जो विकास के क्षेत्र में पिछड़े रह गए। प्रधानमंत्री ने आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर को सामाजिक न्याय से जोड़ते हुए कहा कि सदियों से अन्याय और असुविधा का सामना कर रहे लोगों तक आज भारत सरकार आधुनिक सुविधाएं पहुंचा रही है। उन्होंने कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर से लोगों को जीवन में आसानी, कारोबार में आसानी, रोजगार के अवसर और तेज विकास मिलता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ तो इकोनामिक कॉरिडोर से जुड़ रहा है। रायपुर धनबाद इकोनामिक कॉरिडोर और रायपुर विशाखापट्टनम इकोनामिक कॉरिडोर इस पूरे क्षेत्र का भाग्य बदलने वाले हैं। उन्होंने कहा कि यह आर्थिक गलियारे आकांक्षी जिलों से होकर गुजर रहे हैं। यह जिले कभी पिछड़े माने जाते थे और यहां हिंसा और अराजकता हावी थी। आज उन्हीं जिलों में भारत सरकार की कमान में विकास की नई गाथा लिखी जा रही है। उन्होंने कहा कि आज छत्तीसगढ़ को 7000 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का उपहार मिला है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 9 वर्ष में छत्तीसगढ़ को 20 प्रतिशत से अधिक गांवों में मोबाइल कनेक्टिविटी नहीं थी और अब यह घटकर केवल 6 प्रतिशत रह गई है। इनमें से अधिकतर जनजाति है और नक्सल हिंसा से प्रभावित गांव हैं। उन्होंने कहा कि गरीब, दलित, पिछड़े और आदिवासियों की बस्तियां आज सड़कों और रेल लाइनों से जुड़ रही हैं। दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले मरीजों, माताओं बहनों को आज अस्पताल पहुंचने में सुविधा हो रही है। इससे पहले अवसंरचना विकास को बढ़ावा देते हुए प्रधानमंत्री ने लगभग 6,400 करोड़ रुपये की पांच राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। प्रधानमंत्री 6-लेन वाले ग्रीनफील्ड रायपुर-विशाखापत्तनम कॉरिडोर के छत्तीसगढ़ खंड के लिए तीन राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला भी रखी। प्रधानमंत्री ने 103 किलोमीटर लंबी रायपुर-खरियार रोड रेल लाइन के दोहरीकरण को भी राष्ट्र को समर्पित किया, जिसे 750 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किया गया है। प्रधानमंत्री ने कोरबा में 130 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से निर्मित 60 हजार मीट्रिक टन प्रति वर्ष की क्षमता वाले इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के बॉटलिंग प्लांट को भी राष्ट्र को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम में संशोधन से छत्तीसगढ़ राज्य को बहुत लाभ हुआ है। इसके परिणामस्वरूप खनिज विकास और रोजगार सृजन को बड़ा बढ़ावा मिला है। उन्होंने पिछली सरकार से अपनी सरकार की तुलना करते हुए कहा कि 2010-2014 की अवधि के दौरान, छत्तीसगढ़ को रॉयल्टी भुगतान के रूप में 1,300 करोड़ रुपये की राशि प्राप्त हुई। जबकि 2015-16 से 2020-21 की अवधि के दौरान यह राशि एमएमडीआर अधिनियम के तहत 2,800 करोड़ रुपये थी। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 7-8 जुलाई के बीच चार राज्यों की यात्रा पर हैं।

मौसम

अधिकतम तापमान 38.0°C

न्यूनतम तापमान 27.0°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना 60,355

चांदी 69,700

सेंसेक्स 65,280

निफ्टी 19,332

प्रधानमंत्री मोदी के भव्य स्वागत के लिए तैयार काशी, जगह-जगह पुष्पवर्षा की तैयारी

वाराणसी आने के पहले प्रधानमंत्री ने ट्वीट कर दी जानकारी

- बाबा विश्वनाथ की नगरी वाराणसी की विकास यात्रा में एक और अहम पड़ाव आने वाला

वाराणसी, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दो दिवसीय दौरे पर शुक्रवार अपराह्न अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी आ रहे हैं। प्रधानमंत्री के भव्य स्वागत के लिए भाजपा कार्यकताओं के साथ आम जन भी तैयार है। प्रधानमंत्री के जनसभा में भाग लेने के लिए भाजपा कार्यकताओं का समूह पूर्वाह्न से ही हरहुआ वाजिदपुर पहुंचने लगा है। शहर से वाजिदपुर तक पूरे राह भाजपा का झंडा लहरा रहा है। जगह-जगह प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए होर्डिंग बैनर लगाया गया है। शहर के चौकाघाट से राजघाट की ओर जाने वाले राजमार्ग पर दोनों तरफ जी-20 के तर्ज पर सजाया गया हैं। प्रधानमंत्री जिस रूट से गुजरेंगे उस रोड पर काशी की जनता और भाजपा कार्यकर्ता पुष्प वर्षा कर स्वागत करेंगे। उधर, प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए अभेद किलेबंदी की गई है। उनकी आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था में एसपीजी के नेतृत्व में एनएसजी और आतंकवाद निरोधक दस्ते के कमांडो के साथ ही केंद्रीय खुफिया एजेंसी के अधिकारी तैनात किए गये है। वहीं, तेज तर्रार 20 आईपीएस अफसरों के नेतृत्व में 3500 से ज्यादा पुलिस, पीएसी और सेंट्रल पैरामिलिट्री फोर्स के जवान प्रधानमंत्री के कार्यक्रम स्थल, उनकी आवाजाही से संबंधित रूट और बीएलडब्ल्यू स्थित उनके रात्रिकालीन विश्राम स्थल के इर्द-गिर्द तैनात किए गये है। प्रधानमंत्री की सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर जिले में हाई अलर्ट घोषित है। बाबतपुर एयरपोर्ट से वाजिदपुर होते हुए शहर तक अलसुबह से ही चप्पे-चप्पे पर चौकसी बरती जा रही है। वाराणसी आने के लिए प्रधानमंत्री भी बेकरार अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी आने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी बेकरार है। उन्होंने वाराणसी आने के पहले हर बार की तरह ट्वीट कर दौरे की जानकारी दी हैं। उन्होंने गुरुवार की रात ट्वीट कर लिखा है बाबा विश्वनाथ की नगरी वाराणसी की विकास यात्रा में एक और अहम पड़ाव आने वाला है। वहां कई विकास परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास का सुअवसर मिलेगा। इनमें पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन-सोन नगर के बीच डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के अलावा तीन रेल लाइनों का लोकार्पण भी शामिल है। इनके साथ ही यूपी में शत-प्रतिशत रेल विद्युतीकरण पूरा हो गया है। प्रधानमंत्री ने दूसरे ट्वीट में लिखा है इस पूरे क्षेत्र के लोगों का जीवन आसान बनाने के लिए वाराणसी-जौनपुर सेक्शन की चार लेन वाली सड़क सहित कई अन्य रोड प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन करूंगा। इनके अलावा यहां गंगा घाटों से जुड़ी कई परियोजनाओं के साथ ही 192 ग्रामीण पेयजल योजनाओं का शिलान्यास करूंगा। काशी नगरी के अपने कार्यक्रम में पीएम स्वनिधि के ऋण, पीएम आवास ग्रामीण के घरों की चाबियां और आयुष्मान कार्ड भी लाभार्थियों को प्रदान करने का अवसर मिलेगा। गौरतलब हो कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वाजिदपुर की जनसभा में 12110 करोड़ रुपये का सौगात देंगे। इसमें 10 हजार 720 करोड़ की 19 परियोजनाओं का लोकार्पण व 1389 करोड़ की 10 प्रोजेक्ट का शिलान्यास होना है। जनसभा मंच से प्रधानमंत्री तीन लाभार्थियों को पीवीसी आयुष्मान कार्ड देते हुए इस योजना का पूरे प्रदेश के लिए शुभारंभ करेंगे। पीएम स्वनिधि व ग्रामीण आवास के तीन-तीन लाभार्थियों को प्रमाणपत्र व चाबी प्रदान करने के साथ वह तीनों योजनाओं के 30 लाभार्थियों से उनके अनुभव भी जानेंगे। जनसभा के बाद वह बरेका गेस्ट हाउस जाएंगे। वहां भाजपा के प्रमुख कार्यकताओं, जनप्रतिनिधियों के साथ टिफिन बैठक के बाद रात्रि विश्राम करेंगे। वह शनिवार सुबह साढ़े सात बजे बाबतपुर एयरपोर्ट से विशेष विमान से दिल्ली लौट जाएंगे।

पहलवान यौन उत्पीड़न मामला: अदालत ने बृजभूषण को 18 जुलाई को तलब किया

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली की एक अदालत ने महिला पहलवानों के कथित यौन उत्पीड़न के मामले में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद एवं भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के निवर्तमान अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह को 18 जुलाई को तलब किया है। अदालत ने कहा कि आरोपी के खिलाफ मामले को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त सबूत हैं। आरोपपत्र पर संज्ञान लेते हुए अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट (एसीएमएम) हरजीत सिंह जसपाल ने बृजभूषण को 18 जुलाई को अदालत में पेश होने का निर्देश दिया। अदालत ने भारतीय कुश्ती महासंघ के निलंबित सहायक सचिव विनोद तोमर को भी तलब किया। शहर पुलिस ने बृजभूषण के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धाराओं 354 (महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाने के इरादे से उस पर हमला या आपराधिक बल का इस्तेमाल), 354 ए (यौन उत्पीड़न), 354 डी (पीछा करना) और 506 (आपराधिक धमकी) के तहत 15 जून को आरोपपत्र दायर किया था। तोमर पर आईपीसी की धाराओं 109 (किसी अपराध के लिए उकसाना), 354, 354ए और 506 (आपराधिक धमकी) के तहत अपराध का आरोप लगाया गया था।

संक्षिप्त खबरें

जन समस्या के समाधान में न हो कोताही : योगी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आज गोरखपुर आगमन पर तैयारी व पर्यवेक्षक से जुड़ी व्यस्तता के बावजूद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को जनता दर्शन में आए लोगों से मुलाकात की। मुख्यमंत्री गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के बाहर सुबह जनता दर्शन में करीब 200 लोगों से मुलाकात कर इत्मीनान से उनकी समस्याएं सुनीं और उनके गुणवत्तापूर्ण, पारदर्शी निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि हर पीड़ित के साथ संवेदनशील रवैया अपनाया जाए और उसकी समस्या का समाधान कर उसे संतुष्ट किया जाए। इसमें किसी भी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए। मुख्यमंत्री एक.एक करके सबके पास खुद गए और उनकी बात सुनी। सभी लोगों को आश्वस्त किया कि किसी को भी चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। हर समस्या का समाधान कराया जाएगा। उन्होंने प्रार्थना पत्रों को विषयानुसार प्रशासन व पुलिस के अफसरों को हस्तगत करते हुए जरूरी निर्देश दिए। जनता दर्शन में कई लोग गंभीर बीमारियों के इलाज में आर्थिक सहायता की गुहार लेकर आए थे। उन्होंने मौके पर उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि इलाज संबंधी इस्टीमेट की प्रक्रिया पूर्ण करते हुए जल्द शासन को उपलब्ध कराया जाए। हर जरूरतमंद को इलाज के लिए भरपूर सहायता राशि उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रधानमंत्री ने रायपुर में 7600 करोड़ की विकास परियोजनाओं का किया शिलान्यास व उद्घाटन

रायपुर, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने छत्तीसगढ़ के रायपुर में शुक्रवार को 7600 करोड़ रुपये की लागत वाली 10 विकास परियोजनाओं का शिलान्यास एवं उद्घाटन किया। ये परियोजनाएं रेल, सड़क और पेट्रोलियम से जुड़ी हैं। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने अंतागढ़ से रायपुर के लिए एक नई ट्रेन को हरी झंडी भी दिखाई। प्रधानमंत्री ने साइंस कॉलेज ग्राउंड परिसर में आयोजित कार्यक्रम में राज्य में चलाई जा रही केंद्रीय योजनाओं के बारे में जानकारी दी। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ को आज सात हजार करोड़ से अधिक का उपहार मिला। यह उपहार राज्य के लोगों के विकास के लिए है। उन्होंने कहा कि हमारी योजनाओं से आदिवासी क्षेत्रों में विकास हुआ है। रेल, रोड, टेलीकाम पर छत्तीसगढ़ में केंद्र सरकार ने काम किया। नौ साल पहले छत्तीसगढ़ के 20 प्रतिशत गांवों में मोबाइल कनेक्टिविटी नहीं थी, आज अब यह घटकर 6 प्रतिशत हो गई है, इस पर भी काम हो रहा है। उन्होंने कहा कि आज भारत में आधुनिक अधोसंरचना निर्माण हुआ। हमने छत्तीसगढ़ में 3500 किमी की एनएच परियोजना शुरू की। रायपुर-धनबाद, रायपुर-विशाखापट्टनम कारिडोर से यहां की विकास की नई गाथा लिखी जाएगी। माइंस और मिनरल एक्ट बदले जाने के बाद छत्तीसगढ़ को अधिक पैसा मिला। 2014 में प्रदेश को 13 सौ करोड़ मिले थे, लेकिन 20-21 तक बढ़कर 2800 करोड़ रुपये रायल्टी मिलने लगी। डीएमएफ राशि बढ़ी तो जिलों का विकास बढ़ा। प्रदेश में 1 करोड़ 60 लाख से ज्यादा जनधन खाते खुले। इनमें गरीबों के 6 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा जमा किए गए। उन्होंने कहा कि युवाओं को स्वरोजगार के लिए 40 हजार करोड़ रुपये से अधिक मदद दी गई है। कोरोना काल में छत्तीसगढ़ के 2 लाख उद्यमियों को 5 हजार करोड़ रुपये की मदद दी। मनरेगा में 25 हजार करोड़ रुपये की मदद दी गई। आयुष्यमान योजना के तहत प्रदेश के 75 लाख लोगों को मदद की जा रही है। आयुष्यमान कार्ड पूरे देश में कहीं भी मदद दिला सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि विश्वास दिलाता हूं कि भारत सरकार छत्तीसगढ़ के हर व्यक्ति की मदद करती रहेगी। बच्चों के लिए स्कूल, सड़क, पानी की व्यवस्था की गई है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि छत्तीसगढ़ एक समृद्ध और सम्पन्न राज्य है। फॉरेस्ट और खनिज संपत्ति से परिपूर्ण है। मोदी जी के नेतृत्व में पिछड़े हुए विशेष क्षेत्रों को विकसित करने के लिए ज्यादा प्रावधान देने की नई नीति अपनाई है। गडकरी ने कहा कि बहुत खुशी है कि आज प्रधानमंत्री रायपुर विशाखापट्टनम हाई-वे का शुभारंभ कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्र में 20 हजार करोड़ रुपये के कार्य हमने अपने हाथ में लिया है। इससे उद्योग आएंगे, कैपिटल इंवेस्टमेंट के साथ रोजगार भी आएगा। रायपुर विशाखापट्टनम इकॉनोमी केरिडोर छत्तीसगढ़ के विकास के साथ रेल को भी बढ़ाएगा। कार्यक्रम को मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भी संबोधित किया। इस दौरान उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव भी मौजूद रहे।

भ्रष्टाचार के बिना कांग्रेस सांस भी नहीं ले सकती : मोदी

रायपुर, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार को कांग्रेस की सबसे बड़ी विचारधारा बताते हुए शुक्रवार को देश के सबसे पुराने राजनीतिक दल पर करारे प्रहार किए और कहा कि यदि कांग्रेस भ्रष्टाचार की गारंटी है तो वह (प्रधानमंत्री) भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई की गारंटी हैं। प्रधानामंत्री ने आरोप लगाया कि भ्रष्टाचार के बिना कांग्रेस सांस भी नहीं ले सकती। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में एक रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि छत्तीसगढ़ में घोटालों में डूबी कांग्रेस सरकार कुशासन का मॉडल बन गई है और लोगों ने आगामी विधानसभा चुनाव में इसे जड़ से उखाड़ फेंकने का फैसला कर लिया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ी में कहा ह्यह्यबदलबो बदलबो, ए दारी कांग्रेस के सरकार ला बदल बो। मोदी की, 2019 में दूसरे कार्यकाल के लिए प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद यह कांग्रेस शासित छत्तीसगढ़ में पहली यात्रा है। राज्य में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। एक जनसभा को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा, छत्तीसगढ़ वह राज्य है जिसके निर्माण में भाजपा की प्रमुख भूमिका रही है। भाजपा ही छत्तीसगढ़ के लोगों को समझती है और उनकी जरूरतों को जानती है इसलिए आज दिल्ली से भाजपा सरकार छत्तीसगढ़ के तेज विकास के लिए पूरी ताकत लगा रही है। उन्होंने कहा, दो साल बाद छत्तीसगढ़ के निर्माण के 25 साल होने जा रहे हैं। युवा ऊर्जा से भरे हुए छत्तीसगढ़ के विकास के लिए अगले 25 साल बहुत ही अहम हैं, लेकिन राज्य के विकास के सामने एक बहुत बड़ा पंजा दीवार बनकर खड़ा हो गया है। यह कांग्रेस का पंजा है, और यह आपसे आपका हक छीन रहा है। कांग्रेस का पंजा छत्तीसगढ़ को लूटकर बर्बाद कर देगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि वह लोगों को सत्ताधारी दल को बेनकाब करने के लिए 2018 में विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस द्वारा किए गए वादों के बारे में याद दिलाना चाहेंगे। उन्होंने कहा, ह्वगंगा जी की झूठी कसम खाने का पाप कांग्रेस ही कर सकती है। गंगा जी को साक्षी मानकर इन्होंने एक घोषणा पत्र जारी किया था जिसमें 10 दिन के भीतर बहुत कुछ करने के बड़े बड़े वादे किए गए थे। लेकिन आज घोषणा पत्र की याद दिलाते ही कांग्रेस की याददाश्त चली जाती है। मोदी ने कहा, कांग्रेस के उन 36 वादों में से एक था कि राज्य में शराबबंदी लागू होगी। अब पांच साल होने को हैं और सच्चाई यह है कि शराबबंदी तो छोड़िये, कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ में हजारों करोड़ रुपये का शराब घोटाला कर दिया है। मोदी ने कहा, आरोप है कि कमीशन के जो पैसे उगाहे जाते थे वह कांग्रेस पार्टी के खाते में गए हैं। कहने वाले कहते हैं कि शराब घोटाले के पैसे की मारा मारी में यहां ढाई–ढाई साल के मुख्यमंत्री पद वाला फॉमूर्ला लागू नहीं हो पाया। उनका इशारा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उपमुख्यमंत्री टी एस सिंह देव के बीच ढाई ढाई साल के लिए मुख्यमंत्री पद को ले कर चली खींचतान की ओर था। प्रधानमंत्री ने कहा, ह्व कांग्रेस पार्टी के लिए छत्तीसगढ़ एक एटीएम की तरह है। आप समझ गए होंगे कि आखिर बीते तीन–चार सालों में जो चुनाव देश में हुए हैं, उसमें कांग्रेस छत्तीसगढ़ के नेताओं को ही क्यों ज़िम्मेदारी देती थी। उन्होंने दावा किया कि राज्य में ऐसा कोई विभाग नहीं है जो संदेह से परे हो। उन्होंने कहा कि कोल माफि या, सैंड माफि या, लैंड माफिया न जाने कैसे कैसे माफिया यहां फल फूल रहे हैं। सूबे के मुखिया से लेकर तमाम मंत्रियों और अधिकारियों पर घोटाले के गंभीर आरोप लगते रहे हैं। आज छत्तीसगढ़ कांग्रेस के भ्रष्टाचार और कुशासन का मॉडल बन चुका है। मोदी ने कहा, छत्तीसगढ़ में बीते चार साल में जो भी हुआ उससे सिद्ध होता है कि भ्रष्टाचार के बिना कांग्रेस सांस भी नहीं ले सकती है। भ्रष्टाचार कांग्रेस की सबसे बड़ी विचारधारा है। उन्होंने कहा, मैं कहता हूं कि कांग्रेस भ्रष्टाचार की, कमीशनखोरी की गारंटी है तो कुछ लोग नाराज हो जाते हैं। इनकी नाराजगी इस बात का प्रमाण है कि हमारी सरकार सही दिशा में आगे बढ़ रही है। क्योंकि देश ने यही दायित्व मुझे दिया है। इसीलिए दागदार दामन वाले आज एक साथ आने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अगर कांग्रेस भ्रष्टाचार की गारंटी है तो मोदी भ्रष्टाचार पर कार्रवाई की गारंटी है। जिसने गलत किया है, वह बचेगा नहीं। मोदी ने कहा कि गांवों को सड़कों से जोड़ने पर गरीब का बहुत भला होता है। उन्होंने कहा कि इसीलिए केंद्र ने कांग्रेस सरकार से दोगुने पैसे गांव की सड़कों को जोड़ने के लिए दिये क्योंकि जब गांव गांव तक सड़क पहुंचेगी तो विकास भी तेजी से होगा।

मोदी उपनाम मानहानि मामले में राहुल गांधी की याचिका गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा खारिज .....

राहुल के मामले में न्यायालय का रुख करेंगे, सच दबाना चाहती है अहंकारी सत्ता: कांग्रेस

नई दिल्ली, एजेंसी

कांग्रेस ने "मोदी उपनाम" वाली टिप्पणी से जुड़े आपराधिक मानहानि मामले में राहुल गांधी की याचिका गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा खारिज किए जाने के बाद शुक्रवार को सरकार पर सच दबाने के प्रयास का आरोप लगाया और कहा कि राहुल गांधी को सच बोलने से रोका नहीं जा सकता। मुख्य विपक्षी दल ने यह भी कहा कि वह उच्चतम न्यायालय का रुख करने समेत सभी कानूनी विकल्पों पर गौर करेगी। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने आरोप लगाया कि ह्यअहंकारी सत्ताह्न सच को दबाने के लिए हर हथकंडे आजमा रही है। प्रियंका गांधी ने ट्वीट किया, राहुल गांधी जी इस अहंकारी सत्ता के सामने सत्य और जनता के हितों की लड़ाई लड़ रहे हैं। अहंकारी सत्ता चाहती है कि जनता के हितों के सवाल न उठें, अहंकारी सत्ता चाहती है कि देश के लोगों की जिंदगियों को बेहतर बनाने वाले सवाल न उठें, अहंकारी सत्ता चाहती है कि उनसे महंगाई पर सवाल न पूछे जाएं, युवाओं के रोजगार पर कोई बात न हो, किसानों की भलाई की आवाज न उठे, महिलाओं के हक की बात न हो, श्रमिकों के सम्मान के सवाल को न उठाया जाए। उन्होंने आरोप लगाया, अहंकारी सत्ता सच को दबाने के लिए हर हथकंडे आजमा रही है, जनता के हितों से जुड़े सवालों से भटकाने के लिए साम, दाम, दंड, भेद, छल, कपटः सब अपना रही है। लेकिन, सत्य, सत्याग्रह और जनता की ताकत के सामने न तो सत्ता का अहंकार ज्यादा दिन टिकेगा और न ही सच्चाई पर झूठ का परदा। उनका कहना था कि राहुल गांधी ने इस अहंकारी सत्ता के सामने जनता के हितों से जुड़े सवालों की ज्योति जलाकर रखी है। प्रियंका गांधी ने कहा, इसके लिए राहुल गांधी हर कीमत चुकाने को तैयार हैं और तमाम हमलों व अहंकारी भाजपा सरकार के हथकंडों के बावजूद एक सच्चे देशप्रेमी की तरह जनता से जुड़े सवालों को उठाने से पीछे नहीं हटे हैं। जनता का दर्द बांटने के कर्तव्य पथ पर डटे हुए हैं। सत्य की जीत होगी। जनता की आवाज जीतेगी। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने ट्वीट किया, "राहुल गांधी की संसद से अयोग्यता पर गुजरात उच्च न्यायालय की एकल पीठ का फैसला हमारे संज्ञान में आया है। फैसले का अध्ययन किया जा रहा है, जैसा कि होना चाहिए। उन्होंने कहा, उच्च न्यायलय के फैसले ने इस मामले को आगे ले जाने के हमारे संकल्प को दोगुना किया है। कांग्रेस महासचिव के सी वेणुगोपाल ने कहा कि मानहानि मामले में राहुल गांधी की दोषसिद्धि पर रोक लगाने संबंधी याचिका खारिज करने के गुजरात उच्च न्यायालय के आदेश को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी जाएगी। उन्होंने ट्वीट किया, हम गुजरात उच्च न्यायालय के फैसले पर अध्ययन करेंगे और सभी कानूनी विकल्पों पर गौर करेंगे। राहुल जी निडर आवाज हैं जो मोदी सरकार को घेरते हैं। कोई ताकत उन्हें चुप नहीं करा सकती। सत्य की जीत होगी और आखिर में न्याय होगा। हर देशभक्त भारतीय इस लड़ाई में राहुल जी के साथ समर्थन में है। गुजरात उच्च न्यायालय ने मोदी उपनाम वाली टिप्पणी को लेकर आपराधिक मानहानि मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की दोषसिद्धि पर रोक लगाने का अनुरोध खारिज कर दिया। गुजरात में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक पूर्णेश मोदी द्वारा दायर 2019 के मामले में सूरत की मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट अदालत ने 23 मार्च को राहुल गांधी को भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धाराओं 499 और 500 (आपराधिक मानहानि) के तहत दोषी ठहराते हुए दो साल जेल की सजा सुनाई थी। फैसले के बाद गांधी को जनप्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रावधानों के तहत संसद की सदस्यता से अयोग्य घोषित कर दिया गया था। राहुल गांधी 2019 में केरल के वायनाड से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए थे।

आजादी की लड़ाई में आदिवासी समाज का अत्यधिक योगदान : राष्ट्रपति मुर्मू

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को मुंबई स्थित राजभवन के भूमिगत बंकर में बनी स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों की 'क्रांति गाथा' गैलरी का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में आदिवासी समुदाय का बहुत बड़ा योगदान है, इसलिए इस पर और शोध करने की जरूरत है। राष्ट्रपति ने बंकर में रखी छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित की। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मुंबई के दो दिवसीय दौरे के दूसरे दिन राजभवन में देश के आदिवासी क्रांतिकारियों की गैलरी का दौरा किया और आदिवासी क्रांतिकारियों के बारे में जाना। इस मौके पर राष्ट्रपति ने कहा कि 1857 से पहले भी आजादी के लिए कई जगहों पर छोटी-बड़ी लड़ाइयां लड़ी गईं थीं। इन देशभक्तों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने के छात्रों और युवाओं को राजभवन में क्रांतिकारियों के संग्रहालय का दौरा करना चाहिए और इस पर व्यापक शोध भी किया जाना चाहिए। इस अवसर पर राजभवन के जनसंपर्क अधिकारी उमेश काशीकर ने राष्ट्रपति को क्रांतिकारियों के स्वतंत्रता पूर्व इतिहास के बारे में जानकारी दी।

उप जिला अस्पताल में डेंगू वार्ड के लिए नहीं जगह

देहरादून, एजेंसी। बरसात की दस्तक के साथ ही डेंगू के केस सामने आने शुरू हो गए हैं। परंतु उप जिला अस्पताल में डेंगू वार्ड बनाने के लिए जगह नहीं है। प्रबंधन का कहना है कि मरीज के आते ही एक कक्ष में वार्ड तैयार कर दिया जाएगा। उप जिला अस्पताल में इलाज के लिए पछवादून, जौनसार बावर, रंवाई, जौनपुर के साथ ही पड़ोसी राज्य हिमाचल से बड़ी संख्या में मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं। यहां रोजाना 400-500 के बीच ओपीडी होती है। अस्पताल में वार्ड के लिए कुल चार कक्ष हैं, जिसमें से एक को कोविड वार्ड बनाया गया है, जो सभी संसाधनों से लैस है। जिसके चलते इस कक्ष का इस्तेमाल कोई दूसरा वार्ड बनाने में नहीं किया जा सकता है, जबकि तीन कक्षों में जनरल, महिला और पुरुष वार्ड संचालित किया जा रहा है। सभी में मरीज भर्ती हैं।

22 उपाध्यक्ष, 27 महामंत्री और 32 सचिव बनाए

देहरादून, एजेंसी। महानगर कांग्रेस ने अपनी कार्यकारिणी घोषित कर दी है। महानगर अध्यक्ष डॉ. जसविंदर सिंह गोगी ने कार्यकारिणी में 22 उपाध्यक्ष, 27 महामंत्री और 32 सचिव बनाए हैं। पूर्व विधायकों के साथ ही 19 को विशेष आमंत्रित सदस्य बनाया गया है। कांग्रेस भवन में कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए डॉ. जसविंदर सिंह गोगी ने बताया कि कार्यकारिणी में सभी वर्गों को समुचित प्रतिनिधित्व दिया गया है। डॉ. बिजेंद्र पाल सिंह, अभिषेक तिवारी, सुनील जायसवाल, सुभाष इस्सार, सुमित्रा ध्यानी, मोहन जोशी, आनंद त्यागी, विपुल नौटियाल, राजेश पुंडीर, सुरेंद्र रावत, चतर सिंह रावत, निर्मला राठी, जाहिद अंसारी, राव नसीम, देवी सिंह नेगी, रहीस अहमद, आतीफ शेख, मुकीम अहमद, अरविंद चौधरी, प्रमोद मुंशी, हरजीत सिंह, वीरेंद्र बिष्ट को उपाध्यक्ष बनाया गया है। वहीं, सचिन थापा, अरूण बलूनी, आलोक मेहता, एसबी थापा, अनुराग गुप्ता, मुकेश सोनकर, राईस फतीमा, फुरकान कुरेशी, अशोक वर्मा, आशीष खत्री, दिनेश नैथानी, आशीष ग्रोवर, विक्रम सिंह, टिवंकल अरोड़ा, तुषार पाल, अलताफ अहमद, सुमित देवरानी, देवकी बिष्ट, किरन, रिपु दमन सिंह, पूनम कंडारी, निहाल, शीला धीमान, साहिद अहमद (जमाल), परमजीत सिंह, गुरुचरण कौशल, आदर्श सूद को महामंत्री बनाया गया है। इसके अलावा सज्जाद अंसारी, विरेंद्र पंवार, मुरसलीम (मुरली), भूपेंद्र नेगी, कुलदीप नरूला, राहुल तलवार, सुनील, नितिन चंचल, सुरजीत धीमान, शकील मंसूरी, राजेंद्र वर्मा, नवीन चौधरी, उदय सिंह रावत, शोमी हुसैन, पिंटू मौर्य, असलम, प्रदीप कुमार, छोटू लाल, सलीम अंसारी, विजेता, अमनदीप सिंह, अमित खन्ना, कुलविंदर सिंह (बन्टी), सूरज क्षेत्री, मनीष गर्ग, रवि हसन, संजय बिंदल, नरेश बगवाल, विजय कुमार, नवीन कुमार, माइकल, राम बाबू को सचिव बनाया गया है। पूर्व मंत्री हीरा सिंह बिष्ट, पूर्व विधायक दिनेश अग्रवाल, राजकुमार, सूर्यकांत धस्माना, आर्येंद्र शर्मा, गोदावरी थापली सहित 19 लोगों को विशेष आमंत्रित सदस्य के तौर पर कार्यकारिणी में शामिल किया गया है। मंजू त्रिपाठी मुख्य प्रवक्ता, यश रतूड़ी प्रवक्ता, डॉ. अरुण रतूड़ी महामंत्री और मीडिया प्रभारी, प्रमोद गुप्ता को महामंत्री संगठन, विकास ठाकुर को महामंत्री प्रशासन, अजीत शर्मा को महामंत्री जनसंपर्क, विजय भट्टाराई को महामंत्री चुनाव प्रबंधन की जिम्मेदारी दी गई है।

लाइब्रेरी के लिए पुस्तकें और पैसे एकत्रित कर रहे युवा

देहरादून, एजेंसी। जिलाधिकारी की पहल पर त्यूणी में स्मार्ट सिटी योजना के तहत बनाई जा रही लाइब्रेरी को क्षेत्र के लिए ज्ञान का स्रोत बनाने के लिए युवाओं ने भी अपनी कमर कस ली है। युवाओं ने आपसी सहयोग से पैसे से लेकर आवश्यक संसाधन जुटाने शुरू कर दिए हैं। त्यूणी स्थित अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज के दो कमरों में स्मार्ट सिटी योजना के तहत लाइब्रेरी बनाने का काम आगे बढ़ रहा है। उधर क्षेत्र के युवाओं ने लाइब्रेरी को खास बनाने की कवायद शुरू कर दी है। लाइब्रेरी के लिए कोई किताबें तो कोई पैसा एकत्रित कर रहा है। बताते चलें कि जिलाधिकारी सोनिका ने हाल ही में युवाओं को पढ़ाई करने व प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए एक लाइब्रेरी के निर्माण की कार्रवाई शुरू कराई थी। उनकी इस सौगात से प्रेरित होकर क्षेत्र के युवाओं ने पुस्तकालय को और बेहतर बनाने के प्रयास शुरू कर दिए। युवा सत्य के साथ नामक संगठन से जुड़े युवा पैसा और किताबों की व्यवस्था करने में जुटे हुए हैं जबकि शिक्षकों का भरपूर सहयोग भी उन्हें मिल रहा है।

बाजार बंद को व्यापार मंडल का नहीं था समर्थन

देहरादून, एजेंसी। बाजार बंद कराए जाने की घटना की उद्योग व्यापार मंडल ने कड़े शब्दों में निंदा की है। व्यापार मंडल ने दोनों ही समुदाय के लोगों से शांति बनाने की अपील की। व्यापारियों ने दो टूक कहा कि बाजार में बाहरी लोगों का दखल बरदाश्त नहीं किया जाएगा। एक स्वर में माहौल बिगाड़ने वालों को चिह्नित कर कड़ी कार्रवाई की मांग की गई। बाजार स्थित एक होटल में आयोजित उद्योग व्यापार मंडल की बैठक में विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ ही जनप्रतिनिधि और मुस्लिम समाज से जुड़े लोग भी शामिल हुए। प्रेमचंद जैन ने कहा कि डंडे के जोर पर बाजार बंद कराना बरदाश्त नहीं किया जाएगा। अध्यक्ष संजय गुप्ता ने साफ किया कि बंद को व्यापार मंडल का कोई समर्थन नहीं था। उन्होंने बाजार में बाहरी लोगों के सत्यापन की बात कही। संजय जैन ने कहा कि विकासनगर अपने सांप्रदायिक सौहार्द के लिए जाना है। एक छोटी सी चिंगारी इसे तबाह कर सकती है। इस मौके पर पूर्व नगर पालिकाध्यक्ष नीरज अग्रवाल, जिला पंचायत सदस्य धीरज बॉबी नौटियाल, अरुण मित्तल, मुनीर अहमद, हाजी सईद कुरैशी, जमशेद अहमद, हिमकर गुप्ता आदि मौजूद रहे।

'रस्ट डेस्क' एप डाउनलोड करवाकर खाते से उड़ाए डेढ़ लाख

देहरादून, एजेंसी। कैंट प्रभारी संपूर्णानंद गैरोला ने बताया कि क्षेत्र निवासी सुरेंद्र सिंह बोरा ने बताया कि एक व्यक्ति ने उन्हें फोन किया। खुद को एनआईओएस का कर्मचारी बताते हुए प्ले स्टोर से 'रस्ट डेस्क रिमोट डेस्कटॉप' एप डाउनलोड करवाया। इसके बाद उसने जी-पे से दो ट्रांजेक्शन करवाए। पैसे वापस करने की बात कही तो वह उसे इंतजार करवाता रहा। इसके बाद आरोपी ने एसबीआई का योनो एप खुलवाया। जैसे ही यूजर नेम और पासवर्ड डाला तो अकाउंट से तीन बार में कुल एक लाख 60 हजार रुपये से अधिक कट गए। साइबर क्राइम पुलिस की जांच के बाद कैंट पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

मेड़ के विवाद में महिला की हत्या

रामनगर, एजेंसी।
खेत की मेड़ के विवाद को लेकर दो पक्षों में विवाद हो गया। विवाद में एक पक्ष ने दूसरे पक्ष की महिला सहित उसके दो बेटों पर फावड़े से हमला कर दिया। वारदात में महिला की जान चली गई जबकि उसके बेटे घायल हो गए। पुलिस ने आरोपी पक्ष के पांच लोगों को हिरासत में लिया है।

रामनगर के बांसीटीला निवासी पार्वती देवी (52) पत्नी स्व. ऋषिपाल का पड़ोसी हरपाल सिंह से खेत की मेड़ को लेकर विवाद चल रहा था। बृहस्पतिवार को मेड़ को लेकर विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए। आरोप है कि हरपाल सिंह और उसके पुत्रों ने महिला के सिर पर फावड़े से वार कर दिया। बीचबचाव में आए महिला के बेटे चंद्रशेखर और भूपेंद्र पर फावड़े से वार कर घायल कर दिया। हमला करने के बाद आरोपी फरार हो गए जबकि घायलों को रामनगर अस्पताल में

भर्ती कराया। इलाज के दौरान पार्वती देवी की मौत हो गई जबकि उसके दोनों बेटों की हालत गंभीर देख डॉक्टरों ने दोनों को हायर सेंटर रेफर कर दिया। सीओ बलजीत सिंह भाकुनी ने बताया कि मेड़ के विवाद में सिर पर फावड़ा मारने से महिला की मौत हो गई। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अब तक पांच लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है।

आरोपी हमारे खेत की मेड़ काट रहे थे। विरोध करने पर मां और भाई चंद्रशेखर पर फावड़े से हमला कर दिया। बीचबचाव के दौरान मुझसे भी मारपीट की गई। यह कहते हुए मृतका की बेटी मंजू की आंखों से आंसू आ गए।

मंजू ने बताया कि लंबे समय से पड़ोसी से विवाद चल रहा है। इन दिनों धान की रोपाई के लिए खेत तैयार किया जा रहा था। आरोपी हरपाल हमारे खेत की मेड़ को काटकर अपना खेत बड़ा कर रहे थे। इसकी जानकारी जैसे ही मां को मिली तो वह भाई के साथ मौके पर पहुंची। मां पार्वती देवी और भाई ने इसका विरोध किया तो वह मारपीट पर उतारु हो गए। उन्होंने अपने पुत्रों के साथ मिलकर मां और भाई पर फावड़े से हमला कर दिया। पार्वती देवी के भतीजे आकाश ने बताया कि पहले भी इस मामले को लेकर विवाद होता रहा है और आरोपी पक्ष उनसे रंजिश रखता था।

रामनगर अस्पताल में पार्वती देवी के बेटे का इलाज चल रहा था, तभी वहां आरोपी हरपाल और अन्य लोग पहुंच गए। अस्पताल में ही वे एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करने लगे। यह देख पुलिस ने दोनों पक्षों को शांत किया और आरोपी हरपाल को हिरासत में लेकर थाने पहुंची। घटना की जानकारी के लिए एसडीएम गौरव चटवाल, सीओ बलजीत सिंह भाकुनी अस्पताल पहुंचे।

एएसडीएम के पेशकार, राजस्व उप निरीक्षक और पूर्व प्रधान पर धोखाधड़ी का मुकदमा

रूड़की, एजेंसी। तांशीपुर निवासी एक बुजुर्ग की जमीन धोखाधड़ी से हड़पने के मामले में कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने एएसडीएम के पेशकार, राजस्व उप निरीक्षक व पूर्व ग्राम प्रधान समेत छह से अधिक आरोपियों पर केस दर्ज कराया है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

कोतवाली क्षेत्र के तांशीपुर गांव निवासी गंगाशरण ने कोर्ट में प्रार्थनापत्र देकर बताया कि ग्राम तांशीपुर में उसकी 1530 वर्ग फुट जमीन है। इस पर उसके भतीजे नरेश की लंबे समय से नजर थी। आरोपी ने 30 अप्रैल 2016 को तहसीलदार रुड़की को प्रार्थनापत्र देकर उक्त जमीन को अपने नाम करने की मांग की। इस पर तहसीलदार रुड़की ने राजस्व निरीक्षक सुभाष कुमार चौहान से उक्त जमीन की रिपोर्ट मांगी। राजस्व उपनिरीक्षक ने दो मई 2016 को लिखकर दिया कि उक्त जमीन नरेश की है। इसमें 26 अक्तूबर 1990 के तत्कालीन ग्राम प्रधान मामचंद त्यागी के नाम का लेटर पैड भी लगा था। इसमें उन्होंने लिखकर दिया था कि उक्त जमीन नरेश की है। इसके बाद आरोपियों ने वर्ष 2016 तक गांव के तीन अन्य प्रधानों रोशनी देवी, सुनीता देवी व सरिता देवी से भी उनके लेटर पैड पर लिखवा लिया कि उक्त जमीन नरेश की है। इस पर पीड़ित ने सभी तत्कालीन ग्राम प्रधानों को लीगल नोटिस भेजकर जवाब-तलब किया है। इसपर पूर्व ग्राम प्रधान मामचंद त्यागी को छोड़कर सभी ग्राम प्रधानों ने लिखकर दिया कि उन्होंने जमीन के संबंध में कोई लेटर पैड या मुहर नहीं लगाई है। आरोप है कि दो मई 2016 को आरोपियों ने एएसडीएम के पेशकार जितेंद्र कपूर से थाना अध्यक्ष के नाम एक आदेश करा लिया जिसमें एएसडीएम द्वारा आदेश किया गया था कि उक्त जमीन पर नरेश को निर्माण करने से रोकने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाए।

केदारनाथ दर्शन के लिए निकले तीन युवक, अनियंत्रित होकर खाई में गिरी बाइक, एक की मौत और दो घायल

ऋषिकेश, एजेंसी।
एक बाइक पर सवार होकर केदारनाथ दर्शन के लिए जा रहे युवकों की बाइक खाई में गिर गई। इस हादसे में एक युवक की मौत हो गई जबकि दो घायल हो गए। ऋषिकेश-बदरीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग पर शिवपुरी के समीप एक बाइक खाई में गिर गई। इस हादसे में बाइक सवार एक युवक मौके पर ही मौत हो गई जबकि दो युवक घायल हो गए। दोनों घायलों को एम्स ऋषिकेश में भर्ती कराया गया है। अमेठी उत्तर प्रदेश निवासी तीनों युवक केदारनाथ धाम दर्शन के लिए एक ही बाइक पर निकले थे। प्रभारी निरीक्षक थाना मुनिकीरेती रितेश शाह ने बताया कि शुक्रवार सुबह पुलिस कंट्रोल रूम को

सूचना मिली कि शिवपुरी में एक बाइक अनियंत्रित होकर गहरी खाई में गिर गई है।

कड़ी मशक्कत के बाद एसडीआरएफ की टीम ने दोनों घायलों को रोप स्ट्रेचर के माध्यम से खाई से बाहर निकाला। और एक शव भी खाई से बाहर निकालकर जिला पुलिस के सुपुर्द किया।

दुष्कर्म के बाद मासूम की हत्या का आरोपी नौ साल बाद गिरफ्तार

देहरादून, एजेंसी।
लक्सर में आठ साल की मासूम की दुष्कर्म के बाद हत्या के आरोपी 25 हजार के इनामी को एसटीएफ ने नौ साल बाद गिरफ्तार कर लिया। कोर्ट से जमानत पर रिहा होने के बाद वह पहचान छिपाकर बिजनौर में आम के बाग का ठेका लेकर काम कर रहा था। मामले में हाईकोर्ट ने पुलिस महानिदेशक को आदेश दिए थे कि आरोपी को चार सितंबर तक किसी भी हालत में गिरफ्तार कोर्ट में पेश किया जाए।

एसटीएफ के एसएसपी आयुष अग्रवाल ने बताया, वर्ष 2007 में हरिद्वार जिले के लक्सर में विनोद कुमार निवासी टांडा भागमल, लक्सर ने जंगल में घास काटने गई आठ साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म किया। इसके बाद उसकी हत्या कर दी थी। आरोपी के खिलाफ लक्सर थाने में हत्या और दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया था। इसके बाद वह जमानत पर बाहर निकला और दोबारा अदालत में पेश नहीं हुआ। अपने गांव भागमल से पूरी संपत्ति बेचकर फरार हो गया था। एसएसपी हरिद्वार ने पांच सदस्यीय टीम बनाकर आरोपी पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। एसटीएफ के दो सिपाहियों को पिछले एक महीने से आरोपी के आने-जाने और रहने के सभी संभावित स्थानों का सुराग लगाने के लिए लगाया गया था। उन्हें सूचना मिली कि विनोद कुमार वर्तमान में बिजनौर के टांडा शाहूवाला गांव में आम के बाग का ठेका लेकर काम कर रहा है। इस पर एसटीएफ की एक टीम इंस्पेक्टर यशपाल बिष्ट, दारोगा विपिन बहुगुणा, नरोत्तम बिष्ट की देखरेख में दबिश देने के लिए भेजी गई। बुधवार देर रात एसटीएफ ने वहां से आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

वर्ष 2014 से लगातार पुलिस उसकी तलाश करती रही लेकिन पता नहीं लग पाया। पुलिस जब भी आरोपी के घर समन लेकर पहुंचती तो वह नहीं मिलता। बार-बार समन जारी करने के बाद भी कोर्ट में उपस्थित न होने का संज्ञान लेते हुए हाईकोर्ट ने आरोपी के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया था। साथ ही पुलिस महानिदेशक को आदेश दिए कि चार सितंबर तक हर हाल में उसे पेश करें।

व्यापारी उखड़े तो बैकफुट पर आया भेल प्रबंधन

हरिद्वार, एजेंसी। चंद्राचार्य चौक पर जलभराव की समस्या को लेकर व्यापारियों ने भेल प्रबंधन से वार्ता की। इस दौरान भेल प्रबंधन के अधिकारियों के सेक्टर एक स्थित नाले में आने वाले पानी को प्राकृतिक बताने पर व्यापारी भड़क गए। अधिकारियों ने जब 15 दिन के भीतर नाले और तालाबों का साफ करवाने का आश्वासन दिया तब व्यापारियों का गुस्सा शांत हुआ।बृहस्पतिवार को न्यू हरिद्वार चंद्राचार्य चौक व्यापार मंडल के अध्यक्ष मृदुल कौशिक के नेतृत्व में व्यापारी भेल प्रशासनिक भवन में प्रबंधन से वार्ता के लिए पहुंचे। मृदुल कौशिक ने अपर महाप्रबंधक मानव संसाधन आलोक शुक्ला से कहा भेल टाउनशिप से भारी मात्रा में पानी आता है, जिसकी निकासी की क्षमता शहर के नालों में नहीं है। भेल के नालों में जमा गंदगी चंद्राचार्य चौक के नाले में पहुंचती है।

अपर महाप्रबंधक मानव संसाधन ने कहा कि यह पानी प्राकृतिक है, जो बारिश के दौरान पहाड़ से आता है। यह सुन व्यापारियों का पारा चढ़ गया। मृदुल कौशिक ने अपर महाप्रबंधक से कहा कि सेवानिवृत्ति के बाद आप शहर में घर बनावाएं तब इस बात को दोहराएं। अपर महाप्रबंधक ने व्यापारियों के तेवर को भांप उनको 15 दिन के भीतर नालों और तालाबों की सफाई का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि तालाबों को इंटरकनेक्ट करने के लिए भी व्यवस्था बनाई जाएगी। कहा कि 15 दिन बाद भेल प्रबंधन व्यापारियों के साथ मौका मुआयना भी करेगा। इस दौरान उप महाप्रबंधक केके चौहान, निर्माण विभाग के इंजीनियर दीपेंद्र कोठियाल, उपाध्यक्ष अनूप सिद्धू, महामंत्री दीपक अग्रवाल, प्रमोद सूद, सतनाम भाटिया, काका सरदार, उपेंद्र सिंह, जयपाल सिंह, पवन दुबे, दीपांकर चक्रपाणि, शिवांकर चक्रपाणी, सांगली कुमार आदि उपस्थित रहे।

साहिया-क्वानू समेत तीन सड़कें 14 घंटे रही बंद

देहरादून, एजेंसी। क्षेत्र में बारिश के चलते सड़कों के बंद होने का सिलसिला जारी है। बीते मंगलवार की रात्रि को हुई बारिश से साहिया-क्वानू मोटर मार्ग समेत तीन सड़कें बंद हो गई। करीब 14 घंटे बाद सभी सड़कों पर बुधवार की दोपहर 2ः30 बजे आवाजाही बहाल कर दी गई। जिससे लोगों ने राहत की सांस ली। सड़क बंद होने की वजह से किसानों को सबसे ज्यादा परेशानी हुई। उनकी फसलें समय पर मंडी तक नहीं पहुंच सकी। देर रात करीब 12ः00 बजे क्षेत्र में भारी बारिश हुई। जिसके चलते साहिया-क्वानू मोटर मार्ग किमी 31 और किमी 32 पर दसऊ गांव के निकट भारी मलबा आने से बंद हो गया। यह मार्ग क्षेत्र के 50 से अधिक गांवों को जोड़ता है। इसके साथ ही लुधेरा-क्यारी-कचटा मोटर मार्ग किमी-17, किमी-18 पर ग्राम क्यारी के निकट मलबा आने से बाधित हो गया। मुंशी घाटी-ध्वैरा मोटर मार्ग भी किमी 3 पर मलबा आने से बंद हो गया। तीनों मार्ग के बंद होने से 60 से अधिक गांवों की आवाजाही प्रभावित हुई। सुबह के समय नकदी फसलें टमाटर, बींस, शिमला मिर्च से लदे वाहन मंडियों के लिए रवाना नहीं हो सके।

हाईकोर्ट ने अभ्यर्थियों की याचिका की निस्तारित, नौ जुलाई को ही 12 जिलों में होगी स्नातक स्तरीय परीक्षा

नैनीताल , एजेंसी।
बड़ी संख्या में आयोग ने नकलचियों को सूचीबद्ध कर परीक्षा में बैठने के लिए प्रतिबंध किया जबकि नकलचियों का वास्तविक आकलन न लग पाने पर पूरी परीक्षा कैंसिल कर इसे दोबारा कराए जाने का निर्णय लिया गया।

नैनीताल हाईकोर्ट ने यूकेएसएसएससी की स्नातक स्तरीय परीक्षा तय समय 9 जुलाई को आयोजित करने की अनुमति दी है। अब यह परीक्षा आयोग के नए निर्णय के अनुसार होगी। कोर्ट ने सुनवाई के बाद अभ्यर्थियों की याचिका को निस्तारित कर दिया।

न्यायमूर्ति रवींद्र मैठाणी की एकलपीठ के समक्ष मामले की सुनवाई हुई। उत्तराखंड में पेपर लीक के बाद यूकेएसएसएससी ने दिसंबर में स्नातक स्तरीय परीक्षा कैंसिल कर दी थी। बड़ी संख्या में आयोग ने नकलचियों को सूचीबद्ध कर परीक्षा में बैठने के लिए प्रतिबंध किया जबकि नकलचियों का वास्तविक आकलन न लग पाने पर पूरी परीक्षा कैंसिल कर इसे दोबारा कराए जाने का निर्णय लिया गया। इस पर पास हुए अभ्यर्थियों ने नकलचियों को बाहर कर उन्हें नौकरी देने की मांग की थी।

जब आयोग ने नए सिरे से परीक्षा कराए जाने का निर्णय लिया तो पास हुए अभ्यर्थियों ने आयोग के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। लंबे समय से परीक्षा कराए जाने को लेकर याचिका पर बहस चली। इसके बाद हाईकोर्ट ने याचिका का निस्तारित कर आयोग के फैसले को बरकरार रखा है।

12 जिलों में होगी परीक्षा

- परीक्षा में करीब 1 लाख 40 हजार अभ्यर्थियों को बैठने के लिए आयोग ने पहले ही प्रवेश पत्र जारी कर दिए हैं।
- हरिद्वार में कांवड़ सीजन के चलते 12 जिलों में परीक्षा कराई जाएगी। नकल करते पकड़े गए जिन अभ्यर्थियों को आयोग ने प्रतिबंधित किया है, उन्हें छोड़कर सभी अन्य परीक्षा में शामिल होंगे। हाईकोर्ट में यह याचिका जगपाल सिंह, संजय कुमार, शोभा, मनोज सिंह, हेमा, धर्मेंद्र कुमार शर्मा, कुलदीप कुमार व अन्य की ओर से अलग अलग याचिकाएं दायर की थी। इसकी एक साथ सुनवाई हुई।
- याचिकाकर्ताओं के मुताबिक वे लोग नकल में शामिल नहीं थे और वे उत्तीर्ण हुए हैं इसलिए उन्हें नौकरी दी जाए लेकिन कोर्ट ने उनके तर्कों को अस्वीकार कर याचिकाएं निस्तारित कर दीं।

एनआईएच कर्मचारी को बाइक सवारों ने मारी गोली, कांवड़ियों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस

हरिद्वार, एजेंसी।
बाइक से एनआईएच कर्मचारी श्याममनगर जा रहे थे। जैसे ही वह सोलानी पुल के पास पहुंचे तो पीछे से बाइक सवार दो युवक आए और उसकी बाइक रोक ली। इसके बाद युवक एनआईएच कर्मचारी से लड़ने लगे।

बाइक सवार दो युवकों ने एक एनआईएच कर्मचारी को गोली मार दी। गोली बाएं कंधे को चीरते हुए निकल गई। गंभीर घायल कर्मचारी को अस्पताल भर्ती कराया गया है। गंगनहर कोतवाली क्षेत्र के श्याम नगर गली नंबर दस निवासी ललित (24) रुड़की एनआईएच विभाग में कर्मचारी है। बताया जा रहा है कि वह पिछले दो माह से घर पर नहीं रह रहा था।

वह कलियर क्षेत्र के मेहवड़ गांव में रह रहा था। बृहस्पतिवार की रात करीब दो बजे वह बाइक से

श्याममनगर जा रहा था। जैसे ही वह सोलानी पुल के पास पहुंचा तो पीछे से बाइक सवार दो युवक आए और उसकी बाइक रोक ली। युवकों ने ललित पर थूकने का आरोप लगाते हुए गाली गलौज कर दी। विरोध करने पर ललित पर दो राउंड फायरिंग कर दी। जिसमें से एक गोली उसके बाएं कंधे को चीरते हुए निकल गई।

गोली की आवाज सुनकर कांवड़िए मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी पुलिस को दी। सूचना मिलते ही सिविल लाइन कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को रुड़की के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने उसकी गंभीर हालत देखते हुए एम्स के लिए रेफर कर दिया। एसएसआई अभिनव शर्मा ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। युवक की हालत में सुधार होने के बाद पूरे मामले की जानकारी ली जाएगी। साथ ही सोलानी पार्क के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे भी खंगाले जा रहे हैं।

आईडीपीएल के लोगों के लिए पुलिस की लाठी खाने के लिए भी तैयार हूं-रावत

ऋषिकेश, एजेंसी। आईडीपीएल कॉलोनी खाली कराए जाने के विरोध में कॉलोनीवासी धरने पर बैठे हैं। बृहस्पतिवार को पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत धरना स्थल पर पहुंचे और धरने को समर्थन दिया। रावत ने कॉलोनी खाली कराए जाने की कार्रवाई का विरोध किया। रावत ने धरने पर बैठे लोगों से कहा कि प्रदेश सरकार यदि पुलिस और प्रशासन जबरदस्ती आवास खाली कराती है तो वह पुलिस की लाठी खाने के लिए भी सबसे आगे खड़े मिलेंगे। पूर्व सीएम ने कहा, सरकार को इस समस्या का स्थायी समाधान निकालना चाहिए। कॉलोनी में रह रहे लोगों की समस्या को समझना चाहिए। हमारी शिकायत सरकार से है। शासन के आदेश पर स्थानीय प्रशासन आवासीय कॉलोनी खाली करवा रहा है।

प्रदीप की हत्या के आरोप में तीन पर केस दर्ज

काशीपुर, एजेंसी। पुलिस ने प्रदीप थापा की हत्या के आरोप में अमरजीत उर्फ सोनू निवासी धनौरी पट्टी और दो अज्ञात लोगों पर हत्या का केस दर्ज कर लिया है। प्रदीप का शव बुधवार की सुबह प्रतापपुर क्षेत्र में सड़क किनारे एक गड्ढे में पड़ा मिला था। धनौरी पट्टी प्रतापपुर निवासी संजय बहादुर ने पुलिस में दर्ज कराई रिपोर्ट में कहा कि तीन जुलाई की शाम उसके भाई प्रदीप को अमरजीत सिंह उर्फ सोनू निवासी धनौरी प्रतापपुर घर से बुलाकर ले गया था। पांच जुलाई की सुबह उसके भाई का शव प्रतापपुर में मिला था। संजय ने कहा कि उसके भाई की जेब में 50 हजार रुपये रखे थे। सोनू ने उसके भाई से रुपये उधार लिए थे। रुपयों को लेकर उसके भाई की सोनू से कई बार झगड़ा भी हुआ। उधर, प्रदीप के परिजन मेडिकल रिपोर्ट पर विश्वास नहीं कर रहे हैं। उनका कहना है कि प्रदीप तीन जुलाई की रात 8 बजे से गायब था। उसका शव एक छोटे से पानी के गड्ढे में मिला था। शव के शरीर पर चोट के निशान साफ नजर आ रहे थे। मेडिकल में मृत्यु का कारण पानी में डूबना बताया गया है, जो किसी के गले नहीं उतर रहा है। मृतका की चाची गीता ने कहा कि जहां पर शव मिला वहां पर उन्होंने चार जुलाई की देर शाम तक देखा तब शव वहां नहीं था।

स्कर्ट पहनने पर ताना मारता था समाज, खेलते-खेलते उत्तराखंड की पहली महिला सहायक खेल निदेशक बनीं रशिका सिद्दीकी

हल्द्वानी, एजेंसी।
मेरे स्कर्ट पहनने पर आपत्ति जताई गई। मर्दों के साथ प्रैक्टिस करने पर तरह तरह की बातें सुनने को मिलीं। मैं और मेरा परिवार कट्टरवादी विचार धारा से लड़ता हुआ आगे बढ़ा। अंततोगत्वा चार भाई-बहन अलग-अलग विभागों में सरकारी कर्मचारी बने और मैं खेल अधिकारी। यह कहना है प्रदेश की पहली महिला सहायक निदेशक रशिका सिद्दीकी का।

हल्द्वानी के बनभूलपुरा में रहने वाली रशिका सिद्दीकी नैनीताल की जिला क्रीड़ाधिकारी के बाद पदोन्नति पर सहायक खेल निदेशक बन गईं हैं। रशिका की कहानी विश्व बाक्सिंग चैंपियनशिप में गोल्ड मेडलिस्ट निकहत जरीन से कहीं मिलती जुलती है। फर्क इतना है कि निकहत देश की जानी मानी बाक्सर है और रशिका हाकी में राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी के बाद प्रदेश की पहली सहायक खेल निदेशक। निकहत ने एक इंटरव्यू में कहा था कि उसे समाज शार्ट पहनने पर ताने मारता था।

रशिका का कहना है कि उनके पिता मो. फरहा सिद्दीकी रेलवे विभाग में थे। शुरुआत में उनका परिवार काठगोदाम में रहा। पांच भाई बहनों में वह सबसे छोटी थी। पिता व मां सिद्दीका खातून ने सभी भाई-बहनों को पढ़ाने व आगे बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जब

वह घर से अपनी दोस्तों के साथ मिनी स्टेडियम में खेलने आती थी तो रिश्तेदार व समाज के लोग ताने मारते थे कि स्कर्ट पहनती है। इसे हिजाब पहनना चाहिए लेकिन पिता ने उन्हें कभी बंदिश में नहीं रहने दिया।

यहीं कारण था कि सबसे बड़ी बहन रुकैइय्या मेडिकल सोशल वर्कर, भाई हासिर सिद्दीकी मो. हासिर सिद्दीकी सरकारी कांटेक्टर, भाई एमजी सिद्दीकी रोडवेज में टीआइ व बहन खदीजा डांटा एंट्री आपरेटर और वह 1993 में लखनऊ खेल विभाग की डिप्टी अफिसर बनीं। मंगलवार को रशिका सिद्दीकी प्रदेश की सहायक खेल निदेशक बन गई हैं। अब उसे हर जगह से बधाई मिल रही है। रशिका बताती है कि उनकी पढ़ाई शिक्षा राजकीय इंटर कालेज काठगोदाम से ही हुई। इसके बाद एमबीपीजी से पोस्ट ग्रेजुएट कर वर्ष 1989 में पटियाला से एनआइएस (नेशनल इंस्टीट्यूट आफ स्पोर्ट्स) डिप्लोमा किया। वर्ष 1992 में मुंबई में मेडिकल सोशल वर्कर का काम किया। वर्ष 1993 में डिप्टी खेल अधिकारी बनने के बाद वर्ष 1998 में बनभूलपुरा निवासी कारोबारी मो. शहजाद ने निकाह हुआ। पति का सपोर्ट उन्हें हमेशा मिलता रहा।

रशिका को हर बार खेल क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि मिली। वह खेल विभाग में पहली महिला उपक्रीड़ाधिकारी बनीं। इसके बाद पहली महिला जिला क्रीड़ाधिकारी और अब पहली महिला सहायक खेल निदेशक बनी हैं। वह वर्ष 2021 से नैनीताल की जिलाक्रीड़ाधिकारी हैं।

संक्षिप्त खबरें

नाबालिग की चाकू घोंपकर हत्या

नई दिल्ली। बाहरी उत्तरी जिले के नरेला इंडस्ट्रियल एरिया में शुक्रवार को एक नाबालिग की चाकू घोंपकर हत्या कर दी गई। घटना झंडा चौक जेजे कॉलोनी बवाना के पास की है। नाबालिग का झगड़ा अपने ही रिश्तेदार से हुआ था। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए नजदीकी अस्पताल के शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया है। मृतक की उम्र 16 वर्ष थी। फिलहाल नरेला इंडस्ट्रियल एरिया थाना पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। डीसीपी रवि कुमार सिंह ने बताया कि शुक्रवार सुबह पुलिस को अस्पताल से सूचना मिली कि एक नाबालिग की चाकू घोंपकर हत्या की गई है। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लिया। जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि नाबालिग का तीन अन्य नाबालिगों से किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ था। झगड़े के दौरान आरोपी नाबालिग ने पीड़ित के पीठ व पेट में चाकू से हमला किया।

व्यवसायिक प्रतिद्वंद्विता में स्क्रैप डीलर की हत्या, एक गिरफ्तार

नई दिल्ली। बाहरी जिला स्पेशल स्टाफ ने स्क्रैप डीलर की हत्या में मुख्य आरोपी को गिरफ्तार लिया है। आरोपी की पहचान 23 वर्षीय यश के तौर पर हुई है। आरोपी ने बताया कि व्यवसायिक प्रतिद्वंद्विता में उसने साथियों के साथ मिलकर हत्या की थी। डीसीपी हरेंद्र सिंह ने बताया कि बाहरी जिला स्पेशल स्टाफ प्रभारी इंस्पेक्टर प्रवीन कुमार की टीम को गुरुवार को सूचना मिली थी कि आरोपी यश मंगोलपुरी इंडस्ट्रियल एरिया में छिपा है। पुलिस ने इस जानकारी पर यश को गिरफ्तार कर लिया। उसके कब्जे से पिस्टल और कारतूस बरामद हुआ। डीसीपी ने बताया कि यश आदर्श नगर इलाके में स्क्रैप का काम करता था। इसी व्यवसाय में जावेद और पंकज भी थे। जिनसे यश और उनके साथियों की दुश्मनी थी। यश ने 29 मई को दोनों को सुनसान इलाके में बुलाया और अपने साथियों के साथ चाकू और डंडों से हमला कर दिया। इस हमले में जावेद की मौत हो गई, जबकि पंकज गंभीर रूप से घायल हो गया था।

फाइव स्टार होटल के बाहर महिला का गला काटा

नई दिल्ली। द्वारका स्थित एक फाइल स्टार होटल के बाहर अज्ञात हमलावरों से ब्लेड से महिला का गला काट दिया। फुटपाथ पर महिला को खून से लथपथ पड़ा देखकर लोगों ने उसे अस्पताल में भर्ती किया और मामले की सूचना पुलिस को दी। द्वारका नॉर्थ थाना पुलिस ने घायल महिला के बयान पर केस दर्ज कर चार लोगों को हिरासत में लिया है, जिनसे पूछताछ की जा रही है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि 27 वर्षीय रोजी कौर अपने परिवार के साथ 40 फुटा रोड नवादा इलाके में रहती हैं। महिला अपना निजी काम करती है। पिछले 15 दिनों से महिला पीरागढ़ी स्थित एक ओयो होटल में रह रही थीं। 3 जुलाई की रात वह किसी से मिलने द्वारका स्थित रेडिसन ब्लू होटल आई थीं। होटल के गेट पर किसी अज्ञात हमलावर ने महिला पर पीछे से हमला कर दिया। हमलावर ने ब्लेड से महिला का काट दिया और वहां से फरार हो गया। महिला को बेसुध स्थिति में पड़ा देख कर लोगों ने उसे अस्पताल पहुंचाया, जहां से उपचार के बाद अगले दिन उसे छुट्टी दे दी गई। द्वारका नॉर्थ थाना पुलिस ने महिला के बयान पर केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर की है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि महिला का कई लोगों से विवाद चल रहा था। ऐसे में पुलिस को आशंका है कि इन्हीं लोगों ने वारदात को अंजाम दिया है। साथ ही वर्तमान में महिला की एक शख्स से दोस्ती थी। पुलिस उससे भी पूछताछ कर रही है। मामले में फिलहाल आरोपी की पहचान नहीं हो पाई है।

असम के परिसीमन मसौदे पर आप को आपत्ति, चुनाव आयोग ने जनसंख्या और भौगोलिक स्थितियों का नहीं रखा ख्याल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी ने चुनाव आयोग द्वारा असम के परिसीमन को लेकर लाए गए ड्राफ्ट में भारी विसंगतियों पर आपत्ति जताई है। आप के उत्तर-पूर्वी राज्यों के प्रभारी राजेश शर्मा का कहना है कि चुनाव आयोग ने इसमें असम की मौजूदा जनसंख्या और भौगोलिक स्थितियों का बिल्कुल ख्याल नहीं रखा है। इसके खिलाफ पूरे असम में आंदोलन हो रहा है। ड्राफ्ट के मुताबिक कई जगहों पर एक ही गांव को अलग-अलग विधान सभाओं में बांट दिया गया है। साथ ही, वर्तमान में असम की जनसंख्या 3 करोड़ 60 लाख है। इसके बावजूद आयोग ने 2001 की जनगणना के आधार पर परिसीमन का मसौदा पेश किया है। आप की मांग है कि चुनाव आयोग परिसीमन मसौदे की कमियों को दूर करे या फिर 2026 में होने वाले पूरे देश में परिसीमन के साथ करे। ऐसा न करने पर हम असम की जनता के साथ मिलकर इसके खिलाफ लड़ाई लड़ेंगे।

आम आदमी पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने उत्तर-पूर्वी राज्यों के प्रभारी राजेश शर्मा के साथ शुक्रवार को दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में असम के परिसीमन को लेकर चुनाव आयोग द्वारा लाए गए मसौदे की खामियों को लेकर प्रेसवार्ता किया। इस दौरान असम के आप प्रदेश संयोजक भबेन चौधरी भी मौजूद रहे। आम आदमी पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने शुक्रवार को प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि चुनाव आयोग द्वारा लाए गए परिसीमन के मसौदे से ऐसा प्रतीत होता है कि उसे तैयार करते समय असम की बढ़ती जनसंख्या और वहां की भौगोलिक स्थिति का ख्याल नहीं रखा गया है। वहीं, प्रभारी राजेश शर्मा ने कहा कि 20 जून 2023 को चुनाव आयोग ने असम के परिसीमन को लेकर एक मसौदा प्रकाशित किया। उस मसौदे में जिस तरीके से विधानसभाओं और लोकसभाओं का सीमा निर्धारण किया गया है, वो काफी विसंगति पूर्ण है। मसौदे में बहुत सारी गलतियां है। जनसंख्या वृद्धि और विभिन्न जाति, जनगोष्ठी के अधिकारों का ध्यान सीमांकन में नहीं रखा गया है। असम में पहला परिसीमन 1971 की जनगणना के आधार 1976 में हुआ था। उस समय असम की जनसंख्या 1 करोड़ 46 लाख थी। उसके बाद 2001 और 2011 में जनगणना हुई। किन्हीं कारणों से 2021 में जनगणना नहीं हुई। मगर चुनाव आयोग ने इस परिसीमन के लिए 2001 की जनगणना आधार बनाया है।

जानकारी

- आयोग ने 2001 की जनगणना के आधार पर परिसीमन मसौदा तैयार किया है, जबकि अब असम की जनसंख्या 3 करोड़ 60 लाख हो गई है- राजेश शर्मा

2023 में असम की जनसंख्या करीब 3 करोड़ 60 लाख है। 1976 में सीमा निर्धारण के दौरान असम की जनसंख्या 1 करोड़ 46 लाख थी। करीब ढाई गुना जनसंख्या बढ़ने के बावजूद भी असम में विधानसभा की 126 सीटें और लोकसभा की 14 सीटें ही हैं। केवल विधानसभाओं की बाउंड्री को बदलने के लिए इस तरीके का सीमा निर्धारण करना गलत प्रतीत होता है। आप के उत्तर पूर्वी राज्यों के प्रभारी राजेश शर्मा ने कहा कि जम्मू कश्मीर में सीमा निर्धारण 2011 की जनगणना के आधार पर हुआ था। किसी भी राज्य में जब विधानसभाओं और लोकसभाओं की सीमा निर्धारण की जाती है, तो नवीनतम उपलब्ध जनगणना के आधार पर होती है। 2001 की जनगणना के आधार पर सीमांकन करने का कोई कारण नजर नहीं आता है। परिसीमन बढ़ी जनसंख्या और निर्वाचन क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति पर किया जाना चाहिए। मगर असम के मामले में न बढ़ी जनसंख्या को ध्यान में रखा गया और न भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखा गया है। 27 दिसंबर 2022 को चुनाव आयोग ने असम के परिसीमन के लिए एक घोषणा की थी। आयोग ने कहा गया था कि परिसीमन प्रक्रिया के दौरान आयोग भौतिक विशेषताओं, मौजूदा सीमाओं और प्रशासनिक इकाइयों का ध्यान रखें। लेकिन चुनाव आयोग ने अपने ही दिशा निदेर्शों का कहीं न कहीं पालन नहीं किया है। आप के उत्तर पूर्वी राज्यों के प्रभारी राजेश शर्मा ने कहा कि असम में दो विधानसभा में कम करके 13 विधानसभा कर दी गई हैं। इस तरह से असम के लोगों के अधिकारों का हनन किया गया है। आने वाले दिनों में यह स्थानीय लोगों के लिए बहुत बड़ी समस्या खड़ी करेगा। एक ग्राम पंचायत को 100-150 किलोमीटर दूर सेटेलाइट एरिया से विधानसभाओं को कैसे संचालित किया जाएगा। यह भी एक बहुत बड़ी समस्या है। सवाल यह है कि जब पूरे देश में 2026 में परिसीमन होना है तो इस वक्त असम में परिसीमन करने की इतनी जल्दबाजी क्यों है? इसे देखकर कहीं न कहीं ऐसा लगता है कि सत्तारूढ़ भाजपा को फायदा पहुंचाने की कोशिश की गई है।

फिलिपिंस में मिला भगवान शिव का त्रिशूल और इंद्र का वज्र

नई दिल्ली। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की जड़ें न केवल भारत बल्कि यहां से हजारों किलो मीटर दूर विश्व के अन्य देशों में फैली हैं। बेंगलुरू निवासी शोधार्थी और खादान व्यापारी सैयद समीर हुसैन ने शुक्रवार को प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित एक प्रेस वार्ता में कहा कि फिलिपिंस में भी सनातन संस्कृति के प्रमाण मिले हैं। फिलिपिंस में हुई खुदाई में इंद्र के वज्र और भगवान शिव के त्रिशूल प्राप्त हुए हैं। जो यह प्रमाणित करते हैं कि भारत से लगभग 4हजार किलो मीटर दूर इस देश में सनातन संस्कृति विकसित थी और भारत देश की संस्कृति और सनातन धर्म कितना विशाल है।

सैयद समीर हुसैन ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि यह त्रिशूल और वज्र उनको फिलिपिंस की पहाड़ी में खुदाई के दौरान 2015में प्राप्त हुए थे जिसे वह 2016में भारत लाए। उनका कहना है कि यह प्राप्त होने के बाद मैं लगभग 8साल इस पर शोध किया और मैं दावे से कह सकता हूं कि यह त्रिशूल शिव भगवान का है और यह वज्र इंद्र भगवान का ही है। समीर का कहना है कि त्रिशूल लगभग 10हजार साल पुराना है और वज्र 3हजार साल पुराना है। समीर बताते हैं कि इस त्रिशूल और वज्र की प्रामाणिकता को लेकर उन्होंने पुरातत्वविदों से मुलाकात की। यही नहीं उन्होंने कई धर्म गुरुओं से भी मुलाकात की और उनसे जानना चाहा कि इस वज्र और त्रिशूल का क्या करना चाहिए, लोगों ने इस पर अलग अलग राय दी। सैयद समीर हुसैन का कहना है कि कई लोगों ने इसे खरीदने की भी इच्छा जताई लेकिन मेरे लिए यह भगवान का वरदान है और मैं इसे अपने घर में रखता हूं और कि हर साल इसकी पूजा कराता हूं।

विधायक महाजन ने की अधिकारियों के साथ बैठक

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

रोहतश नगर विधायक जितेंद्र महाजन ने पी.डब्लू.डी. अधिकारियों के साथ विधानसभा की समस्याओं पर बैठक की। बैठक में जितेंद्र महाजन ने मानसून के दौरान जलभराव नालों की सफाई तथा पम्प हॉउसों की स्थिति, सड़कों की जर्जर हालत पर चर्चा की। जितेंद्र महाजन के अनुसार दिल्ली में मॉनसून चालू हो गया है परंतु अभी तक नालों की सफाई पूरी नहीं हुई है, कई सड़कों मंडोली रोड, वजीराबाद रोड पर अभी नालों की सफाई चालू भी नहीं हुई है, पहली ही बारिश मे सड़कों पर जलभराव हो गया है तथा जनता को असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। बैठक में अधीक्षण अभियंता के प्रधान, अधिशाषी अभियंता (विद्युत) विष्णु अवतार, अधिशासी अभियंता डी. के जयसवाल, आदि अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में नालों की सफाई में तेजी लाने, पम्प हाउस पर 24 घंटे कर्मचारी तैनात करने, सड़कों पर गड्ढों को भरने तथा शाहदरा फ्लाईओवर के नीचे पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था तथा अतिक्रमण हटाने पर सहमति बनी। जितेंद्र महाजन ने मंडोली रोड तथा बाबरपुर को दोबारा बनाने तथा विभाग की सड़कों और नालों से अतिक्रमण हटाने की भी मांग की। अधिकारियों ने उपरोक्त सभी मांगों पर जल्दी कार्रवाई का आश्वासन जितेंद्र महाजन को दिया। बैठक में पार्षद रितेश सूजी, चंद्रप्रकाश शर्मा पूर्व पार्षद अजय शर्मा भी उपस्थित थे।

विवेकानन्द महाविद्यालय में आयोजित हुई संगोष्ठी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

विवेकानन्द महाविद्यालय के विवेकानन्द भारतीय ज्ञान प्रणाली भारतीय परम्परा केन्द्र (विकसित) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति कमेटी द्वारा दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार के संयुक्त तत्वाधान में विवेकानन्द महाविद्यालय के सभागर में भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत भारतीय आख्यान परम्परा विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी को संगोष्ठी की संयोजिका डॉ. सुखनीत सूरी के कुशल नेतृत्व में इसका सफल आयोजन किया गया।

संगोष्ठी की भूमिका बताते हुये डॉ. सुखनीत सूरी ने कहा कि इस केन्द्र के माध्यम से इस महाविद्यालय में प्रतिवर्ष अनेक ज्ञानोपयोगी कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। इस केन्द्र के माध्यम से ये पहला कार्यक्रम किया गया आज इस केन्द्र का लोगो एवं इस के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी गई। इस केन्द्र के माध्यम से महाविद्यालय विवेकानन्द के विचारों को आम लोगों तक ले जाने का प्रयास किया जायेगा। कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्कृत संगोष्ठी भारतीय आख्यान परम्परा से किया गया। इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता सेण्टस्टीफन्स कालेज के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. पंकज कुमार मिश्रा जी थे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के संस्कृत के पाछ्झक्रम में संस्कृत की यह विधा आचयान परम्परा को सन्निहित किया जा रहा है। इस लिये दस संगोष्ठी में इस के वारे में ही अवगत कराया जा रहा है। आख्यान के कई समानार्थी शब्द हैं पर इस को कथा, कहानी परम्परा भी आम बोल चाल की भाषा में कहा जाता है संस्कृत साहित्यों में कहानी परम्परा प्रचीन काल से चली आ रही है। कथाअें से पुराण उपनिषद के अलावा बौद्ध साहित्य में जातक कथायें आख्यानों से भरा पडा है।

इस अवसर पर विवेकानन्द महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. दिलीप जयसाल ने कहा कि आख्यान या अनुश्रुति शब्द आरम्भ से ही सामान्यतः कथा अथवा कहानी के अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। तारानाथकृत वाचस्पत्यम् नामक कोश के प्रथम भाग में, इसकी व्युत्पत्ति आख्यायते अनेनेति आख्यानम् दी है।

दस संगोष्ठी के समापन सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाब के आचार्य प्रो0 रणजीत वेहेरा ने कहा कि आख्यानऔर संस्कृत आख्यायिका दोनों के वर्णविन्यासों में सादृश्य होने के कारण ही संभवतः कुछ विद्वान आख्यायिका के शास्त्रीय लक्षणों को आख्यान के ऊपर लागू करके उसके स्वरूप संपादन का प्रयास करते रहे हैं। किंतु संस्कृत के लक्षणशास्त्रों में परस्पर कुछ ऐसे मौलिक विरोध वर्तमान हैं कि उन्हें एक दूसरे का समानार्थक नहीं माना जा सकता। संस्कृत में आख्यायिका की श्रेणी की एक गद्यबद्ध रचना और भी होती थी, जिसे कथा कहते थे। भामह ने काव्यालंकार में सुंदर गद्य में रचित सरस कहानी को आख्यायि कहा है। यह उच्छ्वासों में बँटी होती थी ओर इसमें नायक अपने वृत्त तथा चेष्टा का वर्णन स्वयं करता था। इससे पूर्व इस संगोष्ठी का उदघाटन जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय के पूर्व समकुलपति प्रो0 कपिल कपूर जी ने किया था। उदघाटन में मुख्य अतिथि दिल्ली संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा जी थे तथा मुख वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो ओमनाथ विमल जी थे। महाविद्यालय की प्रचार्या डॉ. हीना नंदराजोग ने इस संगोष्ठी के सफल आयोजन में सभी विद्वानों एवं संयोजकों को बधाई दी विशेष रूप से दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. अरुण कुमार झा के प्रति अपने कृतज्ञता व्यक्त करते हुये कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी के प्रयास से इस संगोष्ठी का सफल आयोजन किया जा सका और अन्त में सभी रिसर्च स्कोलरों का प्रमाण पत्र वितरित किये।

मुकेश पांचाल ने जन्मदिन पर किया पौधारोपण

नई दिल्ली । धूमधाम से मनाया गया रोहतास नगर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेश पांचाल का जन्मदिन जिसकी अध्यक्षता रेखा खन्ना एडवोकेट ने की। मुकेश पांचाल नें टीम के साथ अशोक नगर में पौधारोपण भी किया। इस मौके पर मार्किट की अध्यक्षा बिन्नी वर्मा, गौरव वर्मा, शीतल गोस्वामी, नितिन शर्मा, दिनेश ठाकुर, नरेश त्यागी, शिवदत्त शर्मा, ज्ञानेंद्र बंसल, बिट्टू पंडित, ईश्वर सिंह, पीतांबर जोशी, पीतांबर शर्मा, रामकिशन पांचाल, दीपक शर्मा, राजकुमार शर्मा, आर डी कौशिक, प्रीतम सिंह प्रीतम, अजय भार्गव, डॉ जय जय राम, अरुण पाल, युवा कवि उमाकांत शर्मा, चौधरी अजीत सिंह, शहजाद खान, नासिर जावेद, रजनीश त्यागी, नेम सिंह नैन, दुष्यंत सिंह, अमर गोयल, हरि किशन लाल, सुशील जैन, लोकेश पांचाल, ताराचंद पांचाल, आत्माराम पांचाल, रामकिशन, चेतन कुमार, नथुराम, अजय भार्गव, प्रकाश पासवान, पीतांबर जोशी, जवाहर सिंह कुशवाहा, आदि सभी ने मिलकर के रोहतास नगर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेश पांचाल को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी।

हस्ताक्षर नहीं करने पर पत्नी को फिनाइल पिलाई

नई दिल्ली। शाहदरा के कृष्णा नगर में समझौता पेपर पर हस्ताक्षर नहीं करने पर युवक ने पत्नी को फिनाइल पिला दी। महिला अपनी बेटी को लेकर घर से चली गई। रास्ते में मिली जानकार ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया। 30 वर्षीय पीड़िता अपने पति और बेटी के साथ कृष्णा नगर के शंकर नगर एक्सटेंशन में रहती है। उसने पति पर घरेलू हिंसा और खर्च (गुजारा भत्ता) का केस किया हुआ है। पीड़िता के अनुसार, तीन जुलाई की रात करीब 9:30 बजे उसके पति ने केस को हाई कोर्ट में खत्म करवाने के लिए समझौता पेपर पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा। उसने मना कर दिया। इस पर वह भड़क गया और मारपीट करने लगा। घर में रखी फिनाइल की बोतल लाया और मुंह में डाल दी। इस दौरान वह अपने पिता से बात करने लगा। पीड़िता मौका देखकर अपनी बेटी को लेकर घर से भाग गई। तभी रास्ते में उसकी एक जानकार महिला मिल गई। पीड़िता ने तबीयत बिगड़ने व फिनाइल पिलाने वाली बात बताई। इसके बाद वह उसे अस्पताल लेकर गई। उपचार के बाद उसने पुलिस को सूचना दी।

मुकरबा चौक पर अंडरपास निर्माण के लिए जमीन को मंजूरी

नई दिल्ली। मुकरबा चौक पर अंडरपास बनाने का रास्ता साफ हो गया है। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने इसके लिए सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग की 1.2 एकड़ भूमि पीडब्ल्यूडी को स्थानांतरित करने की मंजूरी दे दी है। इस अंडरपास के बनने से जहां एक तरफ मुकरबा चौक पर यातायात सुगम होगा तो वहीं दूसरी तरफ सड़क हादसों में भी कमी आएगी। उपराज्यपाल सचिवालय के अनुसार, लोक निर्माण विभाग ने 6 सितंबर 2022 को मुकरबा चौक के पास फ्लाईओवर के प्रवेश बिंदु से अंडरपास तक एप्रोच रोड के निर्माण के लिए भूमि मांगी थी। पीडब्ल्यूडी ने इसके बाद सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग से एनओसी की प्रतीक्षा करते हुए यहां काम शुरू कर दिया था। सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग ने इस मामले में पीडब्ल्यूडी के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज करा दी थी। इसे लेकर उपराज्यपाल ने 19 सितंबर 2022 को 77 कॉरिडोर की प्रगति को लेकर हुई समीक्षा बैठक में विभिन्न विभागों के बीच संवाद और आपसी सामंजस्य में कमी का मुद्दा उठाया था। सिंचाई एवं बाढ़ विभाग ने पीडब्ल्यूडी द्वारा की गई मार्किंग के आधार पर क्षेत्र को नापा तो पता चला कि यह जमीन 1.20 एकड़ है। 77 कॉरिडोर की निगरानी के लिए बनी टास्क फोर्स की पिछली बैठक में उपराज्यपाल के निर्देश पर पीडब्ल्यूडी द्वारा सर्विस रोड के लिए लेआउट योजना प्रस्तुत की गई। इसके बाद अप्रैल 2023 में सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग ने साइट पर काम शुरू करने की अनुमति दी थी। यह परियोजना दिल्ली में 77 चिन्हित कॉरिडोर में से एक है, जिन्हें उपराज्यपाल की अध्यक्षता में एक टास्क फोर्स देखती है। अंडरपास का निर्माण जैक पुशिंग प्री-कास्ट आरसीसी बॉक्स द्वारा किया जाएगा।

तीस हजारी फायरिंग मामले में दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने तीस हजारी अदालत परिसर में गोलीबारी की घटना में शामिल दो वकीलों को गिरफ्तार कर लिया है। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। वकीलों की पहचान दिल्ली बार एसोसिएशन के पूर्व उपाध्यक्ष मनीष शर्मा और ललित शर्मा के रूप में की गई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि उन्हें अदालत में पेश किया जाएगा। गुरुवार को, अदालत ने तीन आरोपियों अमन सिंह, रवि गुप्ता और सचिन सांगवान को चार दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया, जो तीस हजारी अदालत में गोलीबारी में शामिल वकीलों के समूह का हिस्सा थे। 05 जुलाई को तीस हजारी कोर्ट में वकीलों के दो गुट आपस में भिड़ गए थे और गोलीबारी की। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसमें सफेद शर्ट और काली पैंट पहने एक व्यक्ति हवा में फायरिंग कर रहा है, उसके साथ अन्य लोग पत्थर और लकड़ी के तख्ते फेंक रहे हैं। मुख्य रूप से वकील की पोशाक में लोगों को लाठियां लहराते और आपस में उलझते देखा जा सकता है। एक अन्य वीडियो में उस स्थान पर गोलियों के खोखे बिखरे हुए दिखाई दे रहे हैं। पुलिस के अनुसार, बार एसोसिएशन के सचिव अतुल शर्मा और वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनीष शर्मा के बीच आपसी दुश्मनी को लेकर झगड़ा हो गया।

पुलिस उपायुक्त (उत्तर) सागर सिंह कलसी ने बताया कि तीस हजारी में गोलीबारी की घटना के बाद आरोपियों को पकड़ने के लिए पुलिस ने रात भर ऑपरेशन चलाया। डीसीपी ने कहा, पुलिस टीम ने इनपुट के आधार पर तकनीकी सहायता ली और भलस्वा, स्वरूप नगर, हैदरपुर, शालीमार बाग और विकासपुरी इलाकों में तलाशी अभियान चलाया और अमन सिंह, सचिन सांगवान और रवि गुप्ता को पकड़ने में कामयाबी हासिल की। डीसीपी ने कहा, वे बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों के प्रतिद्वंद्वी समूह से संबंधित हैं। उनके कब्जे से तीन देशी पिस्टल, चार जिंदा कारतूस और दो कारें जब्त की गई हैं। अधिकारी ने कहा कि तीस हजारी अदालत में दंगे में लिप्त पाए गए अन्य वकीलों की भी पहचान कर ली गई है और अलग-अलग टीमें उन्हें गिरफ्तार करने के लिए काम कर रही हैं। इस बीच, बार काउंसिल ऑफ दिल्ली ने मनीष और ललित का नामांकन निलंबित कर दिया है।

आसमान छूती कीमत : रेस्तरां में खाने के सामान में टमाटर का इस्तेमाल बंद

नई दिल्ली। फास्टफूड श्रृंखला मैकडॉनल्ड्स ने टमाटर की आसमान छूती कीमतों के बीच देश के उत्तरी एवं पूर्वी क्षेत्रों के अपने अधिकांश रेस्तरां में खाने के सामान में टमाटर का इस्तेमाल बंद कर दिया है। कुछ जगहों पर टमाटर के दाम 150 रुपये प्रति किलो से भी ऊपर हो गए हैं। हालांकि कंपनी ने कहा है कि अच्छी गुणवत्ता के टमाटर उपलब्ध नहीं होने के कारण वह खाने के सामान में इसका उपयोग नहीं कर रही है। मैकडॉनल्ड्स इंडिया (नॉर्थ एंड ईस्ट) ने कहा कि वह ह्यफिलहाल टमाटरों पर रोक लगाने के लिए मजबूर है और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाकर इस मुद्दे को हल करने का प्रयास कर रही है। कंपनी के प्रवक्ता ने कहा, कुछ क्षेत्रों में मौसमी फसल संबंधी समस्याओं के कारण, हमारे गुणवत्ता निदेर्शों के अनुरूप सब्जियां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं। अपने ग्राहकों को बेहतरीन गुणवत्ता के उत्पाद देने की अपनी पहचान के अनुरूप हम फिलहाल टमाटर पर रोक लगाने के लिए मजबूर हैं। बर्गर जैसे कुछ लोकप्रिय उत्पादों में टमाटर की कमी को लेकर सोशल मीडिया पर भी चचाएं का दौर जारी है। सोशल मीडिया उपयोगकर्ता बिना टमाटर वाले बर्गर की तस्वीरें साझा कर रहे हैं। कुछ लोगों ने मैकडॉनल्ड्स रेस्तरां पर लगाए गए नोटिस को भी साझा किया जिसमें ग्राहकों को टमाटर की अस्थायी अनुपलब्धता के बारे में सूचित किया गया है। मैकडॉनल्ड्स के प्रवक्ता ने ग्राहकों को आश्वासन देते हुए कहा, हम यह बात दोहरा रहे हैं कि ऐसा कीमतों में उछाल के कारण नहीं हुआ है। यह हमारे गुणवत्ता मानकों के अनुरूप टमाटर नहीं मिलने के कारण हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि पंजाब-चंडीगढ़ क्षेत्र के रेस्तरां में टमाटर से बनने वाले खाद्य पदार्थ ग्राहकों को उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इन क्षेत्रों में खाने के सामान में टमाटर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जा रहा है।

उत्तर और पूर्वी भारत में मैकडॉनल्ड्स रेस्तरां का परिचालन फ्रेंचाइजी के रूप में कनॉट प्लाजा रेस्टुरेन्ट्स प्राइवेट लि. (सीपीआरएल) कर रही है। वहीं दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्रों में मैकडॉनल्ड्स के रेस्तरां का परिचालन दूसरी फ्रेंचाइजी कंपनी वेस्टलाइफ ग्रुप कर रही है।

यूसीसी के मुद्दे पर 11 सदस्यीय कमेटी गठित करेगी दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा अध्यक्ष स. हरमीत सिंह कालका व महासचिव जगदीप सिंह काहलों के नेतृत्व में समान नागरिक संहिता के मामले पर बुलाई गई सिख बुद्धिजीवियों की विशाल बैठक में आज इस मामले पर सिखों की मांगों व आपत्तियों पर मसौदा तैयार करते हेतु 11 सदस्यीय कमेटी गठित करने का फैसला लिया गया।

गुरूद्वारा रकाबगंज साहिब परिसर स्थित कमेटी कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में बैठक के बाद प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए सरदार हरमीत सिंह कालका और सरदार जगदीप सिंह काहलों ने बताया कि बैठक में 13 राज्यों के सिख प्रतिनिधियों व पूर्व न्यायाधीशों, पूर्व बैंक चेयरमैन और अन्य बुद्धिजीवियों ने भी भाग लिया। उन्होंने बताया कि बैठक में यह फैसला लिया गया है कि अभी तक कानून का मसौदा सामने नहीं आया है इसलिए बिना किसी मसौदे के किसी भी बात का विरोध करना अनुचित है। यू.सी.सी का ड्राफ्ट सामने आने व उसका अध्ययन करने के बाद इस मामले में सिखों की मांगों व आपत्तियों का एक खाका 11 सदस्यीय कमेटी द्वारा तैयार किया जाएगा जिसके बाद दिल्ली सिख गुरुद्वारा कमेटी की अगुवाई में एक प्रतिनिधिमंडल कानून मंत्री के साथ मुलाकात कर इस संबंध में चर्चा करेगा व उन्हें कौम की आम राय से परिचित करवाएगा। पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए कालका व काहलों ने कहा कि जिस चीज का मसौदा पेश नहीं हुआ, उसे पढ़े बिना आपत्ति कैसे दर्ज की जा सकती है। जो राजनीतिक लोग इसका विरोध कर रहे है वह उनकी निजी राय हो सकती है दिल्ली कमेटी धार्मिक संस्था है जिसे पूरे मामले पर स्टैंड लेना है पर सर्वप्रथम मसौदा सामने आना चाहिए। उन्होंने कहा कि हर राज्य में लोगों की अपनी मजबूरियां और अधिकार हैं, जिनका राजनीतिकरण नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर हमारे ऊपर कोई भी राजनीति थोपी जाएगी तो हम इसे कतई स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि आज की बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि यूसीसी के अलावा सिख समुदाय के सामने जो भी मुद्दे हैं, दिल्ली गुरुद्वारा कमेटी उनकी पैरवी करे व सिख प्रतिनिधियों के साथ व्यापक विचार-विमर्श करते हुए सिखों के सभी मसले हल करवाए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में सरदार कालका और सरदार काहलों ने कहा कि कॉमन सिविल कोड पर बैठक बुलाने की जिम्मेदारी शिरोमणि कमेटी की बनती थी। शिरोमणि कमेटी को बैठक बुलानी चाहिए थी जिसमें दिल्ली गुरुद्वारा कमेटी, हरियाणा गुरुद्वारा कमेटी को भी निमंत्रण दिया जाता तथा सर्वसम्मिति के साथ आम राय कायम की जानी चाहिए थी।

लेकिन ऐसा नहीं किया गया, हमारे द्वारा बुलाई गई मीटिंग को काफी समर्थन मिला है और 13 राज्यों से सर्वोच्च पदों पर रह कर सिखों की नुमाईंदगी करने वाले प्रतिनिधि शामिल हुए हैं जिन्होंने कौम के मुद्दों पर चर्चा की और सर्वसम्मति से निर्णय लिए।

इस बैठक में अन्यों के अलावा रविं

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण

राजधानी किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, शनिवार, 08 जुलाई, 2023

संक्षिप्त खबरें

कुत्ते को कार से कुचलने का वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली के विकासपुरी इलाके में कार चालक द्वारा एक कुत्ते को कथित तौर पर कुचलने को लेकर एक मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता ताजिंदर पाल सिंह बग्गा ने कथित घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया था। वीडियो में देखा जा सकता है कि कुत्ता सड़क पर बैठा है तभी काले रंग की एसयूवी कार के चालक ने अगला पहिया कुत्ते के ऊपर चढ़ा दिया। वीडियो में कुत्ता दर्द से कराहता दिख रहा है और उठ भी नहीं पा रहा है। पुलिस उपायुक्त (पश्चिम) विचित्र वीर ने कहा कि पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत विकासपुरी पुलिस थाने में मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

बवाना में क्रूरता की हदें पार, चाकू मारकर नाबालिग की हत्या

नई दिल्ली। देश की राजधानी अपराधिक घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। बवाना जेजे कॉलोनी में शुक्रवार सुबह नाबालिग की चाकू घोंपकर हत्या कर दी गई। उसकी पहचान बवाना जेजे कालोनी के साहिल के रूप में हुई है। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी कैमरों की मदद से आरोपितों का पता लगाने की कोशिश कर रही है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि सुबह पांच बजे झंडा चौक पर नाबालिग को चाकू मारने की जानकारी मिली थी। पुलिस उसे अस्पताल लेकर गई, जहां उसे मृत घोषित कर दिया।

रेस्टोरेंटकर्मियों पर चाकू-तलवार से हमला, तीन घायल

नई दिल्ली। मुखर्जी नगर स्थित एक रेस्टोरेंट में गुरुवार सुबह छह बजे बदमाशों ने चाकू और तलवार से हमला कर तीन वेटर को घायल कर दिया। पुलिस हत्या के प्रयास की धाराओं में मुकदमा दर्ज हमलावरों की तलाश कर रही है। पीड़ित 22 वर्षीय रिंकू ने बताया कि वह अपने भाई चेतन के साथ हडसन लेन स्थित नो ऑब्जेक्शन कैफे में वेटर है। 10-15 दिन पहले कुछ लड़के शराब के नशे में धुत होकर रेस्टोरेंट में आए थे, जिन्होंने बिल को लेकर विवाद कर दिया था। तब मैनेजर ने समझौता करा दिया था, लेकिन जाते वक्त युवकों ने जान से मारने की धमकी दी थी। पीड़ित ने बताया कि रात में देर होने पर वह साथियों के साथ रेस्टोरेंट में ही सो जाता है। पीड़ित ने बताया कि गुरुवार को वह अपने भाई चेतन, सहकर्मी अजीम, रिंकू और रेस्टोरेंट मालिक अभिषेक के साथ पहली मंजिल पर सो रहा था। सुबह करीब छह बजे उनका एक दोस्त दरवाजा खोलकर चाय लाने चला गया। तभी तीन चार बदमाश हाथ में चाकू और तलवार से होकर अंदर आए और उन पर हमला कर दिया। हमले में रिंकू, चेतन और अजीम गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी को मरा जानकर हमलावर मौके से फरार हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को बीजेआरएम अस्पताल में भर्ती कराया, जहां सभी की हालत नाजुक बताई जा रही है।

आतिशी ने कश्मीरी गेट स्थित कांवड़ शिविर का दौरा कर तैयारियों का जायजा लिया

- सावन के पवित्र महीने में शिवभक्तों की सेवा करना पुण्य और आस्था का काम, इस दिशा में कांवड़ियों को तमाम सुविधाएँ मुहैया कर अपनी जिम्मेदारी निभा रही केजरीवाल सरकार-राजस्व मंत्री आतिशी

कांवड़ियों के लिए शिविर में वाटर प्रूफ टेंट, फर्नीचर, शौचालय, पानी, मेडिकल सहित अन्य जरुरी सुविधाएँ होंगी मौजूद, सुरक्षा की दृष्टि से सिविल डिफेंस वॉलंटियर होंगे तैनात

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

केजरीवाल सरकार कांवड़ियों की सुविधा के लिए दिल्लीभर में 200 कांवड़ शिविर लगा रही है इससे संबंधित तैयारियों का जायजा लेने के लिए राजस्व मंत्री आतिशी ने शुक्रवार को कश्मीरी गेट स्थित महाराजा अग्रसेन पार्क के कांवड़ शिविर का निरीक्षण कियो इस दौरान अधिकारीयों को निर्देश देते हुए राजस्व मंत्री आतिशी ने कहा कि, कांवड़ शिविर में कांवड़ियों की सुविधाओं के लिए सभी जरुरी सुविधाओं का पुख्ता इंतजाम किया जाए ताकि शिवभक्तों को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े उन्होंने कहा कि, सावन के पवित्र महीने में शिवभक्तों की सेवा करना पुण्य और आस्था का काम है इस दिशा में कांवड़ियों को तमाम सुविधाएँ मुहैया कर केजरीवाल सरकार अपनी जिम्मेदारी निभा रही है

बता दे कि ये केजरीवाल सरकार के सबसे बड़े कांवड़ शिविरों में से एक है जहाँ एक समय में लगभग 10,000 कांवड़ियों के रुकने का इंतजाम किया जा सकता है यहाँ कांवड़ियों के प्रसाद ग्रहण करने के लिए एक बड़ा डाइनिंग हॉल भी तैयार किया गया है

इस मौके पर राजस्व मंत्री आतिशी ने कहा कि, पिछले 8 सालों से सावन के पवित्र महीने में केजरीवाल सरकार कांवड़ियों की सुविधाओं के लिए शिविर लगाती है इस साल भी दिल्ली भर में 200 कांवड़ शिविर लगाए जा रहे है जहाँ कांवड़ियों के लिए तमाम सुविधाएँ मौजूद रहेंगी इसमें वाटरप्रूफ टेंट, रहने-सोने की व्यवस्था, साफ पानी, शौचालय सहित अन्य व्यवस्था की जाती हैकांवड़ियों के कांवड़ रखने के लिए विशेष स्टैंड मुहैया करवाए जाते है साथ ही हर कांवड़ शिविर में मेडिकल सुविधाएँ होती है, डॉक्टर-नर्स मौजूद होते है ताकि कांवड़ियों को जरुरत पड़ने पर तुरंत उपचार दिया जा सकें और कांवड़ियों की सुविधाओं के लिए स्थानीय डिस्पेंसरियों को शिविरों से जोड़ा गया है। किसी भी आपात स्थिति के लिए कैट्स एंबुलेंस को जोड़ा गया है। अस्पतालों को कांवड़िये के इलाज के लिए विशेष प्रबंध करने के निर्देश दिए गए हैं।

राजस्व मंत्री आतिशी ने कहा कि हम सभी को कांवड़ियों का धन्यवाद करना चाहिए कि, हरिद्वार से जल लाकर भगवान भोलेनाथ की भक्ति का जो काम हम नहीं कर पाते वो पुण्य का काम हम सभी के लिए कांवड़िए कर रहे है ऐसे में इन कांवड़ियों की सेवा करना केजरीवाल सरकार की प्राथमिकता और जिम्मेदारी है और हम अपने कांवड़ शिविरों में शिवभक्त कांवड़ियों के लिए सभी सुविधाएँ सुनिश्चित करेंगे

उन्होंने अधिकारीयों को निर्देश देते हुए कहा कि, कांवड़ यात्रा के दौरान जिला प्रशासन अलर्ट पर रहे ताकि कांवड़ियों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े साथ ही शिविर में कांवड़ियों को हर जरुरी सुविधाएँ मिले कांवड़ियों की सुरक्षा और सुविधाओं के लिए हर जरुरी कदम सुनिश्चित किया जाए

बता दे कि सावन महीने में लाखों की संख्या में श्रद्धालु हरिद्वार से जल लेने जाते है ऐसे में दिल्ली सरकार राजधानी में जगह-जगह कांवड़ शिविर लगाती है जहाँ कांवड़ियों के रुकने और आराम करने के लिए हर जरुरी सुविधाएँ मुहैया करवाई जाती है ऐसे में इस साल भी केजरीवाल सरकार, दिल्ली में कांवड़ियों की सुविधा के लिए लगभग 200 कांवड़ शिविर लगवा रही है जो पिछले साल की तुलना में 2 दर्जन अधिक है साथ ही सबसे ज्यादा 85 शिविर शिविर पूर्वी दिल्ली, उत्तरी पूर्वी दिल्ली और शहादरा जिले में लगाये गए है क्योंकि ये तीनों जिले कांवड़ियों के एंट्री-एग्जिट पॉइंट है।

बृजभूषण सिंह को कोर्ट में होना होगा पेश

नई दिल्ली। महिला पहलवानों के यौन शोषण के मामले में बृजभूषण सिंह कोर्ट कोर्ट पेश होना होगा। छह बालिग महिला पहलानों के मामले में दिल्ली की अदालत ने कुश्ती संघ के अध्यक्ष के खिलाफ समन जारी किया है। समन जारी करते हुए अदालत ने 18 जुलाई को पेश होने का आदेश दिया है। बता दें कि दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट ने छह महिला पहलवानों के यौन शोषण के मामले में बृजभूषण सिंह के खिलाफ आरोपपत्र पर संज्ञान लिया। आरोपत्र पर संज्ञान लेते हुए कोर्ट ने बृजभूषण सिंह के खिलाफ समन जारी किया है। उन्हें 18 जुलाई को कोर्ट में पेश होना है। दिल्ली पुलिस ने छह बालिग महिला पहलवानों के मामले में बृजभूषण सिंह के खिलाफ आईपीसी की धारा 354 (अपमान), 354अ (यौन उत्पीड़न), 354ऊ(पीछा करना) और 506 (1) (आपराधिक धमकी) के तहत अपराधों के लिए आरोप पत्र दायर किया था। वहीं नाबालिग पहलवान (लड़की) के मामले में दिल्ली पुलिस ने पटियाला हाउस कोर्ट में कैंसिलेशन रिपोर्ट फाइल की थी।

विकासपुरी में सड़क के किनारे बैठे कुत्ते पर चढ़ाई एसयूवीकार

नई दिल्ली, पीटीआई। पश्चिमी दिल्ली के विकासपुरी इलाके में एक कार चालक द्वारा कथित तौर पर एक कुत्ते पर अपना वाहन चढ़ाने के बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया है। पुलिस ने शुक्रवार को इस संबंध में जानकारी दी।

बीजेपी नेता तजिंदर पाल सिंह बग्गा ने कथित घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है। वीडियो में दिखाया गया है कि कुत्ता सड़क पर बैठा है और एक काली एसयूवी अपना अगला पहिया उसके ऊपर से गुजार रही है।

वीडियो में देखा जा सकता है कि कुत्ता दर्द से कराह रहा है और खुद को उठाने में असमर्थ है। पुलिस उपायुक्त (पश्चिम) विचित्र वीर ने कहा कि पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत विकासपुरी पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है और जांच शुरू की गई है।

तीस हजारी अदालत में गोलीबारी : वकीलों के दोनों समूहों के नेता गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय राजधानी स्थित तीस हजारी अदालत परिसर में गोलीबारी की घटना में कथित संलिप्तता को लेकर शुक्रवार को वकीलों के दोनों समूहों के नेताओं को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने यह जानकारी दी।

पुलिस ने बताया कि दिल्ली बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष मनीष शर्मा और एसोसिएशन के सचिव अतुल शर्मा के भाई ललित शर्मा को गिरफ्तार किया गया है तथा छापेमारी जारी है।

इस घटना के सिलसिले में गिरफ्तार तीन वकीलों को एक स्थानीय अदालत ने बृहस्पतिवार को पुलिस हिरासत में भेज दिया था। तीस हजारी अदालत परिसर में बुधवार को गोलीबारी की घटना हुई थी और पुलिस ने कहा कि इसमें वकीलों के दो समूह कथित तौर पर शामिल थे। आरोप है कि दिल्ली बार एसोसिएशन के एक पदाधिकारी ने एसोसिएशन के एक अन्य सदस्य के समर्थकों पर गोलियां चलाईं। सोशल मीडिया पर आए घटना के एक वीडियो में एक व्यक्ति हवा में गोली चलाता दिखता है, जबकि कुछ लोग पत्थर और लकड़ी के तख्ते फेंकते नजर आ रहे हैं।

बृहस्पतिवार को भलस्वा, स्वरूप नगर, हैदरपुर, शालीमार बाग और विकासपुरी में रात भर चले तलाशी अभियान के बाद वकील अमन सिंह, सचिन सांगवान और रवि गुप्ता को पकड़ा गया था। पुलिस अधिकारी के मुताबिक, तीनों आरोपी बार एसोसिएशन पदाधिकारियों के प्रतिद्वंद्वी समूहों से हैं। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार लोगों के पास से तीन देशी पिस्तौल, चार कारतूस और दो कार जब्त की गई हैं।

बाइक सवारों ने महिला पुलिसकर्मी से मोबाइल झपटा

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी जिले के डीसीपी कार्यालय के पास बाइक सवार बदमाशों ने एक महिला पुलिसकर्मी से मोबाइल झपट लिया। पीड़िता बस के इंतजार में बस स्टैंड पर खड़ी थी। इसी दौरान बदमाशों ने वारदात को अंजाम दिया। पुलिस केस दर्ज कर जांच कर रही है। पीड़िता 32 वर्षीय गुड्डी परिवार के साथ गाजियाबाद के लोनी में रहती हैं और उत्तर पूर्वी जिले के डीसीपी कार्यालय में बतौर सिपाही तैनात हैं। गुड्डी के अनुसार, गुरुवार शाम वह ड्यूटी खत्म कर घर के लिए निकली। डीसीपी कार्यालय के पास बस स्टैंड पर पहुंची। तभी एक जानकार का फोन आ गया। वह सड़क किनारे खड़ी होकर बात करने लगी। इस दौरान पीछे से बाइक सवार दो बदमाश आए और मोबाइल झपटकर भाग गए। सीलमपुर थाने की पुलिस केस दर्ज कर बदमाशों की तलाश कर रही है।

असम के लिए परिसीमन का ड्राफ्ट विसंगतिपूर्ण : असम प्रभारी राजेश शर्मा

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने चुनाव आयोग के एक ड्राफ्ट को गलत बताया है। दरअसल पूर्वी राज्यों के लिए आम आदमी पार्टी के इंचार्ज राजेश शर्मा ने कहा कि चुनाव आयोग ने असम में होने वाले लोकसभा और विधानसभा चुनावों को लेकर परिसीमन का मसौदा प्रकाशित किया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि न ही इसमें असम की बढ़ती जनसंख्या और न ही वहां की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखा गया है। उन्होंने कहा कि 20 जून को चुनाव आयोग ने असम के लिए एक परिसीमन ड्राफ्ट प्रकाशित किया था। इसमें जिस तरह से लोकसभा और विधानसभा के लिए सीमा निर्धारित की गई है वह पूरी तरह से विसंगतिपूर्ण है और विभिन्न जातियों के अधिकारों को ध्यान में नहीं रखा गया है। राजेश शर्मा ने कहा कि असम में पहला परिसीमन सन 1976 में किया गया, जो सन 1971 की जनसंख्या के आधार पर किया गया था। उस वक्त वहां की जनसंख्या 1 करोड़ 46 लाख थी। इसके बाद 2001 और 2011 में जनगणना हुई, लेकिन 2021 में किन्हीं कारणों जनगणना नहीं हो पाई। असम में जो ड्राफ्ट प्रकाशित किया गया है, उसके लिए चुनाव आयोग ने जनगणना 2001 की ली है। आज असम की जनसंख्या बढ़कर 3 करोड़ 60 लाख हो गई है। उन्होंने कहा कि इस परिसीमन में चुनाव आयोग ने लोकसभा की 14 और विधानसभा की 126 सीटें रखी है, लेकिन विधानसभा और लोकसभा की बाउंड्री को बदलना या उसकी सीमा का निर्धारण करना हमें गलत लगता है। जब भी परिसीमन का ड्राफ्ट प्रकाशित किया जाता है तो बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखा जाता है, लेकिन इसमें ऐसा नहीं किया गया है। यह चुनाव आयोग द्वारा असम के लोगों के और जातियों के अधिकारों का हनन है। दूर की जाएं कमियां: इतना ही नहीं, कहीं-कहीं तो एक ही गांव को अलग अलग विधानसभाओं में बांट दिया है।

डीसीपी ऑफिस के सामने महिला कॉन्स्टेबल से बदमाशों ने लूटा मोबाइल

पूर्वी दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बदमाशों के हौसले बुलंद हैं। उत्तर पूर्वी जिले के डीसीपी ऑफिस में तैनात एक महिला कॉन्स्टेबल से बदमाशों ने दिनदहाड़े मोबाइल झपट लिया। ध्यान देने वाली बात है कि महिला कॉन्स्टेबल से मोबाइल लूटने की घटना डीसीपी ऑफिस के सामने हुई है।

पीड़िता गुड्डी की शिकायत पर सीलमपुर थाना पुलिस ने प्राथमिकी की है। खुलेआम बदमाश पुलिस के इकबाल को चुनौती देते हुए सड़कों पर लोगों को निशाना बना रहे हैं। बदमाशों की पहचान के लिए सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है।

गुड्डी अपने परिवार के साथ गाजियाबाद में रहती हैं। वह दिल्ली पुलिस में कॉन्स्टेबल हैं। वह वीरवार शाम को ड्यूटी करके घर के लिए निकली थी, वह पैदल ही डीसीपी आफिस से पास के बस स्टैंड जा रही थी। उसी दौरान उनके फोन पर कॉल आ गया वह बात करने लगीं तभी पीछे से दो बदमाश आए और झपट्टा मारकर मोबाइल ले उड़े।

10 हजार साल पुराना भगवान शिव का मिला त्रिशूल!

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

शोधकर्ता और व्यवसायी द्वारा प्रेस क्लब में दस हजार साल पुराने त्रिशूल और तीन हजाक साल पुराने वज्र का अनावरण किया गया। उनका दावा है कि यह सदियों पुराना त्रिशूल भगवान शिव का है, और वज्र इंद्र का हथियार है, जो हिंदू धर्म में बारिश और तूफान के देवता के रूप में लोकप्रिय है।

खनन के दौरान मिले त्रिशूल और वज्र प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में सैयद शमीर हुसैन ने कहा कि मई 2015 में फिलीपींस में खनन के दौरान त्रिशूल और वज्र पाए गए थे। वह तांबे के अयस्क और सोने के खनन से जुड़े रहे हैं। 2012 से फिलीपींस में वह स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर काम कर रहे थे।

5 मई 2015 को कुछ असामान्य लगने पर श्रम पर्यवेक्षक ने उन्हें खनन स्थल पर बुलाया। खोज के समय फिलीपींस में त्रिशूल और वज्र जैसी पुरावशेषों को देखकर वह काफी आश्चर्यचकित रह गये। बाद में उन्होंने इन पुरावशेषों को भगवान शिव के त्रिशूल और इंद्र के वज्र के रूप में पहचाना। वह 2016 में इन पुरावशेषों को भारत लाए और अपने दावे का समर्थन करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण खोजने के लिए शोध किया।

उन्होंने कहा कि मैंने चीजों को समझने की कोशिश में लगभग आठ साल बिताए। बहुत सारे शोध और चर्चा के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि ये सिर्फ पुरावशेष नहीं हैं बल्कि स्पष्ट रूप से हैं। सदियों पुरानी भारतीय सभ्यता और संस्कृति की जड़ों से जुड़ा हुआ।10 हजार साल पुराने त्रिशूल होने का गावा सैयद शमीर हुसैन का कहना है कि उन्होंने हजारों साल पुराने पुरावशेषों की प्रामाणिकता का पता लगाने के लिए पुरातत्वविदों से भी मुलाकात की और चर्चा की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि 10,000 साल पुराना त्रिशूल सीधे भगवान शिव का है और 3,000 साल पुराना वज्र है जो भगवान इंद्र द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला हथियार है। उनका कहना है कि शोध के दौरान त्रिशूल और वज्र के साथ क्या किया जाना चाहिए, इस पर चर्चा करने के लिए उन्होंने कई धार्मिक नेताओं से मुलाकात की। सैयद समीर हुसैन के मुताबिक लोगों ने अलग-अलग राय दी। कुछ लोगों ने इन पुरावशेषों को खरीदने की इच्छा भी व्यक्त की, लेकिन उन्होंने ऐसे सभी प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया। अभी तक उन्होंने यह तय नहीं किया है कि उन्हें क्या करना है, वह ऐसे लोगों की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो आगे आएं और सुझाव दें, वह उचित व्यक्ति की तलाश कर रहे हैं जो इसमें शामिल हो और कुछ ऐसा सोचे कि पूरी दुनिया को त्रिशूल और वज्र दोनों के बारे में पता चले।

बिहार से पहली बार दिल्ली घूमने आई थी सविता, चालक की एक गलती से बुजुर्ग महिला की चली गई जान

पूर्वी दिल्ली। सड़क हादसे में जान गंवाने वाली बुजुर्ग सविता पहली बार अपनी बेटी के साथ दिल्ली घूमने के लिए आई थीं। दिल्ली घूमने को लेकर वह काफी खुश थीं, लेकिन ऊपर वाले को कुछ ओर ही मंजूर था। बेटी के घर पहुंचने से पहले ही उनकी हादसे में मौत हो गई। वहीं बुजुर्ग की बेटी, दामाद और नाती जीटीबी अस्पताल में जिंदगी और मौत से जंग लड़ रहे हैं। स्वजन उनकी सलामती के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। सादतपुर में रहने वाले निपुण चौधरी ने बताया कि गत वर्ष जुलाई में बिहार के मुजफ्फरपुर में रहने वाली उनकी दादी गुलाबो रानी की मृत्यु हो गई थी। 30 जून को उनके पिता नंद किशोर चौधरी, मां रीना और छोटा भाई सिद्धांत बिहार दादी की बरसी में गए थे। उनकी नानी सविता भी मुजफ्फरपुर में ही रहती थीं। कैब चालक की गलती ने उजाड़ दिया परिवार वह कभी दिल्ली नहीं आई थीं। रीना के कहने पर वह इस बार दिल्ली घूमने के लिए तैयार हो गई थीं। बृहस्पतिवार को चारों लोग बिहार से आनंद विहार बस अड्डे पहुंचे। निपुण ने बताया कि वह इस बात से काफी उत्साहित थे कि नानी उनके घर रहने के लिए आ रही हैं, लेकिन कैब चालक की एक गलती ने उनका परिवार उजाड़ दिया। मौसी के घर छुट्टियां मनाकर लौट रही थी नौ वर्षीय साधना करावल नगर थाने के पास रहती है। परिवार में पिता चंदन गिरी व अन्य हैं। वह सरकारी स्कूल में चौथी कक्षा में पढ़ती है। वह गर्मियों की छुट्टियों में बरेली में अपनी मौसी के घर चली गई थी। स्कूल खुल गए हैं। वह बृहस्पतिवार दोपहर को मौसी की बेटी नेहा व बेटे नितेष के साथ ट्रेन से बरेली से आनंद विहार रेलवे स्टेशन उतरी। तीनों रेलवे स्टेशन के बाहर से खजूरी के लिए सवारी वाली ईको वैन बैठ गए थे। घायल नेहा ने कहा कि वह भाई व बहन के साथ पिछली सीट पर थी। इसलिए बच गई। हादसा बहुत खौफनाक था, वह हादसे को कभी नहीं भूल सकती। मौके पर मौजूद प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हादसा बहुत भीषण था। यदि डिवाइडर न होता तो कई लोगों की मौत हो सकती थी। सबसे बुरा हाल चालक की बराबर वाली सीट पर बैठे दो लोगों का हुआ। पुलिस के पहुंचने से पहले ही राहगीरों ने घायलों को कार के अंदर से बाहर निकाल लिया था। कई लोगों के खून निकल रहा था। घायलों के शरीर से बह रहे खून को रोकने के लिए राहगीरों ने चुन्नी व रूमाल तक बांध दिए थे।

ओम उच्चारण को शाश्वत करती पुस्तक स्वर्ण युग ज्ञान का युग युवाओं को प्रेरित करेगी : शम्भू चौधरी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

अध्यात्म जीवन से जुडी जानकारी लेकर सत्य की खोज के माध्यम ओम उच्चारण पर अपने जीवन के अनुभवों को लेखक एवं जम्मू कश्मीर पुलिस में इंस्पेक्टर पद पर तैनात विक्रम जीत सिंह ने अपनी पुस्तक स्वर्ण युग ज्ञान का युग के माध्यम से साझा किया है। इस पुस्तक का विमोचन दिल्ली के शास्त्री भवन में भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रेस इंफॉर्मेशन ब्यूरो के अतिरिक्त महानिदेशक शम्भू चौधरी, दैनिक भास्कर के राजनीतिक संपादक के पी मलिक, वरिष्ठ पत्रकार अशोक कुमार निर्भय, न्यूज-24 चैनल के वरिष्ठ पत्रकार विनय कुमार, डॉ.सतीश वर्मा, संवाद सिंधी के संपादक श्रीकांत भाटिया,प्रकाशक सुबोध कुमार द्वारा पी आई बी मुख्यालय में संयुक्त रूप से किया।

इस अवसर पर अतिरिक्त महानिदेशक शम्भू चौधरी ने पुस्तक के लेखक विक्रमजीत सिंह को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आपकी यह पुस्तक मानव कल्याण को समर्पित है जो आने वाली पीढ़ी को ओम के उच्चारण से आगे बढ़ने और युवाओं का मंत्र उच्चारण और उनके अध्यात्म की ओर झुकाव करने में मदद करेगी।

दैनिक भास्कर के राजनीतिक संपादक के पी मलिक ने कहा कि यह पुस्तक अध्यात्म को समर्पित है लेकिन ओम शब्द ब्रह्मांड के शाश्वत है इसलिए अगर कोई व्यक्ति इसका उच्चारण करके अपने मार्ग को प्राप्त करना चाहता है तो यह पुस्तक ऐसे व्यक्ति के लिए बहुत सदुपयोगी सिद्ध होगी। विक्रमजीत सिंह को मेरी शुभकामना है कि उन्होंने पुलिस विभाग में इतनी व्यस्त दिनचर्या के बावजूद भी यह पुस्तक लिखने का काम किया है।

पुस्तक विमोचन के इस मौके पर अपनी पुस्तक के विषय में प्रकाश डालते हुए लेखक विक्रमजीत सिंह ने कहा कि यह किताब जिसका नाम स्वर्ण युग-ज्ञान का युग है इसके माध्यम से मेरी अभिलाषा है कि मैं जिंदगी के कई पहलुओं पर रोशनी डाल सकूं ताकि हम अपनी मूल प्रकृति पर वापस लौट सकें यह सत्य है और उसे जानकर हम एक बार फिर स्वर्णिम ज्ञान सत्य युग की स्थापना कर सकें। इसकी जानकारी भी इसलिए है क्योंकि हमने अपने जीवन को बहुत जटिल बना लिया है और अब हमें अपनी मूल प्रकृति पर लौटना होगा, ताकि हम अपने जीवन पर नियंत्रण ला सकें और परमात्मा की कृपा प्राप्त करते हुए अपने भाग्य के निमार्ता बन सकें। इस किताब में अध्यात्म, तर्क और विचार के माध्यम से चेतना को समझने का प्रयास किया गया है।

विक्रमजीत सिंह ने कहा कि इस पुस्तक का उद्देश्य ओम के निरंतर उच्चारण के माध्यम से अपने भीतर उतरना है और अपनी जिंदगी के सारे पहलुओं को समझते हुए सत्य की खोज करनी है जो कि हमारी दिव्य प्रकृति है। अपने बाहरी स्वरूप से ज्यादा जुड़ाव होने के चलते हम कभी भी अपने भीतर नहीं उतर पाते और हमारा आत्म स्वरूप सदैव हमसे ओझल ही रहता है। इस कारण हम परमात्मा तत्व के अंश होते हुए भी बहुत न्यूनतम जीवन व्यतीत करते हैं और कुदरत के अधीन रहते हुए डर के माहौल में अपना जीवन जीते हैं। क्योंकि हम खुद को आत्मा न जानते हुए केवल शरीर मात्र ही समझते हैं।

पाकिस्तानी सीमा हैदर के पति का दावा- कभी नहीं हुआ हमारा तलाक, मिस्ड कॉल से शुरू हुई थी लव स्टोरी

ग्रेटर नोएड, प्रात : किरण संवाददाता

प्यार कब, कैसे और किससे हो जाए यह कोई नहीं कह सकता। यह बात पाकिस्तानी महिला सीमा हैदर पर सटीक बैठती है जिसे पबजी गेम खेलते हुए भारत के सचिन से प्यार हो गया। प्यार भी ऐसा कि उसके लिए सीमा पाकिस्तान की अपनी सारी संपत्ति बेचकर तीन देशों की यात्रा कर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित ग्रेटर नोएडा पहुंच गई। हालांकि भारत और पाकिस्तान के बीच कैसे रिश्ते हैं यह सब जानते हैं जिसके बाद सीमा जेल में है और उसकी जांच चल रही है। भारत आने पर सीमा ने कई तरह के दावे किए थे, जिसमें से कई दावों पर सवाल उठ रहे हैं क्योंकि सीमा के पाकिस्तानी पति का एक वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में सीमा के पति गुलाम हैदर ने कई खुलासे किए हैं.

सीमा के पति का वीडियो वायरल

पबजी गेम के जरिये ग्रेटर नोएडा में रहने वाले युवक सचिन के संपर्क में आकर उसने मिलने के लिए भारत आ गई पाकिस्तानी महिला सीमा गुलाम हैदर पूर्व में पाकिस्तान में प्रेम विवाह कर चुकी है। पहली लव स्टोरी भी मिस्ड कॉल से हुई थी शुरू

सऊदी अरब में रह रहे सीमा के पति गुलाम हैदर जखरानी ने सोशल मीडिया पर बयान जारी कर कहा है कि उन्होंने सीमा रिंद से प्रेम विवाह किया था। उस दौरान परिवार के लोग शादी के लिए राजी नहीं थे। कुछ समय बाद रिंद बिरादरी ने उनकी शादी को स्वीकार किया था। प्रेम विवाह करने से पहले गुलाम हैदर व सीमा चार महीने तक फोन पर संपर्क में रहे थे और प्यार की शुरूआत मिस्ड कॉल से हुई थी। दोनों के चार बच्चे हैं।

पहले ऑटो चलाते थे गुलाम हैदर, कभी नहीं हुआ कोई विवाद

गुलाम हैदर जखरानी ने कहा कि वह पाकिस्तान के कराची में आटो चलाते थे। उनके सीमा के संबंध मधुर थे। कभी दोनों में कोई विवाद नहीं हुआ। वर्ष 2019 में वह मजदूरी करते सऊदी अरब चले गए। उनकी पत्नी ने भारत जाने के लिए घर बेच दिया और अपने साथ सभी आभूषण लेकर चली गई।

समाचार पत्र से पता चला भारत की जेल में है पत्नी उनको समाचार से पता चला कि उनकी पत्नी वर्तमान में भारत की जेल में बंद है। गुलाम ने कहा है कि उनका पत्नी से तलाक नहीं हुआ है।

यह है पूरा मामला पाकिस्तान की रहने वाली चार बच्चों की मां सीमा गुलाम हैदर की पबजी खेलते दौरान ग्रेटर नोएडा के रबूपुरा में रहने वाले सचिन से दोस्ती हुई। दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगे। सचिन व सीमा सात दिन तक नेपाल में रहे। सचिन से शादी करने के लिए सीमा पाकिस्तान से भारत आ गई। इसके लिए उसने पाकिस्तान से दुबई और फिर वहां से नेपाल का फ्लाइट का टिकट कराया।

नेपाल से बस में सवार होकर 13 मई को सीमा रबूपुरा आ गई। यहां वह डेढ़ महीने तक अवैध रूप से रही। जानकारी होने पर पुलिस ने तीन जुलाई को सीमा, उसके प्रेमी सचिन व सचिन के पिता नेत्रपाल को गिरफ्तार किया है।

एयरपोर्ट पर कारोबारी को लूटने वाले गिरफ्तार

नई दिल्ली। आईजीआई एयरपोर्ट पर बुलाकर कारोबारी को लूटने के आरोप में पुलिस ने दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने कारोबारी को काला धन सफेद करने के नाम पर जयपुर से दिल्ली बुलाया था। आरोपियों की पहचान मनिन्दर और अमन कुमार के रूप में हुई है। जून में एयरपोर्ट पुलिस ने 8 मामलों में 10 एजेंट गिरफ्तार किए हैं। इनके अलावा 29 दलालों को गिरफ्तार कर 22 गाड़ियों को भी जब्त किया है। डीसीपी देवेश महला के अनुसार जयपुर निवासी अविनाश अपने एक परिचित के माध्यम से हेमंत के संपर्क में आए। हेमंत ने उन्हें बताया कि अगर वह काले धन को अपने बैंक खाते में जमा कराकर उनके खाते में भेजेंगे तो उन्हें दस फीसदी कमीशन मिलेगा। इस लालच में कारोबारी दिल्ली आ गया। यहां हेमंत और उसके तीन अन्य साथी अविनाश को गाड़ी में अपने साथ ले गए। रास्ते में उन्होंने कारोबारी की पिटाई कर मोबाइल, 5000 रुपये और डेबिट-क्रेडिट कार्ड लूट लिए। एसएचओ यशपाल सिंह ने पुलिसकर्मियों को पिकेट जांच में लगाया। पीड़ित के शोर मचाने पर एएसाई सुभाष और सिपाही नरेश ने गाड़ी को रोक लिया। इनमें से दो बदमाशों को पुलिस ने पकड़ लिया जबकि दो भाग गए थे। दोनों आरोपी हरियाणा के रहने वाले हैं।

संक्षिप्त खबरें

शराब के नशे में हंगामा कर रहा युवक गिरफ्तार

थावे। थावे थाने की पुलिस ने एकडेरवा गांव में शराब पीकर हंगामा मचा रहे एक युवक को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार युवक इसी गांव का राकेश कुमार सिंह उर्फ अमित कुमार बताया गया है। मेडिकल जांच में शराब पीने की पुष्टि होने पर गिरफ्तार युवक को जेल भेज दिया गया। इसकी जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष शशिरंजन कुमार ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि एकडेरवा गांव में एक युवक शराब के नशे में हंगामा मचा रहा है। सूचना के बाद पंहुची पुलिस ने युवक को गिरफ्तार कर मेडिकल जांच कराने के बाद जेल भेज दिया।

दो बोलेरो से 743 लीटर शराब बरामद, तस्कर गिरफ्तार

गोपालगंज। जिले के कुचायकोट व भोरे थाने की पुलिस ने दो बोलेरो से करीब 743 लीटर विदेशी शराब को जप्त कर लिया। इसके साथ ही दो तस्करों को भी गिरफ्तार कर लिया। पुलिस गिरफ्तार तस्करों से पूछताछ करने में जुटी हुयी है। बताया जाता है कि कुचायकोट थानाध्यक्ष सह प्रशिक्षु डीएसपी साक्षी राय को सूचना मिली थी कि यूपी से एक बोलेरो से शराब की बड़ी खेप लायी जा रही है। जिसके आधार पर पुलिस व एलटीएफ की टीम ने सासामुसा के समीप एनएच 27 पर वाहनों की सघन जांच शुरू कर दी। जांच के दौरान एक बोलेरो से करीब 66 कार्टन 165 बोतल देशी शराब बंटी बबली को बरामद कर लिया। इसके साथ ही नगर थाने के कोटवा गांव के बीरबल कुमार और हरपुर बाजार के संतोष राउत को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस गिरफ्तार तस्करों से पूछताछ करने में जुट गयी है। वही दुसरी तरफ भोरे थाने की पुलिस ने सेमरा गांव के समीप वाहन जांच के दौरान एक बोलेरो से 116 लीटर देशी शराब बरामद कर लिया। जबकि धंधेबाज मौके का फायदा उठाकर भागने में सफल रहा। पुलिस फरार धंधेबाज की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही है।

थावे के नए सीओ ने दिया योगदान, बतायी प्राथमिकता

थावे। थावे के सीओ रजत कुमार वर्णवाल के तबादला के बाद थावे के नए सीओ धीरज कुमार पाण्डेय ने शुक्रवार को अपना योगदान दिया। सीओ के प्रभार में रहे बीडीओ मनीष कुमार ने उन्हें प्रभार सौंपा। नए सीओ ने कहा कि अंचल कार्यालय के अंतर्गत प्रमाण पत्र समेत जो भी कार्य आता है, उस कार्य को ससमय पूरा करना मेरी पहली प्राथमिकता होगी। भूमि विवाद के मामले को थाने में प्रत्येक शनिवार को जनता दरबार लगाकर निपटाया जाएगा। प्रखंड वासियों की सेवा में हमारे तरफ से कोई कोताही नहीं बरती जाएगी। जिनके साथ समस्या हो वे बिना किसी झिझक हमसे मिल कर अपनी बात रख सकते हैं। योगदान से पूर्व सीओ धीरज कुमार पाण्डेय ने प्रसिद्ध थावे दुर्गा मंदिर में पूजा अर्चना की। पूजा अर्चना के बाद वे सीधे अंचल कार्यालय पंहुचे जहां योगदान लेने के बाद सबसे पहले अंचल कार्यालय के कर्मियों से परिचय प्राप्त किया और अपने कार्य में जुट गए।

सदर अस्पताल में लगाया गया दिव्यांगता जांच शिविर

गोपालगंज। सदर अस्पताल परिसर में शुक्रवार को दिव्यांगों की जांच के लिए शिविर का अयोजन किया गया। आयोजित शिविर में जिले के विभिन्न प्रखंड व विभिन्न गांवों से आए सैकडों दिव्यांगों की जांच की गई। जांच के बाद अब इन दिव्यांगों को दस दिन के अंदर दिव्यांगता प्रमाण पत्र निर्गत किया जाएगा। सरकार दिव्यांग लोगों के लिए कई योजनाएं चला रही है। लेकिन इन योजनाओं का लाभ उन्हीं लोगों को मिलता है जिसके पास दिव्यांगता प्रमाण पत्र है। शुक्रवार को दिव्यांगता प्रमाण पत्र बनाने के लिए शिविर लगाकर दिव्यांग लोगों के स्वास्थ्य की जांच की गई। इस दौरान डॉ. अमर कुमार, डॉ. शशिरंजन प्रसाद, डॉ. एक के गुप्ता, डॉ. सुजीत कुमार, डॉ. रिंकु कुमारी सहित अन्य मौजूद थे। इसकी जानकारी देते हुए सीएस डॉ. विरेन्द्र कुमार ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग के निर्देश पर सदर अस्पताल में दिव्यांगता जांच शिविर का अयोजन किया गया था। शिविर में दिव्यांगों की जांच के बाद दस दिन के अंदर प्रमाण पत्र निर्गत कर दिया जागए। उन्होने लोगो से अपील करते हुए कहा कि दिव्यांगता जांच शिविर में ज्यादा से ज्यादा लोग पंहुचे और इसका लाभ उठाएं।

हवन एवं भंडारे के साथ संपन्न हुआ हनुमत प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ

भोरे प्रखंड की जगतौली पंचायत के सुमेरीछापर गांव में श्री नागेश्वर नाथ शिव मंदिर परिसर में आयोजित तीन दिवसीय हनुमत प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ का समापन शुक्रवार को हवन व भंडारा के साथ हो गया। शुक्रवार को यज्ञाचार्य पंडित राजेश उपाध्याय द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ-साथ विधि विधान से पूजा अर्चना के कर हवन का कार्य संपन्न कराया। इस क्रम में श्रद्धालुओं द्वारा विभिन्न देवी देवताओं के नाम हवन किया। हवन करने को लेकर ग्रामीणों के साथ-साथ आस पास के श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पडी। वहीं हवन से संपूर्ण वातावरण भक्तिमय बना रहा। तीन दिनों तक चलने वाला यज्ञ में पंडित अनिल उपाध्याय ने भी श्रद्धालुओं को विभिन्न सामाजिक सरोकार के साथ-साथ धार्मिक ग्रन्थ पर आधारित प्रवचन सुना कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

नवोदय विद्यालय में पहुंचे डीडीसी, समस्याओं से हुए अवगत

उचकागांव प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव प्रखंड के बलेसरा स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में पहुंचकर डीडीसी अभिषेक रंजन ने प्रखंड के विभिन्न पदाधिकारियों के साथ विद्यालय का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने प्राचार्य और उप प्राचार्य से मिलकर नवोदय विद्यालय की समस्या से अवगत होने के बाद उसके निराकरण के लिए स्थानीय पदाधिकारियों को दिशा निर्देश दिया।

गुरुवार की शाम नवोदय विद्यालय पहुंच कर डीडीसी अभिषेक रंजन ने विद्यालय का निरीक्षण किया। इस दौरान विद्यालय के प्राचार्य सुधाकर शुक्ला और उप प्राचार्य पुष्पराज सिंह ने खेल मैदान और मुख्य गेट के बगल में स्थित जमीन में बारिश के मौसम में होने वाले जलजमाव, भवन से निकलने वाले बारिश के पानी के संचयन का अभाव, विद्यालय के बच्चों के लिए पेयजल की समस्या, विद्यालय परिसर में पौधारोपण की कमी और विद्यालय के लो वोल्टेज की समस्या से अवगत कराया। जिसके बाद डीडीसी ने विद्यालय परिसर का निरीक्षण कर समस्याओं से अवगत होने के बाद विद्यालय के खेल मैदान और खाली जगहों पर होने वाले जलजमाव वाले स्थानों पर मनरेगा के पीओ को जल्द से जल्द मिट्टी भराई का कार्य कराने का निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने भवन से निकलने वाले बारिश के पानी के संचयन के लिए मनरेगा के माध्यम से सोख्ता का निर्माण वहीं खाली जगहों पर ज्यादा से ज्यादा पौधारोपण कराने का भी निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि पीएचडी विभाग के माध्यम से छात्रों के पेयजल की समस्या को भी जल्द से जल्द दूर किया जाएगा। उन्होंने लो वोल्टेज की समस्या को दूर करने के लिए बिजली विभाग के इंजीनियर से भी बात कर समस्या को जल्द से जल्द दूर करने का आश्वासन दिया। विद्यालय के प्राचार्य सुधाकर शुक्ला ने बताया कि कुछ दिन पूर्व ही बिजली विभाग के एग्जीक्यूटिव इंजीनियर के द्वारा दौरा किया गया था। इसके बावजूद भी अभी तक विद्यालय के लो वोल्टेज की समस्या दूर नहीं हो सकी है। मौके पर बीडीओ मनोज कुमार पंडित, मनरेगा के पीओ राजीव रंजन, बलेसरा पंचायत के मुखिया मोहम्मद असलम आदि उपस्थित थे।

शाबास: शराबी पति के रवैय्ये से परेशान पत्नी ने पति को भिजवाया जेल

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

बिहार में पूर्ण शराबबंदी कानून लागू हुए सात साल से ज्यादा हो गए लेकिन आज भी कुछ लोग अपनी आदतों से बाज नहीं आ रहे है और शराब का सेवन कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि इन्हें पुलिस का कोई खौफ नहीं है। गोपालगंज में एक शख्स शराब पीकर घर आया करता था। उसकी इस आदत से पत्नी परेशान हो गयी थी। पत्नी शराब नहीं पीने की बात जब भी कहती पति उसकी बातों को अनसुना कर दिया करता था। इसे लेकर आए दिन दोनों के बीच बकझक व मारपीट होती थी। पति के इस रवैय्ये से तंग आकर पत्नी ने पुलिस को इस बात की सूचना दे दी। उसने पुलिस को बताया कि उसका पति अपनी आदतों से बाज नहीं आ रहा है और जमीन बेचकर वह आए दिन शराब पीकर घर आता है। शराब पीने से मना करने पर मारपीट करता है जिसका बुरा असर बच्चों पर भी पड़ता है। फिर क्या था पत्नी की शिकायत पर पुलिस ब्रेथ एनालाइजर लेकर घर पर पहुंच गयी। जब पति की जांच की गयी तब शराब पीने की बात सामने आई जिसके बाद उत्पाद अधिनियम के तहत पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर हवालात में डाल दिया। मामला गोपालगंज के उचकागांव थाना क्षेत्र के नरकटिया बाजार का है। जहां पति के रवैय्ये से परेशान एक पत्नी को पुलिस से मदद मांगनी पड़ गयी। पत्नी ने खुद पति को गिरफ्तार कराया अब इसकी चर्चा इलाके में खूब हो रही है। यह मामला सामने आने के बाद वैसे लोग ज्यादा घबराए हुए हैं जो शराब पीकर अपने घरों पर हंगामा करते हैं और आए दिन पत्न ी से मारपीट करते हैं। गौरतलब है 2016 में बिहार में सर्वसम्मति से शराबबंदी कानून लागू किया था। अपराध और घरेलू हिंसा के मामले सामने आने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शराबबंदी कानून लागू करने का फैसला लिया था जो आज भी लागू है। इस कानून को कड़ाई से लागू कराने में पुलिस जुटी हुई है। आए दिन लोग पकड़े भी जा रहे हैं और शराब की खेप भी बरामद की जा रही है।

सीडीपीओ की विदाई समारोह में छलक पड़े आंसू

हथुआ प्रात : किरण संवाददाता

हथुआ बाल विकास परियोजना की सीडीपीओ रंजना कुमारी का पदोन्नति देकर स्थानांतरण किए जाने पर विदाई समारोह आयोजित किया गया। जिसमें सीडीपीओ के कार्य काल की सराहना की गई। सभी अधिकारियों व कर्मियों ने अपने हर दिल अजीज सीडीपीओ की भूरी भुरी प्रशंसा किया। साथ ही विभिन्न तरह के उपहार देकर सीडीपीओ को शुभकामनाएं दी गई।विदाई समारोह में पहुंचे हथुआ एसडीएम राकेश कुमार ने सीडीपीओ रंजना कुमारी के कार्यों का काफी तारीफ किया।

इन्होंने कहा कि रंजना ने अपने कार्यों के प्रति ईमानदारी, समर्पण व निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का पालन किया। इनके चेहरे पर कभी उदासी या बोझ नहीं दिखा। ऐसे लोग अपने जीवन में बहुत तरक्की करते है। वहीं बीडीओ राकेश कुमार सिंह ने कहा कि सीडीपीओ हर दिल अजीज है। किसी भी कार्य को निष्पादित करने की क्षमता रखने वाली रंजना परिवार की एक सदस्य के समान थी। पंचायत चुनाव में अपने कर्तव्यों का निष्ठा पूर्व निष्पादन कर हर कर्मी व अपने समकक्ष पदाधिकारियों का दिल जीत ली। लोगों का अभिवादन स्वीकार करते हुए सीडीपीओ ने कहा कि हथुआ व हथुआ के लोग हमेशा याद आते रहेंगे। यही वह पवित्र धरती है जहां से मुझे पदोन्नति मिली। हमारे साथ कार्य करने वाले सभी ने कुशलता के साथ कदम से कदम मिलाकर कार्य किया। जिसको मै भुला नहीं पाऊंगी। सीडीपीओ ने कोरोना काल का जिक्र करते हुए कहा कि मेरा जीवन तभी बच पाया जब में ऐसे कुशल नेतृत्व वाले लोगों के बीच रही। इसलिए हथुआ मुझे हमेशा याद आता रहेगा। कार्यक्रम में पर्यावरण मित्र डॉ सत्य प्रकाश में उपहार में पौधा देते हुए कहा कि योगदान के दिन भी एक पौधा लगाया जाता है तो यह सबसे अच्छी पहल होगी। इस मौके पर फुलवरिया सीडीपीओ पुष्प राज हिमांशु, भोरे सीडीपीओ विनीता कुमारी, कुचायकोट आशा किरण, थावे के सदानंद दास, महिला पर्वेक्षिका सीमा कुमारी, श्वेता कुमारी, मंजू रानी गुप्ता, कलावती कुमारी, सुप्रिया कुमारी, वंदना कुमारी, विजयीपुर से महिला पर्वेक्षिका रीना कुमारी, थावे किरण कुमारी, भोरे की रश्मि कुमारी, प्रधान लिपिक मनोज कुमार सिंह, अरमान मियां, कार्यपालक सहायक रविशंकर कुमार, सत्येन्द्र कुमार, नंदकिशोर पांडेय, प्रिंस उपाध्याय, पत्रकार सोमेश्वर तिवारी आदि थे।

डीएम ने जल जीवन हरियाली योजना को लेकर किया बैठक, अधिकारियों का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। समाहरणालय सभागार में जल जीवन हरियाली योजना अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2023-24 में वृक्षारोपण की तैयारी की समीक्षा की गयी। जिला में विभिन्न विभागों द्वारा कुल 3,49,000 वृक्षारोपण कराया जाना है, जिसमें मनरेगा योजना से 1,28,000, जीविका के द्वारा 75,000 पौधे लगाए जाने है तथा शेष अन्य विभागों, गैर सरकारी संस्थानों, कृषकों आदि द्वारा लगाया जाएगा। वन पर्यावरण एवं जलवायु परिर्वतन विभाग एंव ग्रामीण विकास विभाग द्वारा वन प्रमण्डल औरंगाबाद को मनरेगा योजना का कार्यान्वयन एजेंसी के रूपमें चयन किया गया है, जिसके तहत जिला में निजी लाभुकों की भूमि पर 50,000 पौधे लगाए जाएंगे।जिला पदाधिकारी द्वारा कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद् को निदेशित किया गया कि जिला के शहरी क्षेत्रों में पौधे लगाने हेतु स्थलों को चिन्हित कर वृक्षारोपण की कार्य योजना तैयार किया जाए। जिला कृषि पदाधिकारी को निदेशित किया गया कि कृषि वानिकी योजना एवं बागवानी मिशन का प्रचार-प्रसार किया जाय तथा अधिक-से-अधिक कृषकों को उक्त योजना से जोड़ने हेतु प्रेरित किया जाय। साथ ही जीविका अभियंत्रण विभाग, शिक्षा विभाग को निदेशित किया गया कि अपने-अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक वृक्षारोपण का कार्य कराएँ। जिससे लक्ष्य हासिल किया जा सके। जिला पदाधिकारी द्वारा यह भी बताया गया कि जिले में अत्याधिक गर्मी की एक वजह पेड़ों की कमी है जिसे वृक्षारोपण से कम किया जा सकता है। जिला पदाधिकारी द्वारा निदेशित किया गया कि सभी विभाग आपस में समन्वय स्थापित कर इस योजना को सफल बनाने का प्रयास करें। जिला पदाधिकारी यह भी निदेश दिया गया कि पूरे जिले में दिनांक 10 जुलाई को वन महोत्सव मनाया जाएगा, जिसमें सभी को अपना भागीदारी सुनिश्चित करना अनिवार्य है एवं इसके लिए उप विकास आयुक्त को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया गया। बैठक में वन प्रमण्डल पदाधिकारी, औरंगाबाद - सह - अरवल, अपर समाहर्ता, उप विकास आयुक्त, अनुमंडल पदाधिकारी विशेष कार्य पदाधिकारी, के साथ जिलास्तरीय पदाधिकारी सभी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सभी अंचलाधिकारी एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहें।

उचकागांव में सेवानिवृत्त दो सेविकाओं को समारोह पूर्वक दी गई विदाई

प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव। उचकागांव प्रखंड मुख्यालय स्थित बाल विकास परियोजना कार्यालय में प्रखंड के सेवानिवृत्त दो सेविकाओं को विदाई देने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें प्रखंड के सेवानिवृत्त दो सेविकाओं कोसेविका संघ और कर्मियों ने समारोह पूर्वक विदाई दी। इस दौरान प्रखंड के परसौनी खास पंचायत के चकयोगा गांव के केंद्र संख्या छह की सेविका चंपा देवी और दहीभाता पंचायत के नरकटिया गांव के केंद्र संख्या 25 की सेविका शांति देवी के सेवानिवृत्त होने पर सेविका संघ ने फूल माला, अंगवस्त्र एवं कई उपहार देकर सम्मानित किया। इस दौरान कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीडीपीओ सदानंद दास ने कहा कि सरकारी नौकरी में पदस्थापन, स्थानांतरण और सेवानिवृत्ति नौकरी का ही एक प्रक्रिया है। सरकारी नौकरी में आने वाले सभी लोगों को इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। दोनों सेवानिवृत्त सेविकाओं ने पोषक क्षेत्र के बच्चों को कुपोषण से मुक्ति दिलाने के लिए अपने जीवन के 40 वर्ष पूरी इमानदारी के साथ दिया है। जिसके लिए इन्हें सदा याद रखा जाएगा। मौके पर लेखा सहायक राम नारायण राम, महिला पर्यवेक्षिका तबस्सुम नाहिद, रंजीता कुमारी, संगीता कुमारी, कुमारी पल्लवी, सेविका रीना कुमारी, कुमारी अंजली, जया कुमारी, इंदिरा देवी सहित काफी संख्या में सेविका एवं अन्य कर्मी मौके पर उपस्थित थे।

सेमरा पंचायत के मुखिया पर ईंट पत्थर से हमला, वाहन क्षतिग्रस्त

थावे प्रात : किरण संवाददाता

जिले के थावे प्रखंड के सेमरा पंचायत के मुखिया पर ईंट पत्थर से जानलेवा हमला किए जाने का मामला सामने आया है। इस हमले में मुखिया बाल-बाल बच गए लेकिन उनकी कार क्षतिग्रस्त हो गयी। इस मामले को लेकर मुखिया सगीर आलम ने कुचायकोट थाने के सिरिसिया वृति टोला गांव के कृष्णा पंडित सहित दो अज्ञात लोगो पर प्राथमिकी दर्ज करायी है। पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले की छानबीन करने में जुट गयी है। बताया जाता है कि सेमरा पंचायत के मुखिया सगीर आलम अपनी कार से गोपालगंज से अपने गांव जा रहे थे। इसी दौरान चैरांव ओवर ब्रिज के समीप एक बाइक पर सवार तीन लोगो ने ईंट पत्थर से हमला कर दिया।

हमले में मुखिया को हल्की चोटे आयी है जबकि कार क्षतिग्रस्त हो गयी। आसपास के लोग जबतक जुटते तब तक हमलावर फरार हो चुके थे। इस संबध में पुलिस का कहना है कि मामले की जांच पडताल की जा रही है। इस मामले में दोषियों पर कड़ी कारवाई की जाएगी।

उत्पाद पुलिस चेक पोस्ट पर अंग्रेजी शराब लदी एक ऑटो को किया जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। मांझी में यूपी- बिहार को जोड़ने वाले जयप्रभा सेतु के मांझी चेकपोस्ट पर मद्य निषेध विभाग ने स्कैनर मशीन से जांच कर अंग्रेजी शराब लदी एक ऑटो को जप्त कर लिया। वहीं ऑटो चालक सह तस्कर को भी गिरफ्तार कर लिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार जयप्रभा सेतु के मांझी चेकपोस्ट पर वाहनों की जांच कर रहे मद्य निषेध विभाग को गुप्त सूचना मिली कि यूपी से छपरा जा रही एक ऑटो में शराब छिपाकर ले जाया जा रहा है। जिसके बाद मद्य निषेध विभाग ने स्थानीय पुलिस की मदद से अन्य वाहनों की जांच करने के साथ हीं यूपी से मांझी की ओर से आने ऑटो पर नजर रखनी शुरू कर दी। इसी बीच यूपी की ओर से पहुंची एक ऑटो को रुकवाया गया तो चालक थोड़ा घबड़ा गया। उसके बाद जब स्कैनर मशीन से जांच की गई तो ऑटो की छत पर बने गुप्त तहखाने में छिपा कर रखे गई छह पेटी 8 पीएम अंग्रेजी शराब बरामद किया गया। उसके बाद पुलिस ने तुरंत शराब समेत ऑटो को जप्त करने के साथ हीं चालक को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार ऑटो चालक आरा का रहने वाला मुन्ना प्रसाद बताया जाता है। मद्य निषेध विभाग व मांझी थाना पुलिस के द्वारा कड़ाई से पूछताछ करने पर उसने बताया कि यूपी के बैरिया से शराब की खरीदारी की थी। जिसकी डिलीवरी छपरा में देनी थी। मद्य निषेध विभाग के एएसआई सियाराम साह ने बताया कि गिरफ्तार मुन्ना प्रसाद से पूछताछ के बाद मद्य निषेध विभाग अब धंधेबाज की गिरफ्तारी के लिए छानबीन में जुटी है।

अल्ट्राटेक सीमेंट की ओर से यशस्वी मुखिया का चयन कर किया गया सामान: मनोज कुमार

प्रात : किरण संवाददाता

वंशी (अरवल) सोनभद्र वंशी सूर्यपुर प्रखंड अंतर्गत अनुआँ पंचायत के मुखिया सह बिहार प्रदेश मुखिया संघ के उपाध्यक्ष मनोज कुमार यादव को हिंदुस्तान एवं अल्ट्राटेक सीमेंट के संयुक्त के तत्वावधान में गंगापुर गाँव उनके आवास पर यशस्वी मुखिया कार्यक्रम का आयोजन किया गया।जिसमें अनुआँ पंचायत में चौमुखी विकास करने और विकास के दम पर अपने पंचायत को नई पहचान देने और अनुआँ पंचायत में बेहतर कार्य करने के लिए यशस्वी मुखिया को सम्मानित किया गया।हालांकि मुखिया मनोज कुमार यादव ने इस सम्मान का श्रेय पूरे अनुआँ पंचायत के सभी अभिभावकों एवं सम्मानित जनता को दिया और कहा कि इसी तरह चौमुखी विकास से अनुआँ पंचायत को आदर्श पंचायत बनाने का प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान और अल्ट्राटेक सीमेंट के द्वारा जिस तरह मुझे पंचायत में बेहतर कार्य करने को लेकर सम्मान दिया गया है उन्हें हम तहे दिल से धन्यवाद देते हैं इस तरह सम्मानित होने पर पंचायत में और बेहतर कार्य करने का बल मिला है। इस मौके पर सुबोध यादव रविन्द्र कुमार नीरज शर्मा सतेंद्र शर्मा समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

प्रमंडल के नवपदस्थापित सीएचओ के लिए परिवार नियोजन से संबंधित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

लाभुकों को परिवार नियोजन की गुणवत्तापूर्ण सेवा दिए जाने को लेकर सीएचओ को किया गया प्रशिक्षित: अपर निदेशक

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया। परिवार नियोजन एक ऐसी योजना है, जिसमें परिवार की आय, माता के स्वास्थ्य, बच्चों के समुचित पालन पोषण तथा शिक्षा को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त समय पर और एक आदर्श संख्या में शिशुओं को जन्म दिया जाए। जिससे बाल विवाह रुके व दो बच्चों के जन्मों के बीच अंतर बढ़ाने को बढ़ावा देने के साथ ही परिवार नियोजन सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करना होता है। उक्त बातें स्वास्थ्य विभाग के क्षेत्रीय अपर निदेशक डॉ विजय कुमार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अंतिम दिन उपस्थित सभी सीएचओ को संबोधित करते हुए कही। इस अवसर पर सेंटर फॉर एडवोकेसी रिसर्च (सिफार) के डीपीसी धर्मेंद्र रस्तोगी, आरपीएमयू के कर्मी श्याम कुमार एवं शाहनवाज आलम उपस्थित थे। राज्य स्वास्थ्य समिति के दिशा-निर्देश के आलोक में वर्ष 2023/24 के दौरान परिवार नियोजन को लेकर पूर्णिया, कटिहार, अररिया और किशनगंज जिले में नवपदस्थापित सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ) को लाभुकों को परिवार नियोजन की गुणवत्तापूर्ण सेवा दिए जाने को लेकर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें पूर्णिया सहित अन्य सभी जिलों के 30/30 सीएचओ को दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान परिवार नियोजन से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षक के रूप में जपाइगो के क्षेत्रीय कार्यक्रम अधिकारी डॉ गंगेश गुंजन, केयर इंडिया की ओर से डीपीएचओ सोमेन अधिकारी एवं सनत गुहा रहे। इसके साथ ही क्षेत्रीय स्वास्थ्य अपर निदेशक डॉ विजय कुमार, क्षेत्रीय कार्यक्रम प्रबंधक कैशर इकबाल एवं क्षेत्रीय आशा समन्वयक प्रियंका कुमारी के दिशा-निर्देश में चार पाली में प्रशिक्षण आयोजित हुआ।

क्षेत्रीय कार्यक्रम प्रबंधक कैसर इकबाल ने कहा कि परिवार नियोजन अपनाने में मुख्य रूप से कंडोम, गर्भनिरोधक गोली एवं अंतर्गर्भाशयी गर्भनिरोधक उपकरण (आईयूडी) को आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि इस तरह की प्रक्रिया में यौन संबंध से होने वाले रोग से भी अपने आपको बचाया जा सकता है। वहीं गर्भनिरोधक गोली खाने से सबसे बड़ा फायदा यह है कि गर्भवती ना होना महिला के हाथ में होता है। आप बिना किसी परेशानी के यह गोली का सेवन आसानी से 1 से 2 साल तक ले सकती हैं। वहीं अंतर्गर्भाशयी गर्भनिरोधक उपकरण (आईयूडी) यह एक लंबे अरसे तक चलने वाला तरीका है। यह बहुत ही आसान और छोटी सी प्रक्रिया होती है। प्रतिदिन गोली खाने या कंडोम के प्रयोग से छुटकारा पाने से सबसे सरल व आसान तरीका (आईयूडी) लगाना होता है।

आप जब चाहें इसको निकलवा सकती हैं। यह तीनों तरीके बहुत ही आसान, सस्ते और आसानी से मिलने वाले हैं। उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह सिर्फ. तब तक ही काम करता है जब तक आप चाहें। अगर आप बच्चा चाहती हैं, तो इन्हे रोक कर आराम से गर्भवती हो सकती। आगामी 11 जुलाई से होने वाले परिवार मिशन पखवाड़ा में बढ़ चढ़ कर कार्य करने के लिए कहा गया है। क्षेत्रीय आशा समन्वयक प्रियंका कुमारी ने बताया कि परिवार नियोजन को लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में आशा कार्यकताओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। इनलोगों की पहुंच घर के बाहर और अंदर तक होती है। जिस कारण डोर टू डोर भ्रमण कर जानकारी लेने में महती भूमिका निभाती हैं। भारत सरकार ने टॉल फ्री नंबर (1800116555) एवं बिहार सरकार ने टॉल फ्री नंबर (104) जारी किया है ताकि देश एवं राज्य की जनता परिवार नियोजन से संबंधित उचित सलाह या परामर्श आसानी ले सके। गर्भ निरोधक सुई- अंतरा के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए टॉल फ्री नंबर (1800-120-1236) जारी किया गया है।

बिहार अब जंगलराज नहीं जनताराज चाहती है: भास्कर कुमार

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष भास्कर कुमार ने प्रेस रिलीज जारी कर कहा की बिहार अब घूसखोरी और भ्रष्टाचार नहीं भाजपा की सरकार चाहती है कुशासन और जंगलराज के दिन बिहार में लद चुके हैं बिहार की जनता ने जंगलराज के मॉडल को नकार दिया था इसका सबूत 2019 के लोकसभा और 2020 के विधानसभा चुनाव में जनता ने अपना समर्थन भाजपा को देकर साबित किया था मगर जनता के जनादेश को अपमानित कर नीतीश कुमार ने जिस जंगलराज को पुनः स्थापित करने का दुस्साहस किया है जनता उसका जवाब आगामी लोकसभा चुनाव 2024 में कमल खिला कर देगी बिहार के युवाओं को भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाले तेजस्वी जी पहली कैबिनेट में नौकरी देने की बात करने वालेआप ही बताइए कब मिलेगी दस लाख सरकारी नौकरियां सत्ता के खाने लगे मलाई तो भूल गए युवाओं का भलाई चाचा भतीजा मिलकर बिहार के भविष्य को गर्त में ले जाने का जो काम कर रहे हैं उसे भली-भांति बिहार के जनमानस समझने का काम कर रही हैं। शिक्षक अभ्यार्थी एवं नियोजित शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार एवम मारपीट करने वाली सरकार के खिलाफ 13 जुलाई को पटना विधानसभा घेराव करने का काम भारतीय जनता पार्टी करेगी भारतीय जनता पार्टी नियोजित शिक्षक एवं शिक्षक अभ्यर्थी का आवाज बन कर न्याय दिलाने का काम करेंगी।

मेडिकल की पढ़ाई सवंरेगी युवाओं की भविष्य, छपरा में संजीवनी इंस्टिट्यूट ऑफ पैरामेडिकल संस्थान का उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। शहर के श्यामचाक स्थित संजीवनी इंस्टिट्यूट आफ पैरामेडिकल का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन शहर के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ अनिल कुमार और स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ संजू प्रसाद व डॉ विशाल कुमार ने दीप प्रज्वलित कर संयुक्त रूप से किया। इस बारे में जानकारी देते हुए डॉ अनिल कुमार ने बताया कि बिहार सरकार स्वास्थ्य विभाग एवं भारत सरकार श्रम रोजगार मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। उन्होंने बताया कि एडमिशन शरू कर दिया गया है। इसमें डीएमएलटी, फर्स्ट ऐड, फ्लेबॉटोमिस्ट, बीसीएन अस्सिटेंट, मेडिकल ड्रेसर, हेल्थ सेनिटैरी, होम हेल्थ एंड, जनरल ड्यूटी असिस्टेंट, इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन, डिप्लोमा इन योगा नेचुरोपैथी, ऑपरेशन थिएटर असिस्टेंट, का कोर्स शुरू किया गया है व जो भी स्टूडेंट जो कोर्स करेगा उसको हॉस्पिटल में ट्रेनिग दिया जाएगा। थ्योरी और प्रैक्टिकल एक साथ चलेगा। संजीवनी इंस्टिट्यूट आफ पैरामेडिकल में जो टीचर होंगे ओ डाक्टर होंगे। इस मौके पर डा संजू प्रसाद ने बताया कि जो छपरा शहर या ग्रामीण क्षेत्र के छात्र है जिनको मेडिकल लाइन में रुचि रखते है और शहर में जाकर नही पढ़ पाते है उन लोगों को संजीवनी इंस्टिट्यूट ऑफ पैरामेडिकल संस्थान से सुविधा मिलेगी। छपरा शहर में ही रह कर अब मेडिकल की पढ़ाई कर सकेगे। इस मौके पर डा अनिल कुमार, डा विशाल कुमार, डा संजू प्रसाद, धनंजय कुमार, चिंटू कुमार, धर्मेंद्र यादव, रानी कुमारी, प्रतिमा कुमारी, रणजीत भगत, व अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

सम्पादकीय

हाय रे लाल टमाटर !

घर की काम वाली बाई ने बताया कि बड़ी मंडी में टमाटर बीस रुपए किलो बिक रहा है तो मुंह में पानी आ गया, क्योंकि पिछले पंद्रह दिनों से सलाद में टमाटर गायब था। मैंने बच्चे से कहा -यार टिंकू, गाड़ी निकाल, मंडी से टमाटर लाएंगे। वह बोला -पापा, टमाटर में गाड़ी क्या करेगी? अपनी स्कूटी ले जाओ और ले आओ टमाटर। कोई गाड़ी भरकर टमाटर थोड़े ही लाना है। एक थैले में आ जाएगा टमाटर। मैं बोला -ह्यतू समझता नहीं, अस्सी रुपए किलो का टमाटर है। मंडी में भीड़-भाड़ रहती है। थैला हाथ से छूट गया या गाय ने सींग मार दिया तो टमाटर खरीदना, नहीं खरीदना बराबर हो जाएगा। मन मारकर वह तैयार हो गया। मंडी पहुंचे तो एक सब्जी विक्रेता के पास सड़ा-गला सा टमाटरों का ढेर देखा तो, वही टमाटर सलादी और रसदार लगा। मैंने भाव पूछा तो विक्रेता ने बताया कि टमाटर पचास रुपए लगा देंगे। मैंने मन में सोचा, -चलो तीस रुपए किलो का फायदा है। सब्जी और सलाद के लिए यह बुरा नहीं है। बच्चा मेरी बात समझ गया, बोला -क्या ले रहे हैं पापा। ये सड़े हुए टमाटर हैं। बदबू मार रहे हैं, आगे चलो, ताजा टमाटर लेंगे। मैंने कहा भी कि यार पचास में बुरे नहीं हैं। वह नहीं माना, हम आगे बढ़े तो टमाटर गायब था। पचासों दुकानों पर उसे तलाशा, लेकिन वह नहीं मिला। मैं बोला -ह्यटिंकू, मैंने कहा नहीं था, वहीं से ले लो। वही ठीक है। अब पता नहीं वह भी मिलेगा या नहीं? थक-हार कर हम दोनों फिर उसी दुकान पर आ गए। टमाटरों को जस का तस देखकर मन को तसल्ली हुई। मैंने कहा -भाई पांच किलो तोल दो। बच्चा बोला -पांच दिन में इससे घर की हालत दुर्गन्ध के कारण बहुत बुरी होगी।

क्योंकि यह पहले ही सड़ा हुआ है। चार-पांच दिनों में तो यह और सड़ जाएगा। मैंने कहा -ह्यअस्सी का पचास में मिल रहा है, गाड़ी लेकर आए हैं। पैट्रोल का खर्चा पांच किलो में ही निकलेगा। नहीं होने से तो काना मामा ही भला होता है। यह कहकर मैंने पांच किलो तुलवा कर थैले में भरा और सावधानी से गाड़ी में धर दिया। सीना गर्व से फूला जा रहा था कि आज तो सलाद में टमाटर होगा। सामान्य आदमी के लिए टमाटर सेब की जगह होता है। टमाटर का थैला घर में लाकर रखा तो पत्नी ने नाक बंद कर ली और बोली-क्या लाए हो, जिससे दिमाग तक सड़ गया है। बच्चे ने ही जवाब दिया-सड़ा हुआ टमाटर। पत्नी ने थैला खोला तो दुर्गन्ध और फैली और वह बोली-इससे तत्काल बाहर कूड़ेदान में डालो, वरना सारा घर बीमार हो जाएगा। मैंने कहा भी -ह्यभागवान यह क्या कर रही हो? पचास रुपए किलो का है। पूरी मंडी छान मारी, एक दुकानदार के यहां ही था। वह ले आया। अब इसे सब्जी में काम ले लो। पत्नी गुस्से में भुनभुनायी -आप का तो दिमाग सड़ गया है। नाक में घ्राण शक्ति रही नहीं और ले आए यह सड़ा-गला। यह कहकर उसने पूरा थैला बाहर कूड़ेदान में उंडेल दिया और राहत की सांस ली और मैंने लम्बी सांस लेकर यही कहा -हाय रे मेरे लाल टमाटर। टिंकू लगातार हंसे जा रहा था। मैंने कहा -अब देखता हूं क्या खाओगे सलाद में? उसने कहा -हम बिना सलाद के खा लेंगे, लेकिन उफ! आपके इस सड़े टमाटर से तो बचे। मैं गुस्से में ऑफिस जाने की तैयारी में जुट गया, बाहर से टमाटरों की गंध अभी भी मेरे नथुनों को राहत दे रही थी।

विपक्षी एकता के प्रयासों को धक्का

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

पटना में लिखी गई विपक्षी एकता की इबारत की अभी स्याही भी सूखी नहीं थी कि एकता के केन्द्र में योजना पूर्वक बिठाए गए, राजनीति के चतुर खिलाड़ी 83 वर्षीय शरद पवार के घर में स्याही की दवात ही टूट गई और सारी स्याही इबारत के पन्नों पर बिखर गई। अब पटना की इबारत साफ-साफ पढ़ी नहीं जा रही। शरद पवार ने कई दशक पहले राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, जिसे अंग्रेजी में एनसीपी कहा गया, बनाई थी। तब उनका मानना था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अब राष्ट्रीय नहीं रह गई है क्योंकि उसने अपनी रस्सी सोनिया गान्धी के हाथों में दे दी है जो विदेशी मूल की हैं। कांग्रेस राष्ट्रीय रहे, इसलिए उन्होंने अपनी राष्ट्रवादी कांग्रेस बना ली। देश में तो नहीं, लेकिन अपने प्रदेश की राजनीति में उन्होंने जरूर अपनी पार्टी के लिए जगह बना ली और सोनिया गान्धी कांग्रेस को कुछ हलकों तक सीमित कर दिया। लेकिन पिछले विधानसभा चुनावों में उन्होंने महाराष्ट्र में सत्ता के लिए सोनिया जी की कांग्रेस के साथ मिल कर महाराष्ट्र विकास अगाड़ी बना ली और उसमें शिव सेना को भी शामिल कर लिया। लेकिन बढ़ती उम्र के कारण वे अपनी पार्टी अपने परिवार वालों के हवाले कर शायद सुख की नींद लेना चाहते थे। सुख की नींद का मतलब यह नहीं कि राजनीति छोडे की योजना बना रहे थे। बस इतना ही कि महाराष्ट्र में पार्टी अपने उत्तराधिकारी को सौंप कर स्वयं दिल्ली की राजनीति में हाथ आजमा लें। छोटी-बड़ी विपक्षी पार्टियां यदि मिल जाएं तो हो सकता है भारतीय जनता पार्टी को बहुमत न मिले और जोड़-तोड़ की राजनीति में शरद पवार के हाथ भी कोई मोटी चीज लग जाए। इसलिए वह बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश बाबू को आगे करके अपने मोहरे चलने लगे।

जहां तक उनकी पार्टी एनसीपी का सवाल था तो परिवार में उसके दो सशक्त उत्तराधिकारी थे। एक उनके भतीजे अजीत पवार और दूसरी उनकी पुत्री सुप्रिया सुले। कहा जाता है कि पार्टी को बनाने में शरद पवार के साथ उनके इस भतीजे ने ही लम्बे अरसे तक भागदौड़ की थी। लेकिन जब विधिवत उत्तराधिकारी नियुक्त करने की बात आई तो शरद पवार ने भतीजे को नहीं बल्कि पुत्री को ही अधिमान दिया। परिवार की राजनीतिक धन-सम्पत्ति परिवार में बांट कर शरद पवार तो पटना वाला खेल खेलने में मशगूल हो गए और इधर उनके भतीजे के धैर्य का अन्त हो गया। 288 सदस्यों वाली महाराष्ट्र विधानसभा में शरद पवार की पार्टी के 53 सदस्य हैं। अजीत पवार उनमें से चालीस सदस्य ले उड़े और भाजपा के साथ मिल ही नहीं गए, बल्कि अपने आठ सहयोगियों सहित मंत्री भी बन गए। उसके बाद शरद पवार का साथ छोडे वालों की रुक-रुक कर खबरें आने लगीं। चाचा-भतीजा ने एक-दूसरे को पार्टी से निकाल देने का कार्यक्रम भी सफलतापूर्वक निपटा दिया। लेकिन दुर्भाग्य से अब शरद पवार के हिस्से उनकी अपनी ही पार्टी में, मेला उजड़ जाने के बाद इधर उधर बिखरी हुई कुछ पत्तलें ही बची हैं। अब जब वे विपक्षी पार्टियों की बेंगलूर में होने वाली अगली बैठक में जाएंगे तो उनकी इन पत्तलों का वहां कौन खरीददार मिलेगा? मिल भी गया तो औने पौने दाम में ही खरीदेगा। जो शरद पवार कभी सोनिया गान्धी और राहुल गान्धी को हौसला देते थे कि हम आपके साथ हैं, उनको राहुल गान्धी और सोनिया गान्धी का फोन आया कि उम्र की इस चौथ में धैर्य मत छोडा, हम आपके साथ हैं। उस सोनिया गान्धी का जो अभी भी हैं तो विदेशी मूल की हीं। शरद पवार ने ये दिन भी देखने थे? यदि पटना-पटना खेला न खेलते तो शायद कोई उनकी ओर ध्यान ही न देता और वे चुपचाप अपनी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की साफ सफाई करते रहते। लेकिन जब कोई मधुमक्खियों के छत्ते के नाटक में स्वयं के लिए ह्यरानी मक्खीह्न की भूमिका तय करेगा तो उसे इसके खतरों का भी पता होना चाहिए था। यह समझ से परे है कि इतने समझदार शरद पवार इतनी राजनीतिक नासमझी कैसे कर बैठे? विपक्षी पार्टियों के लिए यह प्रथम ग्रासे मक्षिका वाला प्रसंग है। बाकी पार्टियों में भी हो हल्ला होने लगा है। सबसे ज्यादा हलचल तो नीतीश बाबू की जेडीयू में है। पटना वाला खेला में नीतीश बाबू ही लालू यादव जी के बेटे तेजस्वी यादव के साथ मिल कर उत्साह से लबरेज थे। बिहार विधानसभा में कुल 243 सीटें हैं। इनमें से भाजपा और लालू प्रसाद यादव के राष्ट्रीय जनता दल के पास 80-80 विधायक हैं। नीतीश कुमार की जेडीयू के पास 45 और सोनिया कांग्रेस के पास 19 विधायक हैं। इसे नीतीश कुमार की राजनीतिक दक्षता ही कहना पड़ेगा कि वे 45 के बावजूद मुख्यमंत्री बने हुए हैं। शायद इसी के कारण नीतीश बाबू को लगा होगा कि राजनीति तो उनकी हथेली पर नाचती है। इसी के कारण उन्होंने शरद पवार के साथ मिल कर एक ऊंची उड़ान भरने की योजना बना ली होगी। शरद पवार के राजनीतिक पंख तो अब आकर उनके भतीजे ने काटे, लेकिन नीतीश कुमार तो कटे पंखों के साथ ही सुपरमैन की वर्दी पहन कर लम्बी उड़ान की तैयारियां कर रहे थे। लेकिन उनके छत्ते की मधुमक्खियों को लगने लगा कि हमारी यह रानी मक्खी खुद भी गिरेगी और हमें भी कहीं का नहीं छोड़ेगी। लालू की सन्तानें छत्ते का शहद निकालने के लिए बर्तन लेकर घूम रहे हैं। अब खबरें आ रही हैं कि नीतीश बाबू के छत्ते में भी हलचल मची हुई है। वैसे तो विपक्ष को भयभीत कर देने वाली खबरें कर्नाटक से भी आनी शुरू हो गई हैं। फिलहाल पश्चिमी बंगाल में स्थानीय निकाय चुनावों के परिणाम की प्रतीक्षा करनी होगी। ममता की रणनीति तभी पता चलेगी। इस तरह विपक्ष एकजुट होने के प्रयास जरूर करता है, लेकिन साथ ही वह टूटता जाता है। विपक्ष में एकता नजर नहीं आ रही है। इसका लाभ भाजपा तथा मोदी को ही मिलेगा। फिलहाल भाजपा लाभ की स्थिति में लगती है, हालांकि पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव के परिणाम आने के बाद विभिन्न दलों की प्रतिक्रिया देखने योग्य होगी। कुछ इंतजार करना होगा।

एकरूपता या लैंगिक न्याय : यूसीसी का ड्राफ्ट कहाँ है

चुनाव-दर-चुनाव, यूसीसी भाजपा के घोषणापत्रों का हिस्सा रही है. सन 1996 के घोषणापत्र में यूसीसी को नारी शक्ति खंड में शामिल किया गया था. तब से लेकर आज तक भाजपा यूसीसी का मसविदा तैयार नहीं कर सकी है. हमें आज तक यह पता नहीं है कि यूसीसी के लागू होने के बाद, तलाक, गुजारा भत्ता, संपत्ति के उत्तराधिकार और बच्चों के संरक्षण के सम्बन्ध में क्या नियम और कानून होंगे. यूसीसी फिर चर्चा में है और अब तक आल मुस्लिम लॉ बोर्ड और कुछ मुस्लिम संगठन इसके खिलाफ आवाज उठा चुके हैं. इस बार, आदिवासियों और सिक्खों के संगठन भी इसका विरोध कर रहे हैं.केंद्रीय सरना समिति के एक पदाधिकारी संतोष तिर्की ने कहा, वह (यूसीसी) विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और भूमि के हस्तांतरण के सम्बन्ध में हमारे प्रथागत कानूनों पर अतिक्रमण करेगी..... एक अन्य आदिवासी समूह के नेता, झारखण्ड के रतन तिर्की ने कहा, अपना विरोध दर्ज करने के लिए हम विधि आयोग को ईमेल भेजेंगे. हम जमीनी स्तर पर भी विरोध करेंगे. हम अपनी रणनीति तैयार करने के लिए बैठकें कर रहे हैं. यूसीसी से संविधान की पांचवीं और छठवीं अनुसूची के प्रावधान कमजोर हो जाएंगे.

राम पुनियानी
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

विधि आयोग की अधिसूचना और प्रधानमंत्री मोदी की उसे लागू करने की जबरदस्त वकालत के चलते सामान नागरिक संहिता (यूसीसी) एक बार फिर चर्चा में है. चुनाव-दर-चुनाव, यूसीसी भाजपा के घोषणापत्रों का हिस्सा रही है. सन 1996 के घोषणापत्र में यूसीसी को नारी शक्ति खंड में शामिल किया गया था. तब से लेकर आज तक भाजपा यूसीसी का मसविदा तैयार नहीं कर सकी है. हमें आज तक यह पता नहीं है कि यूसीसी के लागू होने के बाद, तलाक, गुजारा भत्ता, संपत्ति के उत्तराधिकार और बच्चों के संरक्षण के सम्बन्ध में क्या नियम और कानून होंगे. यूसीसी फिर चर्चा में है और अब तक आल मुस्लिम लॉ बोर्ड और कुछ मुस्लिम संगठन इसके खिलाफ आवाज उठा चुके हैं. इस बार, आदिवासियों और सिक्खों के संगठन भी इसका विरोध कर रहे हैं.

केंद्रीय सरना समिति के एक पदाधिकारी संतोष तिर्की ने कहा, वह (यूसीसी) विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और भूमि के हस्तांतरण के सम्बन्ध में हमारे प्रथागत कानूनों पर अतिक्रमण करेगी..... एक अन्य आदिवासी समूह के नेता, झारखण्ड के रतन तिर्की ने कहा, ह्लअपना विरोध दर्ज करने के लिए हम विधि आयोग को ईमेल भेजेंगे. हम जमीनी स्तर पर भी विरोध करेंगे. हम अपनी रणनीति तैयार करने के लिए बैठकें कर रहे हैं. यूसीसी से संविधान की पांचवीं और छठवीं अनुसूची के प्रावधान कमजोर हो जाएंगे.

राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक गठबंधन (एनडीए) के एक घटक दल और उत्तरपूर्व के एक भाजपा नेता ने कहा कि वे इसका विरोध करेंगे. भाजपा के सुशील मोदी, जो संसद की विधि एवं न्याय स्थायी समिति के अध्यक्ष हैं, ने उत्तरपूर्वी राज्यों सहित आदिवासी इलाकों में यूसीसी लागू करने की व्यवहार्यता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है (इंडियन एक्सप्रेस. 4 जुलाई 2023). शिरोमणि अकाली दल (एसएडी) ने भी यूसीसी का विरोध किया है. अकाली नेता गुरजीत सिंह तलवंडी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (एसजीपीसी) से कहा कि वह यूसीसी को सिरे से खारिज न करे बल्कि विधि आयोग के साथ परामर्श करे. इंडियन मुस्लिम्स फॉर सेक्युलर डेमोक्रेसी जैसे प्रगतिशील मुस्लिम संगठनों ने ऐसे व्यक्तिगत कानून (पर्सनल लॉ) बनाने की मांग की है, जिनका किसी धर्म से सरोकार नहीं हो.

व्यक्तिगत और पारिवारिक कानून, दीवानी और फौजदारी कानूनों से अलग होते हैं. दीवानी और फौजदारी कानून सभी धर्मों के लोगों पर समान रूप से लागू होते हैं. व्यक्तिगत कानूनों को ब्रिटिश सरकार ने सम्बंधित धर्मों के पुरोहित वर्गों के परामर्श से तैयार किया था. हिन्दुओं के व्यक्तिगत कानूनों में बहुत विभिन्नता थी. मुख्यतः मिताक्षरा और दायभाग कानून लागू थे. देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु, हिन्दू पर्सनल लॉ के लैंगिक दृष्टि से अन्यायपूर्ण होने से चिंतित थे और इसलिए उन्होंने अम्बेडकर से हिन्दू कोड में सुधार प्रस्तावित करने के लिए कहा था. उस समय मुस्लिम पर्सनल लॉ में सुधार की बात सरकार की ओर से इसलिए नहीं की गयी क्योंकि विभाजन के दौर में हुए दंगों के जख्म ताजा थे और सरकार नहीं चाहती थी कि ऐसा लगे कि मुसलमानों पर कोई कानून उनकी मर्जी के खिलाफ लादा जा रहा है. बाद में मुस्लिम लॉ को कुछ हद तक संहिताबद्ध किया गया और तीन तलाक को असंवैधानिक घोषित किया गया. तीन तलाक को अपराध इसलिए घोषित किया गया ताकि समाज को ध्रुवीकृत किया जा सके और मुसलमानों को कानून तोड़ने वालों के रूप में प्रस्तुत किये जा सके.

अम्बेडकर न्याय और समानता के जबरदस्त पक्षधर थे और वे स्पष्ट देख सकते थे कि हिन्दू पर्सनल लॉ, महिलाओं को पराधीन रखने और उन पर जुल्म करने का हथियार हैं. अम्बेडकर ने लैंगिक समानता पर आधारित हिन्दू कोड बिल तैयार किया परन्तु इसका इतना जबरदस्त विरोध हुआ कि सरकार को उसके कई प्रावधानों को हटाना पड़ा और उसे चरणों में लागू करने का निर्णय लेना पड़ा. हिन्दुओं के पुरातनपंथी तबके, जिसे हिन्दू राष्ट्रवादियों का पूरा समर्थन हासिल था, ने अम्बेडकर के त्यागपत्र की मांग की. अम्बेडकर स्वयं भी हिन्दू कोड बिल पर प्रतिक्रिया से मर्माहत थे और उन्होंने केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया. हिन्दू कोड बिल के विरोध में गीता प्रेस की कल्याण पत्रिका सबसे आगे थी. गीता प्रेस को वर्तमान सरकार द्वारा गाँधी शांति पुरस्कार से नवाजा गया है. कल्याण ने लिखा, अब तक तो हिन्दू जनता उनकी बातों को गंभीरता से ले रही थी. परन्तु अब यह साफ है कि अम्बेडकर द्वारा प्रस्तावित हिन्दू कोड बिल, हिन्दू धर्म को नष्ट करने के उनके षड्यंत्र का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है. अगर उनके जैसा व्यक्ति देश का विधिमंत्री बना रहता है तो हिन्दुओं के लिए यह घोर अपमान और शर्म की बात होगी और यह हिंदू धर्म पर एक धब्बा होगा.

यूसीसी की मांग उभरते हुए नारीवादी आन्दोलन के ओर से जरूर की गयी थी. सन 1970 के दशक की शुरूआत में, मथुरा बलात्कार काण्ड के बाद इस मांग ने जोर पकड़ा. उस समय यह मान्यता थी कि एकरूपता से महिलाओं को न्याय मिलेगा. आरएसएस के द्वितीय सरसंघचालक गोलवलकर द्वारा के.आर. मलकानी को दिए गए एक साक्षात्कार में संघ प्रमुख ने यूसीसी का विरोध करते हुए कहा था कि भारत में विविधताओं के चलते यूसीसी लागू नहीं किया जा सकता (द आर्गेनाइजर, 23 अगस्त 1972). अतः इस तर्क में कोई दम नहीं है कि यूसीसी से राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी. हम अमरीका से सीख सकते हैं जहाँ के 50 राज्यों में अलग-अलग कानून लागू हैं. अब अधिकांश महिला संगठन भी यूसीसी की बजाय लैंगिक न्याय पर जोर देने लगे हैं. क्या तलाक, उत्तराधिकार और बच्चों के संरक्षण से सम्बंधित नियमों को लोगों पर लादने से लैंगिक न्याय स्थापित हो जायेगा?

क्या यूसीसी को जबरदस्ती लागू करना ठीक होगा? क्या यूसीसी लाद देने से, प्रथागत परम्पराएं और प्रथाएं खत्म हो जाएंगी? ये सवाल महत्वपूर्ण हैं. आज जरूरत इस बात की है कि विभिन्न धार्मिक समुदायों के अंदर से सुधार की प्रक्रिया शुरू हो और लैंगिक न्याय सुनिश्चित किया जा सके. यह सही है कि विभिन्न समुदायों का प्रतिनिधि होने का दावा करने वाले व्यक्तियों के बारे में हम यह नहीं कह सकते कि वे अपने पूरे समुदाय और विशेषकर अपने समुदाय की महिलाओं की राय का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करते हैं. कई मामलों में पुरूष स्वयं को अपने समुदाय का नेता घोषित कर देते हैं. उनके दावों पर निश्चित रूप से प्रश्नचिन्ह लगाए जाने चाहिए और अलग-अलग समुदायों की महिलाओं की राय को महत्व दिया जाना चाहिए और उनकी राय ही वर्तमान कानूनों में सुधार और परिवर्तन का आधार होनी चाहिए. भाजपा का यह दावा खोखला है कि यूसीसी लागू करने मात्र से महिलाओं का सशक्तिकरण हो जाएगा. अपने नौ साल के कार्यकाल में सरकार बहुत आसानी से समुदायों के भीतर से सुधार की प्रक्रिया की शुरूआत सुनिश्चित कर सकती थी. अलग-अलग समुदायों की महिलाएं समय-समय पर अलग-अलग मुद्दे उठाती रही हैं परंतु उनपर कोई ध्यान नहीं दिया गया. इसके साथ ही अल्पसंख्यकों में बढ़ते असुरक्षा भाव के कारण उनके कट्टरपंथी तबके की समुदाय पर पकड़ और मजबूत हुई है. भाजपा का एकमात्र लक्ष्य है धार्मिक आधार पर समाज को ध्रुवीकृत करना और यूसीसी भी इसी उद्धेश्य के लिए उठाया गया कदम है. समुदायों के अंदर से सुधार को प्रोत्साहित करना और यह सुनिश्चित करना कि यूसीसी पर किसी भी चर्चा के केन्द्र में लैंगिक न्याय हो सबसे जरूरी है. यूसीसी को हां या न कहने की बजाए जरूरी यह है कि यह मांग की जाए कि सरकार सबसे पहले यह साफ करे कि यूसीसी में आखिर होगा क्या? अर्थात यूसीसी का मसविदा बहस और चर्चा के लिए सार्वजनिक किया जाए. हम केवल यह उम्मीद कर सकते हैं कि सभी समुदायों और विशेषकर मुसलमानों के परिपक्व और समझदार प्रतिनिधि यूसीसी का विरोध करने की बजाए यह मांग करेंगे कि यूसीसी का मसविदा तैयार हो. भाजपा की जो सरकार गीता प्रेस को गांधी शांति पुरस्कार प्रदान कर सकती है वह महिलाओं के सशक्तिकरण में गहरी रूचि रखती है यह मानना किसी के लिए भी बहुत मुश्किल होगा. भाजपा का खेल सिर्फ इतना है कि मुस्लिम कट्टरपंथी व्यक्ति और संगठन यूसीसी के विरोध में खड़े हो जाएं और इससे समाज का साम्प्रदायिक

युवा सपनों की उड़ान ग्राम ज्ञानालय

भदोही कालीन का हब है यहां कालीन तैयार होते हैं। देश के नए संसद भवन में भदोही की कालीन बिछाई गयीं है। पूर्वांचल में वैसे अच्छे खासे शैक्षिक संस्थान। काशी हिंदू विश्वविद्यालय और संपूणार्नंद संस्कृत विश्वविद्यालय यहां की शैक्षणिक और सांस्कृतिक धरोहर है। लेकिन पूर्वांचल की 70 फीसदी आबादी कृषि अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। यहां पलायन अधिक है। आर्थिक विपन्नता की वजह से युवाओं के प्रतियोगी स्पर्धा के सपने अधूरे रह जाते हैं। लेकिन उन सपनों को पूरा करने के लिए भदोही जनपद से शुरू हुई एक नवाचार की पहल उत्तर प्रदेश और देश के लिए एक मिसाल बनती दिखती है। भदोही के युवा जिला कलैक्टर गौरांग राठी की एक अनूठी पहल पूरे उत्तर प्रदेश और देश की सोच बदल सकती है। भदोही को शहर-ए-कालीन भी कहा जाता है। दुनिया भर से यहां कालीन निर्यात होता है।हालांकि शैक्षिक विकास को लेकर यहां बहुत कुछ नहीं हुआ है।

प्रभुनाथ शुक्ल
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

कल्पनाएं जब सजती और संवरती हैं तो उम्मीदों को पंख लग जाते हैं। इरादे और हौसले मजबूत हो जाते हैं। मंजिल खुद-ब-खुद तय हो जाती है। पूर्वांचल के भदोही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ग्रामीण विकास की सोच जमीन पर उतरती दिखती है। भदोही कालीन का हब है यहां कालीन तैयार होते हैं। देश के नए संसद भवन में भदोही की कालीन बिछाई गयीं है। पूर्वांचल में वैसे अच्छे खासे शैक्षिक संस्थान। काशी हिंदू विश्वविद्यालय और संपूणार्नंद संस्कृत विश्वविद्यालय यहां की शैक्षणिक और सांस्कृतिक धरोहर है। लेकिन पूर्वांचल की 70 फीसदी आबादी कृषि अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। यहां पलायन अधिक है। आर्थिक विपन्नता की वजह से युवाओं के प्रतियोगी स्पर्धा के सपने अधूरे रह जाते हैं। लेकिन उन सपनों को पूरा करने के लिए भदोही जनपद से शुरू हुई एक नवाचार की पहल उत्तर प्रदेश और देश के लिए एक मिसाल बनती दिखती है।

भदोही के युवा जिला कलैक्टर गौरांग राठी की एक अनूठी पहल पूरे उत्तर प्रदेश और देश की सोच बदल सकती है। भदोही को शहर-ए-कालीन भी कहा जाता है। दुनिया भर से यहां कालीन निर्यात होता है।हालांकि शैक्षिक विकास को लेकर यहां बहुत कुछ नहीं हुआ है। लेकिन गावों में नवाचार के तहत ग्राम ज्ञानालय की स्थापना कर युवाओं को नई दिशा देने की पहल शुरू की गयीं है। इस तरह ग्रामीण अंचलों में स्थापित किए जा रहे ग्राम ज्ञानालय में युवाओं के लिए एकेडमिक स्तर की सारी सुविधाएं उपलब्ध है। जनपद के 546 ग्राम पंचायतों में आधुनिक ह्यग्राम ज्ञानालयह्न की स्थापना की तरफ बड़ी तेजी से कदम बढ़ रहे हैं।

भदोही जनपद में तकरीबन 150 गांव में इसकी शुरूवात हो गयीं है। शुरूआती दौर में ही जॉब की तैयारी करने और पढ़ने वाले करीबन 4000 युवा और छात्र-छात्राएं इससे जुड़कर उच्च गुणवत्ता परक शिक्षा ग्रहण कर रहें हैं। जिसकी वजह से उनके शैक्षिक विकास का आधार बेहद मजबूत हो रहा है। पूरे देश में अपनी तरह का आधुनिक सोच को प्रदर्शित करने वाला यह ह्यग्राम ज्ञानालयह्न युवाओं को तेजी से आकर्षित कर रहा है। योगी सरकार के जनप्रतिनिधि इसमें बढ़चढ़ कर सहभागिता करते दिखते हैं।

मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश शासन की अध्यक्षता में विकास प्राथमिकता के कार्यक्रमों में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में जिलाधिकारी गौरांग राठी ने पीपीटी के माध्यम से ह्यग्राम ज्ञानालयह्न के विजन से शासन को अवगत कराया है। मुख्य सचिव नवाचार की इस अनूठी पहल को देखकर इतने प्रभावित हो गए कि उन्होंने जिलाधिकारी की खूब प्रशंसा किया और कहा कि इस रिपोर्ट को भारत सरकार को भेजा जाएगा। इस तरह की सुविधा पूरे उत्तर प्रदेश और देश में उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

युवाओं में शैक्षणिक विकास और प्रतियोगी स्पर्धा पैदा करने के लिए यह नवाचार अपने तरह का अकल्पनीय है। युवाओं के सपनों को आयाम देने के लिए ग्राम पंचायतों में इस तरह के ज्ञानालय यानी वाचनालय की स्थापना की जा रही है। वाचनालय में भरपूर पुस्तक, फर्नीचर, सीसीटीवी, स्मार्ट टीवी और ऑनलाइन कक्षाओं की सुविधाएं उपलब्ध है। इसके अलावा अभ्युदय योजना के तहत रिटायर्ड शिक्षक, प्रवक्ता और दूसरे विषय के विशेषज्ञ इन छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। संबंधित पंचायत या ग्राम सचिवालय भवन में ही एक खास कमरा बनाकर वहां संचालित किया जा रहा है। गांव के पंचायत प्रतिनिधि इसमें खासी भूमिका निभा रहे हैं। ग्रामीण अंचलों में युवाओं में शिक्षा को लेकर अच्छी खासी ललक है। लेकिन अधिकांश परिवारों की वित्तीय स्थिति ठीक नहीं है। वैसे भी उत्तर प्रदेश सरकार दलित और पिछड़े छात्रों को लखनऊ में इस तरह की सुविधा उपलब्ध कराती है, लेकिन वहां सभी नहीं पहुंच पाते हैं। सामान्य और गरीब परिवारों से होने के नाते सुख सुविधाओं के अभाव में नई दिल्ली, प्रयागराज, वाराणसी, जयपुर जैसे शहरों में जाकर कोचिंग कक्षाएं नहीं ले सकते हैं। क्योंकि उनके घर की माली हालत उस तरीके की नहीं है। लेकिन ऐसे बच्चे जो कड़ी स्पर्धा में अपने को खुद साबित करना चाहते हैं उनके लिए ग्राम ज्ञानालय की अनूठी है। देश की चर्चित ऑनलाइन कोचिंग संस्थान खान सर और दूसरी अकेडमिक कोचिंग सेवाओं की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रतियोगिता दर्पण, क्रॉनिकल और अन्य स्तरीय मासिक पत्रिकाएं और अच्छे प्रकाशन की महंगी किताबें उपलब्ध हैं।

जिलाधिकारी गौरांग राठी बताते हैं कि पूर्वांचल के युवाओं में पढ़ने की एक अजीब लगन हमने देखी है। वे पढ़ना चाहते हैं लेकिन यहां सामान्य कमजोर वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिए सुविधाएं बेहतर उपलब्ध नहीं हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं है कि वह दिल्ली प्रयागराज, वाराणसी, जयपुर या दूसरे शहरों में जाकर प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग ले सकें। हालांकि राज्य और केंद्र सरकार कमजोर वर्ग के ऐसे युवाओं को राजधानी में कोचिंग की सुविधा उपलब्ध कराती हैं।

उत्तर प्रदेश की योगी और केंद्र की मोदी सरकार ग्रामीण विकास को लेकर बेहद संजीदा है। अब गांव को सीधे आर्थिक सुविधाएं मिल रहीं हैं। उन्हें अच्छी खासी सकॉलरशिप भी दीं जाती है। लेकिन हर परिवार का युवा शहर तक नहीं पहुंच पाते हैं। ऐसे हालात में ग्राम ज्ञानालय एक बेहतरीन और अनूठी सुविधाओं वाला वाचनालय है। जहां अध्ययन की आधुनिक सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। जॉब की तैयारी करने वाले युवा और युवतियाँ अपनी मंजिल को आयाम दे सकते हैं। देश के सुदूर ग्रामीण अंचलों में ऐसी शैक्षणिक सुविधा आधुनिक समय की मांग है। लोगों को इसके लिए आगे आना चाहिए।

बाढ़ की विभीषिका से विकास में पिछड़ते गांव

फूलदेव पटेल

जुलाई अगस्त का महीना आते ही उप्र, बिहार और उत्तर पूर्वी राज्य बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं. जनजीवन बिल्कुल अस्त-व्यस्त हो जाता है. समस्या केवल आदमी तक सीमित नहीं है बल्कि पशुओं के दाना-साना से लेकर चारागाह और चिकित्सा तक की रहती है. बाढ़ आते ही किसानों की फसल बर्बाद हो जाती है. ऐसा माना जाता है कि सामान्यतः अत्यधिक वर्षा के बाद प्राकृतिक जल संग्रहण स्त्रोतों व मार्गों में जल धारण करने की क्षमता की कमी हो जाती है. पानी उन स्त्रोतों से निकलकर सूखी भूमि को डूबा देता है. यह ध्यान देने वाली बात है कि बाढ़ हमेशा भारी वर्षा के कारण नहीं आती अपितु प्राकृतिक और मानव निर्मित भी है. यथा- मौसम संबंधी तत्व, बादल फटना, नदियों में गाद की अधिकता, मानव निर्मित अवरोध, वनों की अंधाधुंध कटाई आदि प्रमुख कारण माने जाते हैं. इन राज्यों के किसानों को कर्ज लेकर खेती करनी पड़ती है. बाढ़ आते ही फसल बर्बाद हो जाती है और फिर साहूकार से सूद के पैसे अथवा मवेशियों को बेचकर कर्ज चुकाना पड़ता है. बाढ़ उपरांत भोजन-पानी के अभाव में या बीमारी से असंख्य लोगों और पशुओं की मृत्यु भी हो जाती है.

बिहार के मुजफ्फरपुर जिला मुख्यालय से करीब 60 किमी सुदूर दियारा क्षेत्र प्रत्येक साल बाढ़ की त्रासदी झेलने को मजबूर है. आजादी के बाद से लेकर अब तक कितनी सरकारें बदली, परंतु इस इलाके की हालत नहीं बदली. बाढ़ के लिए जिम्मेदार ह्यबूढ़ी गंडकह्न नदी के किनारे स्थित हजारों हेक्टयर उपजाऊ भूमि इसमें आने वाली बाढ़ की भेंट चढ़ जाता है. केवल मुजफ्फरपुर ही नहीं, बल्कि बूढ़ी गंडक वाला क्षेत्र पश्चिमी-पूर्वी चंपारण, सीवान और गोपालगंज जिले भी इसमें आने वाली उफान की भेंट चढ़ जाते हैं. स्थानीय बुजुर्ग बताते हैं कि आजादी के दो दशक बाद तक यह बाढ़ नदी किनारे स्थित सैकड़ों गांव के लिए वरदान साबित होती थी क्योंकि यह खेतों के लिए उपजाऊ गाद लेकर आती थी, जिससे किसान फूले नहीं समाते थे. ग्रामीण बूढ़ी गंडक में आने वाली बाढ़ को उत्सव की तरह मनाते थे. बाढ़ का पानी

संक्षिप्त खबरें

दस्तक अभियान में घर-घर खोजे जाएंगे टीबी के मरीज

अमरोहा।जनपद में चल रहे विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान और 16 से 31 जुलाई तक चलने वाले दस्तक अभियान में घर-घर टीबी के संभावित मरीज खोजे जाएंगे। मरीजों को चिह्नित करने के बाद उन्हें इलाज के दौरान 500 रुपए प्रतिमाह पोषण के लिए भी मिलेगा।जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. मुमताज अंसारी ने बताया कि टीबी मरीजों का पूरा डेटा निक्षय पोर्टल पर दर्ज किया जाएग ताकि उनको निःशुल्क इलाज सहित अन्य सुविधाएं मिलती रहें। सांस के गंभीर रोगी और निमोनिया के साथ खांसी के मरीज मिलते हैं तो उनकी सूची तैयार कर टीबी की जांच कराई जाएगी। उन्होंने बताया कि जिले की सभी टीबी यूनिट में निःशुल्क जांच की सुविधा है जहां लोग पहुंचकर बलगम की जांच करा सकते हैं।डॉ मुमताज ने बताया कि आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता घर-घर जाकर परिवार के लोगों से यह भी पूछेंगी कि क्या आपके यहां किसी परिजन को खांसी व बलगम तो नहीं आ रहा है। ह्यहांह्ल जवाब मिलने पर उस व्यक्ति का सेंपल लिया जाएगा और विभाग को दिया जाएगा। अगर कोई मरीज निकलता है तो जानकारी देने वाली आशा या आंगनबाड़ी वर्कर को 200 रुपए बतौर प्रोत्साहन धनराशि दी जाएगी। उन्होंने बताया कि जनपद में कुल 1654 टीबी के मरीज हैं और इन मरीजों को इलाज के दौरान बेहतर पोषण के लिए 500 रुपए प्रतिमाह बैंक खाते में दिए जाते हैं।

घर से बाहर घूमने निकला था आठवीं का छात्र, कार से कुचल कर मौत

अमरोहा। बृहस्पतिवार की रात खाना खाने के बाद ममेरे भाइयों से साथ टहलने निकले कक्षा आठ के छात्र को पीछे से आ रही इको कार ने कुचल कर मार दिया। हादसे में छात्र की मौके पर ही मौत हो गई। जिसके बाद शव को घर ले गए और बिना पुलिस कार्रवाई के सुपुर्द ए खाक कर दिया। आरोपी चालक भी मोहल्ले में पड़ोस का रहने वाला है। नगर कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला नयारियान में शहजाद का परिवार रहता है। पेशे से कार मकैनिक शहजाद के परिवार में पत्नी शारदा बेगम के अलावा तीन बेटे हैं। उनके दो बड़े बेटे मानसिक रूप से कमजोर और दिव्यांग हैं। जबकि सबसे छोटा 15 वर्षीय बेटा मोहम्मद हारिस कक्षा आठ में पढ़ता था। रोज की तरह बृहस्पतिवार की रात करीब 10:30 बजे मोहम्मद आरिफ अपने ममेरे भाई सलमान और फरहान के साथ गांधी मूर्ति चौराहे की तरफ टहलने गया था। तभी पीछे से तेज रफ्तार इको के चालक ने मोहम्मद हारिस को टक्कर मार दी। जिससे हारिस गंभीर रूप से घायल हो गया।आरोपी चालक इको लेकर मौके से भाग निकला। तभी ममेरे भाई सलमान और फरहान ने हादसे की जानकारी परिजनों को दी और मोहम्मद हारिस को अस्पताल में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जिसके बाद परिजन शव को घर ले गए और बिना पुलिस कार्रवाई के सुपुर्द ए खाक कर दिया। बताया जा रहा है कि आरोपी चालक भी मोहल्ले में पड़ोस का ही रहने वाला है।

राजकीय महाविद्यालय गंगेश्वरी में हुआ वृहद वृक्षारोपण

रहरा।राजकीय महाविद्यालय गंगेश्वरी अमरोहा वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन शासनादेश के अंतर्गत किया गया जिसमें पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताते हुए प्रधानाचार्य डॉ पुष्पेंद्र कुमार ने महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया जिसमें नीम जामुन तुलसी अमरुद गुड़हल वैसे तुम जैसे अनेक प्रजातियों के पौधे महाविद्यालय प्रांगण में लगाए गए जिसकी प्रभारी डॉक्टर पूनम शर्मा ने छात्र-छात्राओं को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित किया इस कार्यक्रम में डॉक्टर वंदना भारद्वाज, डॉ दिलीप कुमार, विजेंद्र कुमार, धर्मेंद्र सिंह,अजय,तोताराम व समस्त महाविद्यालय परिवार ने प्रीति भाग किया।

भक्तों के दर्शन के लिए जनवरी 2024 में खोल दिया जायेगा श्री राम जन्म-भूमि मंदिर

लखनऊ, एजेंसी

अयोध्या में श्री राम जन्म-भूमि मंदिर जनवरी 2024 से भक्तों के लिए खोल दिया जायेगा, जिससे अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में लाखों की वृद्धि होगी। हमारी यह जिम्मेदारी है कि देश-विदेश से आने वाले सभी श्रद्धालुओं को बेहतर से बेहतर सुविधायें उपलब्ध करायी जायें। यहां आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो, वह यहां से अच्छा अनुभव लेकर जाएं। अधिक से अधिक परियोजनाओं के कार्यों को जनवरी 2024 से पूर्व पूर्ण कराने के प्रयास सुनिश्चित किये जाये। यह बातें शुक्रवार को अयोध्या के विकास कार्यों की समीक्षा करते हुए मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने अधिकारियों से कही। मुख्य सचिव ने कहा कि श्रद्धालुओं के ठहरने, परिवहन, पार्किंग, शौचालय, फूडकोर्ट आदि की बेहतर व्यवस्था उपलब्ध कराई जाए। सुलभ शौचालय के ब्लॉक्स बनवाए जाएं। होटल, रेस्टोरेंट आदि की रैंकिंग की जाए। खराब रैंकिंग वाले प्रतिष्ठानों को अवस्थापना सुविधाओं और सर्विसेज को बेहतर बनाने के लिए कहा जाए। प्रतिष्ठानों के मध्य प्रतिस्पर्धात्मक माहौल बनाने के लिए अच्छा कार्य करने वाले प्रतिष्ठानों को 27 सितम्बर, 2023 को विश्व पर्यटन दिवस पर पुरस्कृत किया जाए। श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए होटल, डारमेट्री, धर्मशाला आदि बढ़ाने के लिए कार्य किया जाए। उपलब्ध होटल की मैपिंग करायी जाए। उन्होंने मयार्दा पुरुषोत्तम श्री राम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की टर्मिनल बिल्डिंग का कार्य 30 सितंबर तक पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी परियोजनाओं में अयोध्या की ब्रांडिंग करते हुये अयोध्या की भावना को विकसित करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने अयोध्या में संचालित होने वाली इलेक्ट्रिक बसों पर मयार्दा पुरुषोत्तम श्री राम का फोटोग्राफ, अयोध्या के लोगो की ब्रांडिंग करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि सभी सरकारी भवनों एवं सरकारी परियोजनाओं में अयोध्या की ब्रांडिंग की जाये। शहर के सौन्दर्यीकरण कार्यों में तेजी लायी जाये। मुख्य सचिव ने कहा कि पार्किंग को स्मार्ट पार्किंग बनाया जाए, जिससे लोगों को खाली पार्किंग स्थान की जानकारी ऑनलाइन हो सके। उन्होंने कहा कि अयोध्या में हाईवे पर छह प्रवेश द्वार प्रस्तावित किए गए हैं, इनमें से दो प्रवेश द्वार का कार्य दिसंबर, 2023 तक पूर्ण कराने के प्रयास सुनिश्चित किए जाएं। अयोध्या में टेन्ट सिटी को विकसित करने तथा रामपथ, भक्तिपथ एवं श्री राम जन्म भूमि पथ का फसाड सौंदर्यीकरण की कार्यवाही में तेजी लायी जाये। बैठक में मण्डलायुक्त अयोध्या ने बताया कि परियोजनाओं का कार्यान्वयन 8 परिकल्पनाओं-सांस्कृतिक, आयुष्मान, सक्षम, स्वच्छ, आधुनिक, सुगम्य, सुरम्य, भावात्मक अयोध्या के अनुसार किया जा रहा है। अयोध्या में 30,923 करोड़ रुपये की 263 परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है। उन्होंने बताया कि राम पथ, भक्ति पथ, श्री राम जन्मभूमि पथ, ग्रीन फील्ड टाउनशिप के विकास का कार्य प्रगति पर है। अयोध्या बसखारी मार्ग 4 लेन मार्ग का निर्माण 72 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। अयोध्या सुल्तानपुर राष्ट्रीय राज्यमार्ग से एयरपोर्ट तक फोर लेन सड़क का नवनिर्माण 98 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। 14 कोसी व पंचकोसी परिक्रमा मार्ग के चैनेज चार लेन में चौड़ीकरण एवं विस्तारीकरण के लिये भूमि अर्जन व निविदा आमंत्रण की की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। मयार्दा पुरुषोत्तम श्री राम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के रनवे का कार्य 100 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है, बिल्डिंग के कार्य की भौतिक प्रगति 69 प्रतिशत है। अयोध्या स्टेशन का विकास कार्य प्रगति पर है। टेढ़ी बाजार चौराहा (पूर्वी) वाहन पार्किंग एवं दुकानों के निर्माण का कार्य 98 प्रतिशत तथा टेढ़ी बाजार चौराहा (पश्चिम) में 80 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। कौशलेश कुंज में वाहन पार्किंग एवं दुकानों का निर्माण कार्य 100 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। इसी प्रकार जलकल अमानीगंज में वाहन पार्किंग एवं दुकानों का निर्माण कार्य 85 प्रतिशत, कलेक्ट्रेट के निकट स्मार्ट पार्किंग का निर्माण कार्य 78 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। सदर स्थित अफीम कोठी का जीर्णोद्धार कराकर कैफेटेरिया तथा म्यूजियम की तरह विकसित किया जा रहा है। इसी प्रकार जनपद में निमार्णाधीन अन्य सभी परियोजनाओं की भौतिक प्रगति से मण्डलायुक्त एवं जिलाधिकारी ने वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से बैठक में अवगत कराया। मुख्य सचिव द्वारा सभी परियोजनाओं का नियमित अनुश्रवण कर निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ समयावधि में पूरा कराने के निर्देश दिये गये। बैठक में अपर मुख्य सचिव खेल नवनीत कुमार सहगल, अपर मुख्य सचिव आवास नितिन रमेश गोकर्ण, प्रमुख सचिव नगर विकास अमृत अभिजात, प्रमुख सचिव पर्यटन मुकेश मेश्राम, प्रमुख सचिव चिकित्सा शिक्षा आलोक कुमार, प्रमुख सचिव लोक निर्माण अजय चौहान, प्रमुख सचिव परिवहन एल0वेंकटेश्वर लू सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण आदि उपस्थित थे।

नागरिकता संहिता को लेकर जन संवाद का आयोजन

बांग्लादेशी घुसपैठियों को आसानी से मिल जाती है नागरिकता:अश्वनी कुमार

प्रात: किरण, संवाददाता

अमरोहा।भाजपा नेता अश्वनी कुमार उपाध्याय शुक्रवार को गजरौला पहुंचे। जहां उन्होंने हाइवे स्थित एक रिसॉर्ट में समान नागरिकता संहिता को लेकर जन संवाद किया। कहा कि आज बांग्लादेशी घुसपैठियों को 15 हजार रुपए में भारत की नागरिकता मिल जाती है। क्योंकि हमारे देश का कानून लचीला है।अगर देश को प्रगति पर ले जाना है, तो नए कानून बनाने होंगे।इसके साथ ही उन्होंने कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर जमकर चर्चा की और बारीकी के साथ प्रकाश डाला।भाजपा के निवर्तमान विधायक कमल मलिक के बुलावे पर गजरौला पहुंचे।सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अश्वनी उपाध्याय ने समान नागरिक संहिता को लेकर जन संवाद किया।यहां पर उन्होंने समान नागरिक संहिता को लेकर होने वाले फायदे के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जो भी सांसद-विधायक देश के संविधान की आत्मा के समान आर्टिकल 44 (समान नागरिक संहिता) का विरोध कर रहे हैं। उन सभी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए उनकी सदस्यता रद्द कर देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इसके लिए वह लोकसभा अध्यक्ष और भारत के प्रधानमंत्री से भी मांग करते हैं।इसके साथ ही उन्होंने कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठियों को आज भारत में 15 हजार रुपए में नागरिकता मिला जाती है। क्योंकि हमारे यहां का कानून लचीला है। घुसपैठियों को दो हजार रुपए में बॉर्डर पार करा दिया जाता है। उन्होंने ने कहा कि देश के खिलाफ जो भी जाता है। उस पर देशद्रोह, एनएसए और रासुका लगाने की कार्रवाई की जाए। साथ ही कहा कि आज देश में धर्मांतरण तेजी से बढ़ रहा है। जो राष्ट्र की सुरक्षा के लिए खतरा है। इसके लिए सरकार को कड़े कानून बनाकर सख्त सजा का प्रावधान लागू करना चाहिए। अंग्रेजों का कानून बेकार हो गया है। देश के सभी निवासियों के लिए एक समान कानून लागू होना चाहिए।

ग्रेटर नोएडा के बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट में 22 से 24 सितम्बर तक होगी मोटो जीपी रेस

मोटो जीपी रेस आयोजन की 195 देशों में होगी लाइव स्ट्रीमिंग

- मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने मोटो जीपी रेस के आयोजन के सम्बन्ध में की बैठक

लखनऊ, एजेंसी

मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र की अध्यक्षता में मोटो जीपी रेस के आयोजन के सम्बन्ध में बैठक आयोजित की गई। इस दौरान मुख्य सचिव ने कहा कि भारत में पहली बार मोटो जीपी रेस 22 से 24 सितम्बर तक ग्रेटर नोएडा के बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट में प्रस्तावित है। इस आयोजन की 195 देशों में लाइव स्ट्रीमिंग होगी। यह आयोजन विश्वस्तर पर उत्तर प्रदेश की ब्रांडिंग का सर्वश्रेष्ठ अवसर है। इस आयोजन को सफल बनाने के लिये आयोजकों के साथ समन्वय करते हुये सभी तैयारियों को समय से पूरा कराया जाये। मुख्य सचिव ने कहा कि मोटो जीपी रेस के दौरान ट्रैक के किनारों पर यूपी की ब्रांडिंग की जाये। आयोजन के दौरान प्रदेश की कला और संस्कृति को प्रदर्शित किया जाये। विश्व भर से आने वाले प्रतिष्ठित अतिथियों व प्रेस-प्रतिनिधियों को ओडीओपी के उत्पाद भेंट किये जाये। उन्होंने पर्यटन विभाग को मोटो जीपी के लिये प्रदेश के प्रमुख सांस्कृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक व दार्शनिक स्थलों का भ्रमण कराने के लिये पैकेज तैयार करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में निवेश अनुकूल माहौल होने के कारण दुनियाभर के निवेशकों को आकर्षित कर रहा है। प्रदेश सरकार इच्छुक निवेशकों को सभी जरूरी सुविधायें व प्रोत्साहन उपलब्ध करा रही है। मोटो जीपी से सम्बन्धित उद्योगों को उत्तर प्रदेश में निवेश के लिये अनुकूल समय है, उत्तर प्रदेश सरकार उन्हें हर संभव सहायता उपलब्ध करायेगी। उन्होंने इनवेस्ट यूपी को मोटो जीपी के लिये डेडीकेटेड टीम लगाने के निर्देश दिये। बैठक में मोटो जीपी रेस के आयोजकों ने बताया कि वह उत्तर प्रदेश मोटो जीपी रेस के आयोजन को लेकर बहुत उत्सुक हैं। प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें हर संभव सहायता उपलब्ध करायी जा रही है। उन्होंने बताया कि मोटो जीपी से सम्बन्धित उद्यमी उत्तर प्रदेश में निवेश के लिये उत्सुक हैं। आयोजन के दौरान बाइक के पार्टस को लाकर उत्तर प्रदेश में एसेम्बल करेंगे और टेक्नोलॉजी को शेयर करेंगे।बैठक में अपर मुख्य सचिव खेल नवनीत कुमार सहगल, सीईओ इनवेस्ट यूपी अभिषेक प्रकाश, आयुक्त वाणिज्य कर मिनिस्ती एस0, सचिव एमएसएमई प्रांजल यादव व अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण तथा मोटो जीपी के अन्य प्रतिनिधिगण आदि उपस्थित थे। यमुना प्राधिकरण के सीईओ डॉ0 अरुणवीर सिंह, मोटो जीपी आयोजन के सीईओ कामेलो वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से बैठक में जुड़े थे।

नौगावां सादात में हर्ष उल्लास से बनाई गयी ईद-ए-गदीर

प्रात: किरण, संवाददाता

नौगावां सादात।मोला अली सोसाइटी रजिस्टर्ड के तत्वाधान में सस्था के अध्यक्ष तारिक रजा उर्फ शोबी रजा की अध्यक्षता में जश्ने गदीर मनाया गया।जिसमे सर्व प्रथम मोलाना हसन अख्तर अबिदी ने इमामबरगाह हाजी बाकर मोहल्ला बाजार नौगावां सादात में एक गदीर के वाकिये को बयान किया और बताया की आज से 1400 वर्ष पूर्व मोहम्मद साहब (रसूले खुदा सल्लाहो वाले ही वसल्लम)ने अपने जीवन के आखरी हज ह्ज्जातुल विदा से वापिस लोटते समय 1 हिजरी को खुदा के हुक्म से एक एलान किया था के मेरी म्रत्यु उपरान्त अल्लाह के दीन इस्लाम धर्म का उतराधिकारी हजरते अली अ०स० होगे और हजरात अली को मिम्बर से ये कहकर ऐलान किया मन कुन्तो मोला फहाजा अली उन मोला इसका अर्थ होता हे की जिस जिस का में मोला हु उस उस के ये अली मोला हे में आप लोगो के दरमियान दो चीजे छोड़ कर जा रहा हु। एक अल्लाह की किताब खुराने पाक और दूसरा अहलेबैत अगर जीवन में इन दोनों का फॉलो करोगे तो कभी परेशान न होगे अमले सालेहा करते रहना सिरातुल मुस्तकीम पर रहोगे और जन्नत में आला मुकाम अता होगा इस तकरीर के बाद जुलुस इमाम बाड़े से बरामद हुआ। जो नौगावां सादात के अपने तय शुदा रास्तो और तीनो चोक हुसैनी चोक ,हजरत अली चोक,हजरत अबुतालिब चोक होता हुवा ऐ एस एम इन्टर कॉलेज होता हुवा बुध बाजार मोहल्ला बाजार में इमामबरगाह हाजी बाकर में आकर सम्पन हुवा अंत में जुलुस में मोलाना शब्बर अली,हसन इमाम ,काजिम अस्करी ,मोहम्मद अली आदी ने देश में शांती बनाये रखने के लिए दुआ की और कहा की अपने वतन से मोहब्बत इमान की दलील हे इस अवसर पर मो0 मुस्तुफाअब्बास अली ,वजीर अस्करी ,नदीम अब्बास,शजर अब्बास आदी लोग मोजूद रहे

सुविधाओं को मजबूती देने के लिए वेव सिटी करेगी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस में 10 करोड़ रुपए का निवेश

गाजियाबाद, एजेंसी

उत्तर भारत की पहली ऑपरेशनल हाई-टेक सिटी वेव सिटी, अपने निवासियों को आला दर्जे की सुरक्षा और सुविधाएं प्रदान करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस तकनीक में लगभग 10 करोड़ रुपए का निवेश करेगी। यह प्रस्तावित निवेश रियल एस्टेट इंडस्ट्री में एक मानक स्थापित करेगा जिससे घर खरीदने वालों अत्याधुनिक सुविधाएं और सुरक्षा प्रणालियां प्राप्त होंगी। यह प्रस्तावित निवेश दिल्ली-एनसीआर में किसी भी सिंगल रियल एस्टेट प्रोजेक्ट में टेक्नोलॉजी और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को अमल में लाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। वेव सिटी के मुख्य परिचालन अधिकारी सी जे सिंह ने कहा, यह युग भवन निर्माण प्रौद्योगिकी में उन्नति और विविध पसंदों का युग है और इस युग में भारतीय रियल ऐस्टेट को निवेशकों की ओर से भारी मात्रा में उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया मिली है, इन निवेशकों में युवा एवं मिड-करियर प्रोफेशनल हैं जो डिजिटल तकनीकी की विस्तृत जानकारी रखते हैं। घर खरीदने वाले ये लोग हमेशा टेक्नोलॉजी के सम्पर्क में रहते हैं और रियल एस्टेट कारोबार में वैश्विक तकनीकी रुझानों के प्रति ये बहुत जागरुक होते हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज के समझदार ग्राहक सस्टेनेबल निवास स्थलों की तलाश में हैं जहां इंटिग्रेटिड टेक्नोलॉजी युक्त सुरक्षा व्यवस्था हो और जहां वे तनाव मुक्त एवं सहज जीवन शैली का आनंद ले पाएं। हम उनकी जरूरतों और आकांक्षाओं को समझते हैं, और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस में हमारा निवेश इसी का प्रमाण है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के तहत इंस्टॉल की जाने वाली कुछ सुविधाएं होंगी- एटीएम चोरी का पता लगाना, फोरेंसिक पहचान, पार्किंग प्रबंधन, यातायात प्रबंधन आदि। कंपनी का लक्ष्य है अगले तीन वर्षों में इस निवेश को पूरा करना। किसी भी बड़े शहर की जीवनरेखाएं हैं- यातायात और परिवहन। इसे ध्यान में रखते हुए, वेव सिटी ने एक इंटेलिजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम बनाया है, जिसमें शामिल हैं- बसों पर लोकेशन ट्रैकिंग और सुचारू ट्रैफिक नियंत्रण के लिए वीडियो एनालिटिक्स की तैनाती, जो यातायात के परिमाण पर निर्भर होगा। महामारी के बाद, हर कोई काम-परिवार-सेहत के बीच संतुलन के साथ गुणवत्तापूर्ण जीवन की तलाश कर रहा है, और पूरे भारत में कई परियोजनाएं इसी को ध्यान में रखकर विकसित की गई हैं। लेकिन वेव सिटी ने उन सब से एक कदम आगे का सोचा है और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस युक्त तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए यह सुनिश्चित किया है कि उसके निवासियों को बाधामुक्त जीवनशैली प्राप्त हो। इसके लिए कंपनी ने पहुंच में आसानी के साथ किफायती एवं पर्यावरण अनुकूल समाधान प्रदान किए हैं। आज घरों के खरीददार (नई पीढ़ी समेत) अपने कार्बन फुटप्रिंट और स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अधिक जागरुक हो रहे हैं, भावी विकास के तहत वेव सिटी में स्मार्ट डस्टबिन का उपयोग किया जाएगा, इनकी खासियत यह होगी की जब ये 80 प्रतिशत भर जाएंगे तो सफाई कर्मचारियों को ये स्मार्ट डस्टबिन कचरा साफ करने का संकेत भेजेंगे। ये डस्टबिन एक इन्फ्रारेड सेंसर और एक जीएसएम डिवाइस पर लगाए जाएंगे जो सिग्नल को आगे भेजेंगे। इस खासियत से कूड़ा-कचरा फैलने से रोका जा सकेगा तथा सफाई और हाइजीन कायम रखी जा सकेगी। स्मार्ट कचरा प्रबंधन प्रणाली, स्मार्ट लाइटिंग, 500 गार्ड और सीसीटीवी कैमरों सहित शीर्ष सुरक्षा सुविधाएं और कार नंबर प्लेटों को पढ़ने और स्कैन करने के लिए एएनपीआर प्रणाली भी वेव सिटी में उपलब्ध हैं।

गीता प्रेस सिर्फ एक संस्था नहीं, बल्कि जीवंत आस्था है : प्रधानमंत्री

गोरखपुर, एजेंसी

गीता प्रेस को भारत की एकजुटता को सशक्त करने वाला तथा एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना का प्रतिनिधित्व करने वाला बताते हुये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि गीता प्रेस विश्व का ऐसा एकलौता प्रिंटिंग प्रेस है, जो सिर्फ एक संस्था नहीं बल्कि एक जीवंत आस्था है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को गीता प्रेस के शताब्दी समारोह के समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुये कहा, ह्यह्यगीता प्रेस अलग-अलग भाषाओं में भारत के मूल चिंतन को जन-जन तक पहुंचाती है। गीता प्रेस एक तरह से एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने कहा, गीता प्रेस विश्व का एकलौता ऐसा प्रिंटिंग प्रेस है, जो सिर्फ एक संस्था नहीं बल्कि एक जीवंत आस्था भी है। गीता प्रेस का कार्यालय करोड़ों लोगों के लिए किसी मंदिर से जरा भी कम नहीं है। प्रधानमंत्री ने कहा, गीता प्रेस जैसी संस्था सिर्फ धर्म और कर्म से ही नहीं जुड़ी है बल्कि इसका एक राष्ट्रीय चरित्र भी है। यह भारत को जोड़ती है, भारत की एकजुटता को सशक्त करती है। उन्होंने कहा, ह्यह्य1923 में गीता प्रेस के रूप में यहां जो आध्यात्मिक ज्योति प्रज्ज्वलित हुई थी, आज उसका प्रकाश पूरी मानवता का मार्गदर्शन कर रहा है। हमारा सौभाग्य है कि हम सभी इस मानवीय मिशन की स्वर्ण शताब्दी के साक्षी बन रहे हैं। मोदी ने कहा, ह्यह्यइसके नाम में भी और काम में भी गीता है, और जहां गीता है वहां साक्षात कृष्ण हैं। जहां कृष्ण है वहां करुणा भी है, कर्म भी है। वहां ज्ञान का बोध भी है और विज्ञान का शोध भी है। उन्होंने कहा कि गीता प्रेस आज भी कल्याण पत्रिका के लिए विज्ञापन न लेने की गांधीजी की सलाह का पालन कर रहा है । मोदी ने कहा, ये समय गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर अपनी विरासत पर गर्व करने का है। आज एक ओर भारत डिजिटल टेक्नोलॉजी में नए रिकॉर्ड बना रहा है। तो साथ ही, सदियों बाद काशी में विश्वनाथ धाम का दिव्य स्वरूप भी देश के सामने प्रकट हुआ है। उन्होंने कहा कि इस बार का मेरा गोरखपुर का दौरा विकास भी-विरासत भी की नीति का अद्भुत उदाहरण है। इस दौरान प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल तथा मुख्यवमंत्री योगी आदित्यीनाथ भी मौजूद थे । हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाले एक निर्णायक मंडल ने गीता प्रेस को गांधी शांति पुरस्कार 2021 प्रदान करने की घोषणा की थी। केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 1995 में स्थापित इस वार्षिक पुरस्कार के तहत एक करोड़ रुपये की नकद राशि, एक प्रशस्ति पत्र और एक पट्टिका तथा एक उत्कृष्ट पारंपरिक हस्तकला या हथकरघा उत्पाद प्रदान किया जाता है। गीता प्रेस ने पुरस्कार राशि स्वीकार करने से इनकार कर दिया था और कहा कि वह केवल प्रशस्ति पत्र ही स्वीकार करेगी।

अपना दल (एस) समाज के सभी वर्गों को दिलाएगा उनका अधिकार, मिशन 2024 की तैयारी में जुटें कार्यकर्ता

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मेघनाथ पटेल ने अपना दल के संस्थापक की जयंती कार्यक्रम सफल बनाने के लिए पार्टी प्रमुख व कार्यकताओं का जताया आभार

मीरजापुर, एजेंसी

अपना दल के संस्थापक डा. सोनेलाल पटेल की जयंती पर बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं समेत अपना दल (सोनेलाल) की राष्ट्रीय अध्यक्ष, केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री व मीरजापुर की सांसद अनुप्रिया पटेल का आभार।अब मिशन 2024 लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर कार्यकर्ता व पदाधिकारी जनता के बीच जाकर विकास कार्य व उपलब्धियां गिनाएं और मिशन 2024 का लक्ष्य हासिल करेंगे। यह बातें शुक्रवार को अपना दल (सोनेलाल) के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मेघनाथ पटेल ने सरदार पटेल चौराहा स्थित संसदीय जनसंपर्क कार्यालय पर शुक्रवार को पार्टी की बैठक को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि अपना दल (एस) का लक्ष्य समाज के सभी वर्गों को उनका अधिकार दिलाना है। मुख्य अतिथि मेघनाथ ने सांसद अनुप्रिया पटेल द्वारा संसदीय क्षेत्र में कराए गए विकास कार्यों यथा राष्ट्रीय राजमार्ग सात व 76, पटेल चौराहा, अटल चौराहा, बीएचयू पशु चिकित्सा केंद्र, हीमोडायलिसिस केंद्र, पासपोर्ट कार्यालय, ट्रामा सेंटर, मेडिकल कालेज, मंडलीय चिकित्सालय में ऑक्सीजन प्लांट, भटौली व चुनार पक्का पुल, जनजातीय संग्रहालय जैसे महत्वपूर्ण कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि सभी को पार्टी की नीतियों और विचारों को जनता तक पहुंचाने के लिए जमीन पर उतरकर काम करने की जरूरत है। जिलाध्यक्ष इं. रामलौटन बिंद की अध्यक्षता में पार्टी की बैठक सम्पन्न हुई। संचालन युवा मंच के जिलाध्यक्ष उदय पटेल ने किया। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ता और पदाधिकारी मौजूद रहें।

उप्र में तेजी से हो रहा औद्योगिकीकरण, युवाओं के रोजगार की अपार संभावनाएं : दुर्गा शंकर मिश्र

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में पहले यूपी परियोजना के अन्तर्गत एनआईआरएफ रैंकिंग, नैक मूल्यांकन व अन्य बिन्दुओं पर विचार-विमर्श के लिए बैठक संपन्न

लखनऊ, एजेंसी

मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र की अध्यक्षता में पहले यूपी परियोजना (प्रोजेक्ट फार एक्सीलेन्स इन हायर लर्निंग एण्ड एजुकेशन इन यूपी) के अन्तर्गत एनआईआरएफ रैंकिंग, नैक मूल्यांकन व अन्य बिन्दुओं पर विचार-विमर्श के लिए बैठक आयोजित की गई। मुख्य सचिव ने अपने संबोधन में कहा कि उत्तर प्रदेश में तेजी से औद्योगिकीकरण हो रहा है। रिटेल, लॉजिस्टिक, हेल्थकेयर व हॉस्पिटैलिटी में युवाओं के रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। प्रदेश में उच्च शिक्षण संस्थानों व महाविद्यालयों में इन सेक्टर से सम्बन्धित व्यवसायोन्मुख (जॉब ओरियेन्टेड) कोर्सेज संचालित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के 100 उच्च शिक्षण संस्थानों व महाविद्यालयों को चयनित करके उनमें आगामी शैक्षणिक सत्र से रिटेल, लॉजिस्टिक, हेल्थकेयर व हॉस्पिटैलिटी सेक्टर की जरूरत के अनुसार डिग्री कोर्सेज का संचालन करने हेतु आवश्यक कार्यवाही तेजी से पूरी करायी जाये। इस कार्य में सीआरआईएसपी (सेण्टर फॉर रिसर्च इन स्कीम्स एण्ड पॉलिसीज) का सहयोग लिया जाये। शिक्षण कार्य हेतु शिक्षकों का चयन कर उनकी मैपिंग करा दी जाये और उन्हें आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण दिलाया जाये। उन्होंने कहा कि इन कोर्सेज के संचालन से विद्यार्थियों को स्किल के साथ-साथ अप्रेन्टिस की भी सुविधा मिलेगी और कोर्स समाप्त होने के उपरान्त नौकरी के अवसर भी प्राप्त होंगे। इस बारे में विद्यार्थियों को जागरूक कर कोर्स में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित किया जाये। उन्होंने कहा कि एनआईआरएफ (नेशनल इंस्टीट्यूट रैंकिंग फ्रेमवर्क) रैंकिंग निर्धारित करते समय शिक्षा की गुणवत्ता, फैकल्टी, इंफ्रास्ट्रक्चर, प्लेसमेंट जैसी बातों को महत्ता दी जाती है। प्रदेश के 100 कॉलेजों का चयन कर उन्हें एनआईआरएफ रैंकिंग में शीर्ष 200 कॉलेजों में लाने के प्रयास किये जायें। इसके अलावा अधिक से अधिक शासकीय उच्च शिक्षण संस्थानों व महाविद्यालयों को नैक मूल्यांकन में प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये। नैक मूल्यांकन में अच्छा ग्रेड प्राप्त करने पर उन्हें प्रोत्साहन राशि प्रदान करने की व्यवस्था की जाये, इससे प्रदेश में बेहतर शैक्षिक माहौल तैयार होगा। उन्होंने कॉलेजों में इनोवेशन को बढ़ावा देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि नैक और एनआईआरए

संक्षिप्त खबरें

सीनेट का चुनाव कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शांतिपूर्ण हुआ मतदान

भागलपुर। टीएमबीयू में सिनेट के चुनाव को लेकर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मतदान संपन्न कराया गया।चुनाव के मतदान को लेकर विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारी सुबह से ही विश्वविधायलय पहुँच कर मतदान करते दिखे। वही वोटिंग करने के बाद मतदाताओं ने बताया कि योग्य उम्मीदवार जिताने के उद्देश्य से वोट डाल रहे है, जो उनकी समस्याओं को ऊपर तक पहुंचाए एवं समस्याओं का निदान करने में सहयोग करने के लिए हमेशा आगे बढ़ कर काम करें। वही कई कर्मियों ने कहा कि हमें विश्वविद्यालय में बदलाव चाहिए ऐसी उम्मीद के साथ हम लोगों ने सही उमीदवार के निर्वाचन पक्ष में मतदान किया है।

निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर कार्यक्रम का चलाया अभियान

भागलपुर। जिला अंतर्गत जगतपुर रेलवे ब्रीज के समीप लोदीपुर परिक्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संरक्षण एण्ड एन्टीकरप्शन ब्यूरो ने चलाया निशुल्क चिकित्सा जांच शिविर अभियान। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के रूप में लोजपा(रामबिलास) के जिलाध्यक्ष राजेश वर्मा और समाजसेवी विजय यादव मौजूद थे। वहीं कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संगठन के महिला प्रकोष्ठ की जिला अध्यक्ष अमिता कौशिक ने कहा कि इस शिविर में जिले के जाने माने चिकित्सक डॉ. शीतल, डॉ. उज्वल, डॉ. संदीप लाल और अन्य चिकित्सक टीम द्वारा शिविर के मध्यम से निशुल्क चिकित्सा स्वास्थ्य जांच करेंगे। वहीं उसने कहा कि आगे भी इस तरह का आयोजन संगठन की ओर किया जाएगा। इस दौरान मानवाधिकार संगठन के दर्जनों कार्यकर्ता व आसपास के दर्जनों लोगों की उपस्थिति दर्ज रही थी।

70 किलो का अनोखा कांवर के साथ हावड़ा से कांवरिया जत्था पहुंचा अजगैविनाथ धाम

शाहकुंड (भागलपुर)। अजगैविनाथ धाम गंगा तट पर हावड़ा से कांवरिया का एक जत्था अनोखा कांवर लेकर पहुंचा। जहां पर कांवर देखने एंव कांवर का सैलफी फोटो लेने वालों की भीड़ लग गई। वही हावड़ा के कांवरिया जत्था के एक श्रद्धालु सोन मईक ने बताया हर वर्ष अलग अलग अनोखा कांवर लेकर अजगैविनाथ धाम गंगा तट से जलभर कर पैदल यात्रा के साथ बाबा बैधनाथ धाम को जाते हैं, बाबा भोलेनाथ हम सबों की मनोकामनाएं पुर्ण करते हैं, इसलिए हर वर्ष बाबा भोलेनाथ के दरबार में हाजरी लगाने के लिए जाते हैं। वही इस बार भी महाकाल का स्वरूप रूपी कांवर के साथ शांति के प्रतिक एंव प्रेम के प्रतिक कबुतर का आर्टिफिशियल स्तम्भ प्रतिबिंब के बने 70 किलो वजन के कांवर लेकर को लेकर अजगैविनाथ धाम के पावन गंगा तट से पैदल यात्रा कर बाबा बैधनाथ धाम को निकल पड़े हैं। वही इस 70 किलो के बने कांवड़ को लेकर 15 कांवरिया का जत्था बड़े हर्षोल्लास के साथ नाच गाना के मस्ती में झूमते हुए है बारी बारी से नियम निष्ठा के साथ देवघर बैधनाथ धाम को रवाना हुए हैं।

जमीन विवाद में मारपीट , एक घायल

असरगंज। ।थाना क्षेत्र के पुरूषोत्तमपुर गांव में जमीन विवाद के दौरान दो पक्षों में जमकर मारपीट की घटी। इस घटना एक व्यक्ति घायल हो गया। घायल का ईलाज असरगंज प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में कराया गया। घायल के द्वारा असरगंज थाना में लिखीत आवेदन दिया गया है। असरगंज थाना अध्यक्ष कौशलेंद्र कुमार ने बताया कि घायल के द्वारा आवेदन दिया गया है उनके आवेदन के आधार पर मुकदमा दर्ज किया गया है।जांचोपरांत दोषियों पर कारवाई किया जायेगा।

12 लीटर शराब के तस्कर गिरफतार

असरगंज। थाना क्षेत्र के सजुआ गांव से गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर एक शराब तस्कर को 12 लिटर शराब के साथ गिरफ्तार कर मुंगेर जेल भेज दिया गया है तथा मोटरसाइकिल को कब्जे में लेकर थाना लाया गया। इस संबंध में असरगंज थाना अध्यक्ष ने बताया कि शराब तस्करों को पकड़ने हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में यह कारवाई किया गया।

शिवलिंग पूजा एवं हवन पूजन के साथ किया गया दुर्गा सप्तशती पाठ

पूर्णिया/ धमदाहा। शुक्रवार को धमदाहा मध्य स्थित मां काली मंदिर प्रांगण में 1,25,000 पार्थिव शिवलिंग महापूजा एवं हवन-पूजन के साथ साथ दुर्गा सप्ती पाठ किया गया। महा पूजा का आयोजन समस्त ग्राम वासियों के सहयोग से स्थानीय विद्वान पंडितों के द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ किया गया। इस दौरान पूरे गांव से पार्थिव शिवलिंग बनाकर मंदिर परिसर में दिया जा रहा था एवं पंडितों के द्वारा सभी का पूजा उपरांत हवन किया गया। इस दौरान पूरे गांव में भक्ति का माहौल बना हुआ था। बूढ़े युवा सभी मिलकर इस महापूजा को सफल बनाने में अपना अपना सहयोग दे रहे थे। मां काली पूजा समिति के अध्यक्ष संजीव कुमार ठाकुर ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी पूजा पाठ का आयोजन किया गया है। पूजा समाप्ति उपरांत हवन किया जाएगा।

जिला प्रशासन के दावों की खुली पोल

मेला के तीसरे ही दिन अंधेरे में पैदल यात्रा करने को कांवरिया मजबूर

प्रात : किरण संवाददाता

शाहकुंड (भागलपुर)।श्रावणी मेला की तैयारी को लेकर जिला प्रशासन कई सुविधाओं को मुहैया कराने के दाबे करते रहे हैं, लेकिन उनके कथनी दाबे की हकीकत व फायदे कांवड़िया श्रद्धालुओं को कहीं भी जमीनी स्तर पर नही दिख रहा है, जिला प्रशासन के द्वारा खोखली दाबो की पोल खोल कर रख दी है, जब कांवरिया अंधेरे में टॉर्च की रोशनी में पैदल यात्रा पर चल रहे थे तो बिजली, पानी की समुचित व्यवस्था का लाभ मिलना तो दूर कही बिजली के एक बल्ब भी नही दिखाई दे रहे थे, दरअसल कच्ची कमरिया पथ मार्ग पर जिला प्रशासन के द्वारा की गई तैयारियों का ढोकली दाबे की पोल खोलता दिखाई दे रहा है। वही कच्ची कांवरिया पथ मार्ग सावन महीने के पूर्व से ही अधेरे में डूब चल रहा है, मेला शुरूआत के बाद आलम कुछ और ही है। वही कांवरिया इस कठिन मार्ग पर टॉर्च की रोशनी में चलने को मजबूर दिख रहे हैं। वही उक्त पथ मार्ग पर जहरीली जीव के काटने का डर भी कांवरिया श्रद्धालुओं को सता रहा है। यह दृश्य जो आप देख रहे हैं यह गोगाचक धर्मशाला के कच्ची कांवरिया पथ मार्ग का है, जिन पथ मार्ग से होकर कांवरिया अंधेरे में टॉर्च की रोशनी जलाकर पैदल चल रहे हैं, तो वहीं उक्त स्थल पर स्थित धर्मशाला में भी समुचित लाइट व्यवस्था उपलब्ध हैं ही नहीं वही धर्मशाला में रहने वाले कांवरिया गर्मी व उमस से भी परेशान हो रहे हैं। वही ठहरने वाले कांवरिया ने कहा कि धर्मशाला में कोई भी व्यवस्था नहीं है और तो और बिजली भी नहीं है, यहां पर कांवड़ियों की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर कोई सुरक्षा गार्ड भी नहीं है। वही टॉर्च की रोशनी में अपना समान निकालना पड़ता है, गर्मी से परेशान हो रहे हैं। पंखा सिर्फ जिंदा रहने का संकेत दे रहा है। वही हम कांवड़िया के बीच शौचालय की दिक्कत है और रात और सुरक्षा के भाव में कुछ जहरीली जीव के काटने की आशंका का डर भी बनी हुई है। वही उन्होंने स्थानीय जिला प्रशासन और सरकार से मांग करते हुए कहा की अतिशीघ्र समुचित व्यवस्था उपलब्ध कराएं ताकि जो कल से कांवरिया कांवड़ लेकर आए उसको किसी प्रकार की दिक्कत नहीं हो सकें। सरकार और प्रशासन ने इस बार अच्छा कार्य करने के ढोकले दाबे सभी हवा में उड़ चल रहे हैं इस हकीकत से आप खुद अवगत कर सकते हैं। ज्ञात हो कि मेला शुरूआत के पूर्व से जिला प्रशासन की टीम लगातार सुरक्षा, जल, ठहराव, सौचालय के बेहतर सुविधा उपलब्ध कराने के विगत वर्षो की अपेक्षा बेहतर मुहैया कराने की दाबे करते रही थी,लेकिन जमीनी हकीकत उक्त पथ मार्ग की जांच करने पर ही पता चलता है कि क्या सुविधा उपलब्ध कराने के कार्य हकीकत क्या है।

केला खेती पर मौसम की पड़ी मार,घट गया उत्पाद

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। नवगछिया अनुमंडल क्षेत्र केलांचल के नाम से प्रसिद्ध है, अगर हम नवगछिया की फसल की बात करें, तो केला और मक्का अपने आप में एक अहम भूमिका के तौर पर जाना जाता हैं, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में एक अलग स्थान रखता है।

यहां का केला देश के कई राज्यों में सप्लाई किया जाता है, राजधानी दिल्ली, उत्तर प्रदेश से लेकर मध्यप्रदेश, राजस्थान साहित नेपाल तक जाते है, लेकिन अब इसके उत्पादन में भी रोक के क्षेत्रों में ग्रहण लग गया है, इसका मुख्य कारण मौसम और सरकार के द्वारा विशेष पहल नहीं किया जाना है, नवगछिया अनुमंडल क्षेत्र के किसान अपने केले की उत्पादन फसल से साल भर अपना जीवन यापन किया करते थे, आज वही किसान अपनी उपज सस्ती दामों पर बेचने को मजबूर हैं। किसानों के कठोर मेहनत के बाद केला उत्पादों में गिरावट आई हैं, किसानों का जीवन काफी कठिनाइयों भरा गुजर रहा है। नवगछिया के मकंदपुर, भवानीपुर, तेतरी पकड़ा, खरीक, बिहपुर सहित कई क्षेत्रों में किसान बड़े पैमाने पर केले की खेती करते है। यहां के केला के उत्पादन करने वाले किसानों का दर्द उभर गया है। यहां के किसान कई दशकों से केले की खेती कर रहे हैं, मगर उन्हें आज तक इसका उचित दाम नहीं मिला सका है। जिससे किसानों को मौसम ही नही बल्कि सरकार के उदासीनता के कारण बेबस व लाचार हो अपना गुजारा भत्ता को लेकर फसल को कम कीमत के साथ घाटे में बेचना पड़ रहा है। ज्ञात हो कि केला उत्पादन के क्षेत्र में सरकार द्वारा कई योजनाओं को विकसित करने की बात कही गई थी लेकिन चुनावी राजनीति के दौर में सभी अधर में लंबित प्रकरणों में चल रहा है। यही वजह है कि नवगछिया क्षेत्र में किसानों के परिवार सरकार के कार्यो को लेकर नाराज व आक्रोशित दिख रहे हैं।

बिहार राज्य खादी ग्राम उद्योग द्वारा 10 दिवसीय खादी मेला सह उद्धमी बाजार का किया विधिवत उद्घाटन

बिहार सरकार के उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ में किया दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की शुरूआत

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। उद्योग विभाग बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड पटना द्वारा आयोजित 10 दिवसीय खादी मेला सह उद्यमी बाजार जीरोमाइल के रेशम भवन परिसर में आयोजित किया गया है। इस खादी मेला सह उधमी बाजार का आयोजन "खादी एक दिन-खादी हर दिन" के स्लोगन के तर्ज पर आयोजित की गयी है। वही बिहार सरकार के उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ भागलपुर सांसद अजय मंडल, उपमेयर सलाउद्दीन अहसन बाल श्रम आयोग के अध्यक्ष चक्रपाणि हिमांशु भागलपुर एडीएम के अलावे कई गणमान्य अधिकारियों ने सामूहिक रूप से दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत रूप से शुरूआत की। वही कार्यक्रम के अंत में मंचासीन अतिथियों के द्वारा महात्मा गांधी के तेलचित्र पर पुष्प अर्पित किये। उद्घाटन सत्र के क्रम में मंचासीन अतिथि के द्वारा बारी बारी से खादी को बढ़ावा देने को लेकर अपने-अपने विचार रखते हुए अपने संबोधन में कहा कि महात्मा गांधी के द्वारा खादी ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई आंदोलन के दौर से गुजरे थे, वही इस बाजार व व्यापार को बेहतर मार्ग व बेहतर विकास की दिशा में बढ़ावा देने के लिए इस उद्योग मेला का आयोजन किया गया है। गौरतलब हो कि यह कार्यक्रम 7 जुलाई से 16 जुलाई 10 दिनों तक जीरो माइल के रेशम भवन में आयोजित की गई है जिसमें खादी के बने चादर साड़ी दुपट्टे के अलावे कई चीजें कई स्टॉल पर सजाई गई है, वही बिहार सरकार के उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ ने बताया कि खादी को लेकर बिहार सरकार विशेष पहल कर रही है, उक्त स्थल पर जमीन पर्याप्त है उस पर जल्द भवन तैयार होगा और खादी के उद्योग में जुड़े लोगों के लिए उद्योग में काफी फायदा पहुंचेगा। वहीं उन्होंने बताया कि लोगों को बिहार की चीजों को ज्यादा से ज्यादा खरीदना चाहिए जिससे बिहार की अपनी एक अलग पहचान बनाने में सार्थक हो और यहां के उद्यमी अपने व्यापार से ज्यादा आय अर्जित कर सकें। साथ ही उन्होंने कहा कि 2024 के चुनाव पूर्णरूपेण महागठबंधन की पक्ष में बन रही है भारी बहुमत से महागठबंधन सरकार बनाइएगें। वही उन्होंने इशारे इशारे में कहा कि पूरे भारतवर्ष में कई पहलवान हैं, लेकिन इस बार बिहार के पहलवान की ही जीत होगी, वही कुर्सी की शान बढ़ाएंगे। खादी उद्योग के कार्यक्रम में खादी के नायक कहे जाने वाले महात्मा गांधी को मंत्री व और पदाधिकारियों ने अनदेखी करते हुए उन्हें कार्यक्रम के अंत में पुष्पांजलि की गई। इस पर मीडिया द्वारा सवाल किए जाने पर उद्योग मंत्री ने जवाब दिया कि हमें आयोजकों ने मंच पर ही बैठा दिया गया, मैं अपने मन से कैसे क्या करता अब सवाल यह उठता है कि मंत्री के सामने महात्मा गांधी की फोटो रखी हुई है, पुष्पांजलि के लिए फूल रखे हुए हैं लेकिन इस पर ध्यान नहीं जाता और खादी ग्रामोद्योग के जनक कहे जाने वाले महात्मा गांधी को ही भूल गये।

दो दिवसीय नियोजन सह व्यावसायिक मार्गदर्शन रोजगार मेला का हुआ शुभारंभ

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। बिहार सरकार श्रम संसाधन विभाग के अवर प्रादेशिक नियोजनालय भागलपुर द्वारा स्थानीय जिला स्कूल मैदान परिसर में दो दिवसीय नियोजन शहर व्यवसाय मार्गदर्शन रोजगार मेला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन सांसद अजय मंडल व बालश्रम आयोग के अध्यक्ष डॉ. चक्रपाणि हिमांशु ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया। गौरतलब हो कि रोजगार मेला से 45 सौ बेरोजगार युवा व युवतियों को रोजगार देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिसमें 36 कंपनियां अपने स्टॉल लगाकर छात्रों से बायोडाटा संग्रहित कर उन्हें जल्द से जल्द रोजगार मुहैया कर देगी। इस कार्यक्रम आयोजन के पूर्व बेरोजगार युवक व युवतियों को जागरूक करने हेतु प्रातः प्रभात फेरी भी निकाली गई, इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विवेकानंद कुमार, विश्वजीत कुमार जिला कौशल प्रबंधक और कौशल विकास केंद्र के संचालक विजय चौधरी, निवास कुमार शुभम शर्मा सहित कई पदाधिकारी व कर्मी मौजूद थे। वही रोजगार मेला को लेकर अहले सुबह से ही युवा जिला स्कूल के प्रांगण में पहुंचना शुरू कर दिए थे। दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान हजारों युवक व युवतियों ने आवेदन पत्र को संबंधित कम्पनी के स्टॉल पर जमा किया है।

बेटा बहंगी पर बिठा दृशंकल्प के साथ हुआ बाबा धाम रवाना

बीमार मां के स्वस्थ ठीक होने की कामना पूरी करने को मां संग ले निकला पूरा परिवार बाबा धाम तीर्थ यात्रा पर

प्रात : किरण संवाददाता

शाहकुंड (भागलपुर)। बदन पर भगवा-लाल कपड़े, नंगे पैर और भोले की मस्ती के बीच कांवड़ यात्रा में आपने कई लोगों को देखा होगा, लेकिन इस बार पवित्र पावन धार्मिक यात्रा पर कुछ ऐसे श्रद्धालु भी देखने को मिले हैं, जिन्होंने अपने माता को कांधे पर लदे बहंगी में लेकर पैदल यात्रा पर बाबा धाम की यात्रा पर निकल पड़े हैं। श्रद्धालु अपनी बहंगी पर वृद्धा मां को भी बिठा कर बाबा बैजनाथ धाम को गंगाजल अर्पित करने के लिए चल पड़ा श्रद्धालु खगड़िया जिला के परवत्ता गांव का बताया जा रहा है जो अपनी मां को बाबा बैजनाथ के दर्शन कराने को देवघर जाने के लिए वृद्ध महिला के पुत्र रंजित साह ने एक अलग तरह की बहंगी तैयार की। जिसके बाद श्रवण कुमार की तरह उसमें माता को बिठाकर जलाभिषेक के लिए सुल्तानगंज से बाबा धाम की तीर्थ यात्रा पर निकल पड़ा है। इस बहंगी पर बैठी वृद्ध महिला द्रोपती देवी के पुत्र व भतीजा द्वारा बाबा बैजनाथ के दर्शन कराने के लिए बहंगी को उठाकर चल रहे हैं। वही सुल्तानगंज उत्तरवाहिनी गंगा से जल लेकर भक्त बाबा के दर्शन के लिए देवघर की ओर निकले कांवरियों का जत्था बोल-बम के जयकारे के साथ अपनी ही मस्ती में जाते दिख रहे हैं। इन कावंडियों में बिहार के खागरिया के रहने वाले दो युवक भी है, जो कलयुग में श्रवण कुमार की तरह अपने माता को बाबा के धाम दर्शन के लिए ले जाने दृशंकल्प ले कर कठिन पथ पर चल रहा है। इतना ही नहीं इस शुभ कार्य में उनके पूरा परिवार उनका सहयोग करते दिखाई दे रहा है, वही इस यात्रा पर वृद्धा महिला के परिवार में संगीत साह, मंजू देवी, गुड़िया देवी, भाई बिनोद साह, दीपक साह भी उसका पूरा सहयोग कर रहे हैं। इसी क्रम में पुत्र रंजीत ने बताया कि मां काफी बीमार रहती थी दवा का असर भी नहीं हो रहा था, उन्होंने बाबा भोलेनाथ को पुकारा और उनकी पुकार सुन ली गई और मां पूर्ण रूप से स्वस्थ व ठीक हो गई। वही मां के स्वस्थ व ठीक होने के पश्चात उन्होंने प्रण लिया था की मां को कावर पर लेकर पैदल यात्रा के साथ पूरा परिवार पैदल यात्रा कर बाबा धाम जाएंगे, इसी दृशंकल्प के साथ बाबा धाम की पैदल यात्रा पर माँ को बहंगी पर लेकर निकल पड़े है।

फूड सेफ्टी ऑफिसर की टीम ने कावड़िया भोजन की जांच की

कावड़ियों को ठंडा बासी भोजन पड़ोसने पकड़े जाने पर कानूनी कार्रवाई के साथ मिलेगा दंड;-फूड इंस्पेक्टर

प्रात : किरण संवाददाता

शाहकुंड (भागलपुर)। सूलतानगंज में विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेले के तीसरे दिन कांवड़िया पथ मार्ग पर ढाबे पर मिलने वाली कावड़ियों के भोजन की गुणवत्ता की जांच को लेकर पूर्णिया से आए फूड सेफ्टी इंस्पेक्टर जितेंद्र कुमार ने सुल्तानगंज स्थित स्थाई और अस्थाई होटल का निरीक्षण कर भोजन गुणवत्ता की जांच की। वही निरीक्षण के दौरान उन्होंने कहा कि सभी होटल वाले को कहा गया है कि कावडियो को खाना अच्छी व सुद्धता के साथ दें और वही आसपास के दुकानदार को सख्त हिदायत भी दिया गया है कि खाना को ढक कर रखें और जिलाधिकारी के द्वारा तय किया हुआ ही तय दर पर भोजन शुल्क ले। वही कावड़ियो ने बताया कि खाना की क्वालिटी तो अच्छी है, लेकिन सभी होटल में ठंडा खाना ही परोसा जाता है। जिसके बाद फूड सेफ्टी विभाग के इंस्पेक्टर ने होटल वाले को गर्म खाना परोसने को हिदायत देते हुए कहा गया कि भोजन को बासी भोजन में मिलावटी के साथ पकड़े जाने पर कानूनी तौर पर सजा के साथ कार्रवाई भी की जाएगी इसका ध्यान रखें। वही इस गतिविधि को लेकर आसपास के ढाबे संचालन कताओं के बीच हड़कंप मचा हुआ है।

सड़क दुर्घटना में दो युवक की मौके पर हुई मौत

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले भर में वाहन दुर्घटना के शिकार बन कर मौत का दौर थमने का नाम नही ले रहा है। इसी कड़ी में टीओपी थाना क्षेत्र प्राकृतिक नर्सरी के समीप एक और सड़क हादसा का शिकार हो दो छात्र के मौत हो जाने का मामला सामने आया है।

घटना को लेकर बताया जा रहा है कि एक बाइक पर सवार दो छात्र किसी अज्ञात वाहन की चपेट में आने से दोनो की घटनास्थल पर ही मौत हो गई है। वही घटना को लेकर आसपास के लोगों व राहगीरों की माने तो घटना जिस समय हुई है उस समय किसी वाहन से टकराने की बात सामने नहीं आ रही है, वही घटना को लेकर कयास लगाये जा रहा है कि बाइक की रफ्तार तेज में थी और बाइक अनियंत्रित हो दुर्घटना ग्रस्त हो गयी है। वही घटना को लेकर मिली जानकारी के बाद स्थानीय बायपास थाना पुलिस मौके पर पहुंच दोनो मृत युवक के शव को मायागंज अस्पताल भेज दिया है। वही पुलिस ने दोनों मृत युवक की पहचान तिलकामांझी थाना क्षेत्र जवारीपुर के मुकेश मंडल के पुत्र राहुल कुमार उर्फ सागर व दूसरे युवक की पंकज चौधरी के पुत्र किशन के रूप में की है। वही दोनों युवक को लेकर बताया जा रहा है कि आईटीआई की परीक्षा देने के लिए अनुपम आईटीआई गया हुआ था। जहां से वापस लौटने के क्रम में हादसे का शिकार हो गया। गौरतलब हो कि मृतक राहुल उर्फ सागर मायागंज अस्पताल में बतौर लिफ्टमैन के रूप में कार्यरत था। वही घटनास्थल पर टीओपी थाना पुलिस पहुंच कर दुर्घटना ग्रस्त बाइक को अपने कब्जे में कर घटना की जांच में जुट गई है। वही घटना की जानकारी मिलते अस्पताल परिसर में मृतक युवकों के शव को देख परिजनों का चित्कारियो व कोलाहल माहौल में तब्दील हो गया वही घटना से आहत हुए परिजनों का पुलिस ने फर्द बयान दर्ज कर दोनों युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जहां परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। वही पुलिस ने दोनों युवकों के पोस्टमार्टम करवाकर शव के अंतिम संस्कार के लिए परिजनों को सौप दिया है।

धरहरा में डीएम के निरीक्षण में कई शिक्षकों पर गिरी गाज

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। मुंगेर डीएम नवीन कुमार के नेतृत्व में पदाधिकारियों के दल ने धरहरा के महगामा पंचायत का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में मध्य विद्यालय गोविंदपुर पहुंचे डीएम उस समय परेशान दिखे ,जब पूछने पर विद्यालय के एचएम अनिल कुमार सिंह बिहार की चौहद्दी भी नहीं बता पाया। डीएम का कहना था कि जब हेड मास्टर ही सवाल का जवाब नहीं दे पाते हैं तो बच्चों को कैसे पढाएंगे। निरीक्षण के क्रम में डीएम ने तृतीय वर्ग में 53 बच्चों की जगह मात्र 40 बच्चों की उपस्थिति को देख क्लास टीचर निरंजन कुमार की जमकर क्लास ली। अंग्रेजी के शिक्षक प्रमोद कुमार का भी बड़ा बुरा हाल था। प्रखंड शिक्षक प्रमोद कुमार भी डीएम के द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब नहीं दे पाया। क्लास में पूछे गए सवाल का बच्चों के द्वारा उत्तर नहीं दिए जाने के बाद नाराज डीएम ने गणित के शिक्षक खजुरिया निवासी निरंजन कुमार व प्रखंड शिक्षक प्रमोद कुमार के वेतन भुगतान पर रोक लगाने का आदेश दिया । उन्होंने कहा कि जांच टीम के द्वारा दुबारा बच्चों से टेस्ट लिए जाने के बाद ही वेतन निर्गत किया जाएगा। चतुर्थ वर्ग के छात्र-छात्राओं से जब भारत की राजधानी का नाम पूछा गया तो बच्चों के द्वारा जवाब में राजधानी का नाम पटना बताए जाने पर डीएम काफी परेशान दिखे । बारी बारी से डीएम सभी वर्ग के छात्र-छात्राओं से मिले और शिक्षा के महत्व को समझाया।

इस दौरान सवाल का सही जवाब देने वाले कई छात्रों को डीएम ने शाबाशी दी। विद्यालय का रंग रोगन व मेंटेनेंस नहीं कराने को लेकर संबंधित जेई रजनीश को अविलंब कार्रवाई का निर्देश दिया। हालांकि रजनीश ने बताया कि एचएम अनिल कुमार सिंह से शो काउज पूछा गया था। इसके बाद डीएम के नेतृत्व में पदाधिकारियों के दल ने विगत 3 वर्षों से पंचायत में विकास कार्य को क्रियान्वित नहीं करने को लेकर महगामा के पंचायत सचिव विद्यानंद यादव व मुखिया शंकर साव की जमकर क्लास की।

डीएम ने विद्यानंद यादव को कहा कि काम नहीं करना है तो वीआरएस ले लीजिए। वहां मौजूद डीपीआरओ मोहम्मद मंसूर आलम को कहा कि अविलंब कार्रवाई करें। पंचायत सचिव, मुखिया ,संबंधित जेई को एक साथ बैठा कर अविलंब अभिलेख तैयार कर विकास कार्य योजनाओं को गति दे । गली-नली पक्की करण ,हर घर नल जल ,आवास से वंचित लोगों को आवास, भूमिहीनों को भूमि उपलब्ध कराते हुए पंचायत में लोक कल्याणकारी योजनाओं को क्रियान्वित करें।

विकास योजनाओं में बाधा पहुंचाने वाले की सूचना एसडीएम संजय कुमार व लड़ैया टांड थानाध्यक्ष जेपी सिंह को देकर एफ आई आर दर्ज करें । वही खजुरिया में एग्रीकल्चर ट्रांसफार्मर खराब होने पर असिस्टेंट इंजीनियर दिलीप कुमार पर विफर पड़े। डीएम ने कहा कि खराब ट्रांसफार्मर को 24 घंटे में बदलना है और 48 घंटे से ऊपर हो जाने के बावजूद नहीं बदला जाना काफी चिंता की बात है ।

डी एम ने विभाग के कार्यपालक अभियंता को सूचना देकर कार्रवाई करने का निर्देश दिया। डीएम ने कई आंगनबाड़ी केंद्रों, मनकोठिया का जर्जर स्कूल भवन ,जर्जर सड़कों का भी निरीक्षण किया और संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को अविलंब कार्रवाई करने का निर्देश दिया। निरीक्षण के बाद डीएम नवीन कुमार वरिष्ठ पत्रकार भारतीय पत्रकार संघ के बिहार प्रदेश अध्यक्ष धरहरा निवासी लालमोहन महाराज के आवास पर पहुंचे ।जहां पढ़ रहे बच्चों व शिक्षक विजय सिंह को शिक्षा के महत्व के बारे में समझाते हुए बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

कांवरिया पथ पर आस्था भक्ति समर्पण एवं संगम का विहंगम दृश्य दिखने को मिल रहा है

तारापुर (मुंगेर)। विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला को लेकर राज्य सरकार पैदल जा रहे कांवरियों की व्यवस्था का चाहे लाख दाबा कर ले , लेकिन हकीकत जमीन पर कुछ और ही बयां कर रही है । श्रावणी मेला के चौथे दिन रुक रुककर रिमझिम बारिश के बीच बाबा बैजनाथ के लिए कांवर लेकर जलाभिषेक करने को लेकर पैदल जा रहे कांवरियों के बीच आस्था, भक्ति, समर्पण, एवं संगम, का विहंगम, दृश्य कांवरिया पथ में 24 घंटे देखने को मिल रहा है। गौरतलब है कि रात्रि 2:00 बजे के बाद से ही भोलेनाथ के भजन पर थिरकते कांवरियों से संपूर्ण मार्ग शिवमय हो उठता है । सही मायने में कांवरिया पथ पर समाजवाद, समरसता, संप्रदायिक सौहार्द, का नजारा देखने में बनता है। बता दें कि सावन महीने में शिव भक्त भांति भांति रंग रूप में बाबा धाम को जाते हैं। जिसमें पहले किस्म के वैसे कांवरिया हैं जो पैदल चलते हैं, और कांवर को अपने कंधे पर से तब तक नहीं उतारते जब तक बाबा धाम नहीं पहुंचते । ऐसे कांवरिया खड़ा बम कहलाते हैं । दूसरे शिवभक्त वे हैं , जो 24 घंटे के भीतर बाबा बैजनाथ के ऊपर जलाभिषेक करते हैं। जिसे डाक बम कहा जाता है ।

महागठबंधन नेताओं ने लिंक कैनाल का किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। पिछले दो वर्षों से लगातार सूखे की मार झेल रहे किसानों की सिंचाई समस्या को लेकर शुक्रवार को प्रखंड के महागठबंधन नेताओं एवं कार्यकताओं द्वारा बेलहरना बदुआ के लिंक कैनाल का निरीक्षण कर इसकी स्थिति से बिजीखोरवा जलाशय योजना के कार्यपालक अभियंता, सहायक अभियंता एवं कनीय अभियंता को अवगत कराया गया।

महागठबंधन के नेताओं ने अधिकारियों से आग्रह किया कि जितनी जल्दी हो सके इस नहर में मरम्मती का कार्य करा कर किसानों के खेतों तक पानी पहुंचाया जाए। इन लोगों के अनुसार बेलहरना बदुआ लिंक कैनाल से बेलहर एवं संग्रामपुर प्रखंड के दर्जनों गाँव के हजारों एकड़ खेतों की सिंचाई होती है ।कैनाल में थोड़ी सी मरम्मती के आभाव में पिछले 2 वर्षों से इस कैनाल में पानी नहीं जा पा रहा है। जिससे किसानों के खेतों की सिंचाई नहीं हो पा रही है। फसल नहीं हो पाने के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। अगर इस बार भी पानी नहीं दिया गया तो किसानों के समक्ष भूखमरी की स्थिति पैदा हो जाएगी। प्रतिनिधिमडल से कार्यपालक अभियंता विजीखोरबा ने कहा कि नहर मेंटेनेंस के लिए फिलहाल कोई फंड उपलब्ध नहीं है। ऐसे में अभी तुरंत कैनाल मरम्मती का कार्य करा पाना असंभव है। बाबजूद इसके सहायक अभियंता सिंचाई प्रमंडल बिजीखरवा अरुण कुमार ने कहा कि वे इस कैनाल का निरीक्षण कर इसकी मरम्मती कराने का प्रयास करेंगे।

प्रतिनिधिमंडल में जदयू प्रखंड अध्यक्ष कमल नयन सिंह, राजद नगर पंचायत अध्यक्ष नंदकिशोर यादव,राजद नेता अशोक यादव ,संजय यादव, जीवन यादव, प्रमोद यादव आदि नेता शामिल थे। इन नेताओं ने बताया कि पिछले वर्ष भी हुई कम बरसा एवं नहर में पानी नहीं दिए जाने के कारण इस क्षेत्र में खरीफ एवं रब्बी फसल की खेती नहीं हो पाई थी। इस समस्या को किसानों ने स्थानीय विधायक राजीव कुमार सिंह के समक्ष भी रखा है। विधायक ने किसानों को भरोसा दिलाया है कि वे इस मुद्दे को आगामी 10 जुलाई से शुरू होने वाले विधानसभा के मानसून सत्र में प्रमुखता के साथ रखकर इस समस्या के समाधान का प्रयास करेंगे।

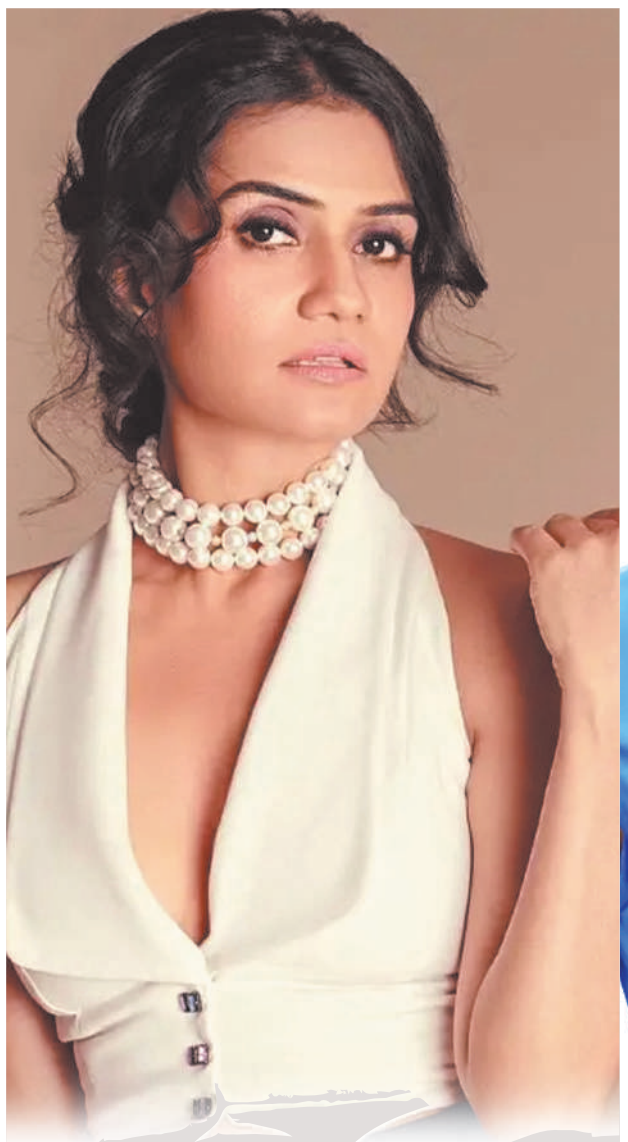

एक्ट्रेस अमृता सुभाष ने अनुराग कश्यप के साथ काम करने का एक्सपीरियंस शेयर किया

एक्ट्रेस अमृता सुभाष को द मिरर और लस्ट स्टोरीज 2 में देखा गया और उनकी परफॉर्मेंस ने सबका दिल जीत लिया है। अमृता सुभाष ने सेक्रेड गेम्स के दूसरे सीजन में सेक्स सीन्स भी शूट किए हैं। और उन्होंने अनुराग कश्यप के साथ काम करने के एक्सपीरियंस को शेयर किया है। एक्ट्रेस अमृता सुभाष को हाल ही रिलीज लस्ट स्टोरीज 2 को लेकर सुर्खिया बटोर रही हैं। वह इसमें कोंकणा सेन शर्मा की शॉर्ट फिल्म द मिरर में नजर आई हैं। अमृता को उनकी परफॉर्मेंस के लिए काफी सराहा जा रहा है। हाल ही में अमृता ने कैमरे पर इंटिमेट सीन्स की शूटिंग के बारे में बात की और एक बड़ी ही अच्छी बात कही है। उन्होंने बताया कि पुरुष और महिला डायरेक्टरों के ऐसे सीन्स को संभालने के तरीके में अंतर है या नहीं। अमृता ने डायरेक्टर अनुराग कश्यप के साथ अपने पहले सेक्स सीन की शूटिंग को याद किया और कहा कि वह ऐसे सीन्स को लेकर काफी सेंसेटिव थे। अमृता ने याद किया कि सेक्रेड गेम्स 2 के दौरान अपनी टीम को बुलाया और अमृता से उनके पीरियड्स की तारीखों के बारे में बात की, ताकि वे उनके सेक्स सीन्स की शूटिंग ऐसे समय में कर सकें जब वह कंफर्टेबल हों। अमृता सुभाष ने नेटफ्लिक्स इंडिया के साथ शेयर किया, मैंने अपना पहला सेक्स सीन सेक्रेड गेम्स 2 में अनुराग के डायरेक्शन में किया था। ये पुरुष या महिला होने के बारे में कोई सवाल ही नहीं है। वह बेहद अच्छे हैं। उन्होंने डायरेक्शन टीम को बुलाया। उन्होंने ही मुझसे सवाल पूछा था कि आपके पीरियड्स की तारीखें क्या हैं, इसलिए वे उसके आसपास सेक्स सीन शेड्यूल नहीं करते हैं। उन्होंने पूछा, क्या आप इसे अपने पीरियड्स के दौरान करेंगी? अमृता ने आगे बताया कि सेंसेटिव होने को किसी के जेंडर से परिभाषित नहीं किया जाना चाहिए और कहा, यह पुरुष या महिला होने से परे है। वह बहुत सेंसेटिव थे। अमृता ने सेक्रेड गेम्स के दूसरे सीज़न में एक रॉ एजेंट की भूमिका निभाई, जिसमें उनका किरदार नवाजुद्दीन सिद्दीकी से जुड़ा होता है।

द मिरर में अमृता सुभाष

अमृता ने कोंकणा के डायरेक्शन में बनी द मिरर में तिलोत्तमा शोम के साथ काम किया है। अमृता ने कहा कि शुरुअता में वह अपने इस कैरेक्टर को बहुत समझ नहीं पाई थीं। उन्होंने द इंडियन एक्सप्रेस से कहा, कभी-कभी अपने किरदारों को पूरी तरह न समझना ही सबसे अच्छा होता है। तभी आप एक बेहतर इंसान के रूप में डेवलप कर सकते हैं। जब आप किसी किरदार को निभाते समय यह कह रहे हों कि मुझे मजा आ रहा है, मुझे कुछ इसी तरह का एहसास हुआ।

ऑडियो थ्रिलर वायरस-2062 के अगले सीजन में लौटे अली फजल और ऋचा चड्ढा

स्टार अली फजल और ऋचा चड्ढा ऑडियो साइंस-फिक्शन थ्रिलर सीरीज वायरस 2062 के सीजन 2 के लिए किरदारों को अपनी आवाज देने के लिए लौटे। यह सीरीज चिली की ऑडियो सीरीज कैसो 63 का हिंदी रूपांतरण है। ऑडियो सीरीज में अपनी भूमिका के बारे में बात करते हुए अली फजल ने कहा, वायरस 2062 के सीजन 2 में मैं पीटर परेरा का किरदार कर रहा हूं। अभिनेता ने कहा, इस शो में असाधारण दुनिया को आवाज देकर अपनी रचनात्मकता का विस्तार करना रोमांचक है, और मुझे उम्मीद है कि दर्शकों को सुनने में उतना ही आनंद आएगा जितना हमने इसे बनाने में लिया था। सीरीज़ में डॉ. गायत्री राजपूत के रूप में वापसी करने वाली ऋचा चड्ढा ने कहा, सीज़न एक की सफलता के बाद वायरस 2062 के दूसरे सीजन के लिए डॉ. गायत्री राजपूत के रूप में अपनी भूमिका को दोहराना एक रोमांचक चुनौती रही है। सीजन 2 में, हम उभरकर सामने आए हैं। साइंस-फिक्शन थ्रिलर ऑडियो श्रृंखला पीटर परेरा (अली फज़ल) के चरित्र पर केंद्रित है जो डॉ. गायत्री (ऋचा चड्ढा) को बताता है कि वह वर्ष 2062 में है, जो दुनिया को महामारी से बचाने के लिए अतीत में वापस आ गया है।

ओमएमजी 2 से सामने आया यामी गौतम का फर्स्ट लुक वकील के किरदार में नजर आएंगी

साल 2012 में रिलीज हुई अक्षय की फिल्म ओएमजी में बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त सफलता हासिल की थी। इस फिल्म में अक्षय भगवान श्रीकृष्ण के रूप में नजर आए थे। वहीं अब अक्षय कुमार ओएमजी 2 में भगवान शिव के रूप में नजर आने वाले हैं। बीते दिनों इस फिल्म से अक्षय कुमार और पंकज त्रिपाठी का फर्स्ट लुक सामने आया था। अब ओएमजी 2 से यामी गौतम का फर्स्ट लुक पोस्टर भी रिलीज हो गया है। इस पोस्टर में यामी गौतम वकील के किरदार में नजर आ रही हैं। पोस्टर में यामी ने काला कोट पहना है और उनके चेहरे पर गजब का आत्मविश्वास दिख रहा है। इस पोस्टर को शेयर करते हुए अक्षय ने लिखा, सच वही हैं जो साबित किया जा सके... सत्य की लड़ाई शुरू होने वाली है। ओएमजी 2 सिनेमाघरों में 11 अगस्तको रिलीज हो रही है। इसके साथ उन्होंने बताया कि फिल्म का टीजर भी जल्द रिलीज होने वाला है। बता दें कि बॉक्स ऑफिस पर ओएमजी 2 की टक्कर सनी देओल की गदर 2 से होने वाली है। ओएमजी 2 में अक्षय कुमार के साथ यामी गौतम और पंकज त्रिपाठी अहम किरदार में हैं। इस बार यह फिल्म शिक्षा व्यवस्था पर आधारित होने वाली है। इस फिल्म को विपुल शाह, राजेश शाह, अश्विन वरदे और अक्षय कुमार ने मिलकर प्रोड्यूस किया है। इस फिल्म के निर्देशक अमित राय हैं।

विक्रांत मैसी की 12वीं फेल 27 अक्टूबर को होगी रिलीज

अभिनेता विक्रांत मैसी की आगामी फिल्म 12वीं फेल इसी नाम की सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब पर आधारित है, जो 27 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है। प्रोडक्शन कंपनी जी स्टूडियोज ने ट्विटर पर रिलीज की तारीख की घोषणा की। ट्वीट में लिखा है, एक सच्ची कहानी और लाखों भारतीयों की वास्तविक कहानियों से प्रेरित 12वीं फेल इसी नाम की सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब पर आधारित है। पहली बार जी स्टूडियोज और निर्माता-निर्देशक विधु विनोद चोपड़ा इस फिल्म को दुनिया भर में पेश करने के लिए एक साथ आए हैं। ट्वीट में बताया गया कि परिवर्तनकारी हार्ड-हिटिंग और गहराई से छूने वाली 12वीं फेल भारत में अब तक बनी सबसे महत्वपूर्ण फिल्मों में से एक है। 12वीं फेल 27 अक्टूबर को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी, जिसे जरूर देखना चाहिए। रिपोर्ट्स के मुताबिक यह आईपीएस ऑफिसर मनोज कुमार शर्मा और आईआरएस ऑफिसर श्रद्धा जोशी की असल जिंदगी की कहानी से प्रेरित है। फिल्म का निर्देशन विधु विनोद चोपड़ा ने किया है। फिल्म को अनुराग पाठक के इसी नाम के सबसे ज्यादा बिकने वाले उपन्यास से रूपांतरित किया गया है।

धनुष की फिल्म डी50 की शुरू हुई शूटिंग

साउथ सुपरस्टार धनुष इन दिनों अपनी फिल्म कैप्टन मिलर को लेकर सुर्खियों में हैं। धनुष इन इस फिल्म की शूटिंग पूरी कर ली है। अब एक्टर ने अपने नए प्रोजेक्ट पर काम भी शुरू कर दिया है। धनुष ने हाल ही में अपनी दूसरी डायरेक्टोरियल फिल्म डी50 की घोषणा की थी। वहीं अब सन पिक्चर्स ने फिल्म डी50 से धनुष का पहला पोस्टर रिलीज करते हुए बताया कि इस फिल्म शूटिंग शुरू हो चुकी है। इस पोस्टर में धनुष अब तक के सबसे अलग लुक में नजर आ रही हैं। पोस्टर में धनुष क्लीन शेव हेड के साथ नजर आ रहे हैं। इस पोस्टर में बैकग्राउंड में फैक्ट्री दिखाई गई हैं, जिसमें आसमान तक लाल रंग के निशान हैं। इस पोस्टर को शेयर करते हुए धनुष ने कैप्शन में लिखा, शूट शुरू हो चुका है, ओम नमः शिवाय। धनुष फिल्म डी50 में सिर्फ अभिनय ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि वह फिल्म में निर्देशन की कुर्सी भी संभालते हुए नजर आएंगे। इस फिल्म के अलावा धनुष आनंद एल राय की फिल्म तेरे इश्क में नजर आएंगे।

शरमन ने कंटेंट पर सोशल मीडिया के प्रभाव के बारे में की बात

बॉलीवुड के जाने माने अभिनेता शरमन जोशी अपनी फिल्मों को लेकर हमेशा दर्शकों के बीच सुर्खियां बटोरते रहते हैं। अभिनेता ने अपने वेब शो 'कफस' के साथ छोटे पर्दे पर वापसी की है। इस बार वह एक बाल कलाकार के पिता की भूमिका में हैं, जो काम के दौरान यौन शोषण का शिकार हुआ है। हाल ही में, शरमन ने कंटेंट पर सोशल मीडिया के प्रभाव के बारे में खुलकर बात की है। अभिनेता शरमन जोशी को हाल ही में रिलीज हुए स्ट्रीमिंग शो कफस में देखा गया है। इस वेब सीरीज के लिए अभिनेता को काफी सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। एक इंटरव्यू में शरमन ने कहा कि इंटरनेट ने न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में संपूर्ण कंटेंट इकोसिस्टम में क्रांति ला दी है। शरमन ने अपने हालिया इंटरव्यू में कहा कि इंटरनेट पर दर्शकों के लिए जो कंटेंट उपलब्ध है, उसे पूरी तरह बदल देना चाहिए। आज के दौर में कई सारे सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और यूट्यूबर्स हैं, जो रील बनाकर ऑडियंस को कुछ नया देने का लगातार प्रयास कर रहे हैं। इसके बावजूद मुझे लगता है कि दर्शकों को जो कंटेंट मिलना चाहिए वह ठीक से नहीं मिल पा रहा है। कंटेंट का दायरा और बढ़ाना चाहिए। यह लोगों को साथ एक तरह से खिलवाड़ किया जा रहा है। शरमन जोशी ने कहा कि अब हर तरह का कंटेंट बनाया जा सकता है क्योंकि हर किसी के पास अपनी जेब में एक स्मार्टफोन है और अपने काम को पूरी दुनिया में दिखाने के लिए इंटरनेट जैसा एक सशक्त माध्यम है, जो उन्हें अपनी कला को दुनिया को दिखाने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

पेरिस में बेटी के साथ सुकून के पल बिता रही हैं सुष्मिता सेन

इन दिनों अभिनेत्री सुष्मिता सेन पेरिस में सुकून के पल बिता रही हैं। उन्होंने अपनी छोटी बेटी अलीसा के साथ छुट्टियों की एक झलक सोशल मीडिया पर पोस्ट की है। यूरोप में छुट्टियां मना रही सुष्मिता ने अपनी बेटी अलीसा के साथ एक मनमोहक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें दोनों एफिल टॉवर के सामने डांस करते नजर आ रहे है। पोस्ट किए गए वीडियो में अलीसा पहले शर्मीली लग रही थी, लेकिन जब उसकी मां सुष्मिता क्लिप में उसके साथ आई तो सब ठीक हो गया। सुष्मिता ने कैप्शन में बताया कि अलीसा अब आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जा रही है। सुष्मिता ने लिखा, जादुई अलीसा। विदेश में पढ़ाई के लिए जाने से पहले मेरी शोना की पेरिस की पहली यात्रा, समय कैसे बीत जाता है, मैं हमारे नृत्य को हमेशा संजो कर रखूंगी। सुष्मिता दो बच्चों की मां हैं। उन्होंने 23 साल की रेनी सेन और 13 साल की अलीसा सेन को गोद लिया था। फॉर्मर मिस यूनिवर्स सुष्मिता अगली बार आर्या के नए सीजन और ताली में दिखाई देंगी, जहां वह ट्रांसजेंडर श्रीगौरी सावंत की भूमिका निभाएंगी।

शनाया कपूर का साउथ डेब्यू मोहनलाल के साथ

संजय कपूर और महीप कपूर की बेटी शनाया कपूर को निर्माता निर्देशक करण जौहर ने अपने बैनर धर्मा प्रोडक्शन की फिल्म बेधड़क के जरिये हिन्दी फिल्मों में पेश करने की घोषणा की थी, लेकिन यह फिल्म सिर्फ घोषणा के स्तर पर ही रह गई। अब शनाया कपूर ने दक्षिण भारतीय फिल्मों का रुख किया है। शनाया कपूर मोहनलाल की फिल्म वृषभ से साउथ डेब्यू करेंगी। एकता कपूर द्वारा निर्मित इस फिल्म के कलाकारों का हिस्सा होने की घोषणा पहले ही की जा चुकी है। वृषभ का निर्देशन कन्नड़ निर्देशक नंद किशोर ने किया है। गलियारों में बहती हवाओं का कहना है कि वृषभ का कथानक पिता-पुत्री के रिश्ते पर आधारित है। यह फिल्म एक पीरियड फिल्म है - इसमें अतीत और वर्तमान है। शनाया इस फिल्म में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। क्योंकि वह वह है जो अतीत और वर्तमान को जोड़ती है। भूमिका ग्लैमरस और प्रदर्शन-उन्मुख दोनों है। यह फिल्म एक हाई-ऑक्टेन एक्शन ड्रामा है। वृषभ को निर्देशक एसएस राजामौली की तेलुगु सुपरहिट फिल्म मगधीरा के समान बताया जा रहा है। फिल्म प्यार और बदले पर केंद्रित है और एक ऐसी कहानी बताती है जहां हम देखते हैं कि क्या प्यार बदले पर जीत हासिल करता है या इसके विपरीत। इसे मुख्य रूप से तेलुगु और मलयालम में शूट किया जाएगा और इसे एक दक्षिण भारतीय फिल्म माना जा रहा है, हालांकि इसे पैन इंडिया के तौर पर प्रदर्शित किया जाएगा। रोशन मेका, गरुड़ राम, सिमरन और श्रीकांत इस फिल्म के कलाकारों का हिस्सा हैं और संगीत देवी श्री प्रसाद का होगा। छायांकन कृष और कुछ कुछ होता है फेम संतोष थुंडिल द्वारा किया गया है। फिल्म का कला निर्देशन मोहन बी केरे ने किया है और केएम प्रकाश संपादक हैं। फिल्म का निर्माण बालाजी टेलीफिल्म्स की एकता कपूर ने कनेक्ट मीडिया और एवीएस स्टूडियो के सहयोग से किया है। फिल्म जुलाई के अंत में फ्लोर पर जा रही है।

मैकडॉनल्ड्स के बर्गर से गायब हुआ टमाटर, बढ़ती कीमतों के बीच उठाया कदम

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में मॉनसून के साथ ही सब्जियों की कीमत काफी बढ़ गई है, खासतौर पर टमाटर की। देश के कई हिस्सों में टमाटर की कीमत 150 रुपए प्रति किलोग्राम के पार पहुंच गई है। इसका असर सिर्फ आम आदमी पर ही नहीं, बल्कि रेस्टोरेंट्स पर भी पड़ा है। ऐसे में आपके पसंदीदा बर्गर के आउटलेट मैकडॉनल्ड्स ने बड़ा ऐलान है, जिससे आपके बर्गर का स्वाद बिगड़ गया है। रेस्टोरेंट के बर्गर से अब टमाटर गायब हो गया है।

नहीं मिल रहे अच्छी क्वालिटी वाले टमाटर

मैकडॉनल्ड्स ने कहा है कि मौसम में बदलाव की वजह से और हमारी तमाम कोशिशों के बावजूद हम अच्छी क्वालिटी वाले टमाटर नहीं ले पा रहे हैं। इसलिए हमारे कुछ आउटलेट्स में खाने में टमाटर नहीं है। ये स्थिति स्थायी नहीं है। मैकडॉनल्ड्स इंडिया (नॉर्थ और ईस्ट) के कुछ रेस्टोरेंट में मेन्यू

से टमाटर गायब हो गया है क्योंकि इसकी कीमत काफी बढ़ गई है। कंपनी का कहना है कि मौसम में बदलाव के कारण क्वालिटी वाले टमाटर नहीं मिल पा रहे हैं।

क्यों बढ़ी टमाटर की कीमत

दरअसल कुछ समय पहले तक किसानों को उनकी टमाटर की फसल की लागत भी नहीं मिल पा रही थी। ऐसे में कई किसानों ने नुकसान की वजह से अपनी ही फसल को खराब कर दिया था। हालात ऐसे थे कि मई में महाराष्ट्र के नासिक में टमाटर की कीमत 1 रुपए प्रति किलोग्राम तक गिर गई थी लेकिन अब इसकी कीमत कई गुना बढ़ चुकी है। इस साल देश में मॉनसून में देरी देखने को मिली लेकिन बाद में अचानक मॉनसून ने रफ्तार पकड़ी। इसकी वजह से फसल पर असर देखने को मिला और कई जगह फसल नष्ट हो गई। बारिश की वजह से टमाटर की सप्लाई भी काफी कम हुई है। इन सब कारणों की वजह से टमाटर की कीमत आसमान पहुंच गई है। हालांकि सरकार का कहना है कि ये बढ़त अस्थाई है।

महंगे टमाटर से फिलहाल अभी नहीं मिलेगी राहत, 150 रुपए से अधिक बिक रहा

नई दिल्ली, एजेंसी। उपभोक्ताओं को महंगे टमाटरों से फिलहाल राहत मिलती नहीं दिख रही। देश के कई हिस्सों में बारिश के कारण आपूर्ति प्रभावित होने की वजह से बृहस्पतिवार को टमाटर की खुदरा कीमत 162 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, महानगरों में टमाटर की खुदरा कीमतें कोलकाता में सबसे अधिक 152 रुपये प्रति किलो रहीं, इसके बाद दिल्ली में 120 रुपये प्रति किलो, चेन्नई में 117 रुपये प्रति किलो और मुंबई में 108 रुपए प्रति किलो रहीं। खुदरा टमाटर की अखिल भारतीय औसत कीमत बृहस्पतिवार को 95.58 रुपए प्रति किलो थी। आंकड़ों से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में इसकी सबसे अधिक कीमत 162 रुपये प्रति किलो रही, जबकि राजस्थान के चुरू जिले में न्यूनतम दर 31 रुपये प्रति किलो थी। देश के अन्य प्रमुख शहरों में टमाटर की कीमतें ऊंची रहीं। बृहस्पतिवार को गुरुग्राम में टमाटर की खुदरा कीमत 140 रुपए प्रति किलो, बेंगलुरु में 110 रुपये प्रति किलो, वाराणसी में 107 रुपए प्रति किलो, हैदराबाद में 98 रुपये प्रति किलो और भोपाल में 90 रुपये किलो थी। आम तौर पर जुलाई-अगस्त के दौरान टमाटर की कीमतें बढ़ जाती हैं। इसका कारण मानसून कर वजह से जल्दी खराब खराब होने वाली वस्तुओं की कटाई और परिवहन प्रभावित होता है।

अब चावल भी महंगा, 11 साल के शीर्ष पर पहुंची कीमत

दुनिया के प्रमुख छह उत्पादक देशों में अल-नीनो का असर चावल पर दिखने लगा है। इस प्रमुख खाद्यान्न की कीमतें अब 11 साल के उच्च स्तर पर पहुंच गई हैं। आगे इसमें और तेजी का अनुमान है। विश्लेषकों ने कहा, अल-नीनो का प्रभाव किसी एक देश तक सीमित नहीं है। यह सभी उत्पादक देशों को प्रभावित कर रहा है। फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन (एफएओ) का वैश्विक चावल मूल्य सूचकांक 11 साल के उच्च पर पहुंच चुका है। यह स्थिति तब है, जब अमेरिकी कृषि विभाग ने छह देशों बांग्लादेश, चीन, भारत, इंडोनेशिया, थाईलैंड व वियतनाम में रिकॉर्ड उत्पादन का अनुमान जताया है। विश्लेषकों का कहना है कि अल-नीनो से सभी प्रमुख चावल उत्पादक देशों का उत्पादन घट जाएगा। ऐसा हुआ तो कीमतें तेजी से बढ़ेंगी। हाल में चावल के शीर्ष उत्पादक देशों चीन और भारत में स्टॉक में गिरावट के कारण चालू वित्त वर्ष में वैश्विक स्तर पर चावल का भंडार घटकर 6 साल के निचले स्तर 17 करोड़ टन हो सकता है। इटली और स्पेन में गंभीर सूखे के कारण यूरोप का उत्पादन 1995-1996 के बाद से सबसे कम होने का अनुमान है।

एनसीएलटी ने रिलायंस इंडस्ट्रीज की वित्तीय सेवा इकाई को अलग करने को मंजूरी दी

नई दिल्ली, एजेंसी। रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. ने बृहस्पतिवार को कहा कि राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण ने कंपनी की वित्तीय सेवा इकाई को अलग करने और उसकी सूचीबद्धता को मंजूरी दे दी है। रिलायंस ने इससे पहले अपने वित्तीय सेवा उपक्रम को रिलायंस स्ट्रैटजिक इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड (आरएसआईएल) के रूप में अलग करने और इसका नाम बदलकर जियो फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (जेएफएसएल) के रूप में सूचीबद्ध करने की योजना की घोषणा की थी। कंपनी ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) ने 28 जून, 2023 के अपने आदेश के जरिए इकाई को अलग करने योजना को मंजूरी दे दी। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने कहा कि कंपनी अब वित्तीय उपक्रम को अलग करने के लिए जरूरी कदम उठाएगी। बयान के अनुसार, ''कंपनी और रिलायंस स्ट्रैटजिक इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड इक्विटी शेयर के आवंटन और सूचीबद्धता के लिए रिकॉर्ड तिथि तय करने सहित आवश्यक कदम उठाएंगी। हालांकि रिलायंस ने इसके लिए कोई समयसीमा नहीं बताई।

ओयो क्रिकेट विश्व कप के मेजबान शहरों में 500 होटल जोड़ेगी

नई दिल्ली, एजेंसी। आतिथ्य सेवा से जुड़े प्रौद्योगिकी मंच ओयो ने शुक्रवार को कहा कि भारत में होने वाले एकदिवसीय क्रिकेट विश्व कप के मैचों की मेजबानी करने वाले शहरों में उसकी अगले तीन महीनों में करीब 500 नए होटलों को जोड़ने की योजना है। ओयो ने एक बयान में कहा कि विश्व कप टूर्नामेंट के मैचों के आयोजन स्थलों के आसपास मौजूद होटल को साथ में जोड़ा जाएगा। दुनिया भर से आने वाले क्रिकेटप्रेमियों को ध्यान में रखते हुए नए होटल मंच से जोड़ने की तैयारी है। कंपनी के एक प्रवक्ता ने कहा, ÷ओयो अगले तीन महीनों में विश्व कप मैचों के आयोजन वाले शहरों में 500 होटल अपने साथ जोड़ेगी। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि अपनी पसंदीदा टीम को खेलते हुए देखने के लिए आने वाले दर्शकों को सुविधाजनक एवं किफायती रिहाइश मिले।÷ इस साल अक्टूबर-नवंबर में भारत में क्रिकेट विश्व कप खेला जाने वाला है। इसके मुकाबले अहमदाबाद, हैदराबाद, दिल्ली, धर्मशाला, चेन्नई, लखनऊ, बेंगलुरु, मुंबई, कोलकाता और पुणे में खेले जाएंगे। इस बीच ऑनलाइन यात्रा सेवाएं देने वाली कंपनी मेकमाईट्रिप ने विश्व कप मैचों के मेजबान शहरों के निवासियों से अपने मकान सूचीबद्ध करने को कहा है। होटल के बजाय घरों में मेहमान के तौर पर ठहरने (होमस्टे) के बढ़ते चलन को देखते हुए मेकमाईट्रिप ने यह सुविधा शुरू की है।

वित्त मंत्रालयः बेहतर आर्थिक प्रबंधन से अन्य देशों की तुलना में तेज सुधार, लंबे समय तक ऊंची रहेगी विकास दर

नई दिल्ली, एजेंसी। वैश्विक चुनौतियों के बीच बेहतर आर्थिक प्रबंधन से भारत अन्य देशों की तुलना में अधिक तेजी से सुधार की राह पर है। आपूर्ति पक्ष से जुड़े बुनियादी ढांचे में निवेश ने कई दशकों के मुकाबले लंबे समय के लिए भारत की सतत आर्थिक वृद्धि की संभावना को बढ़ा दिया है। वित्त मंत्रालय की बृहस्पतिवार को जारी 2023 की सालाना रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था वृद्धि को पहले के मुकाबले अधिक टिकाऊ तरीके से बरकरार रखने की स्थिति में है। इसके बावजूद हमें इन उपलब्धियों पर संतोष नहीं करना चाहिए और न ही कड़ी मेहनत और सतर्कता से हासिल की गई आर्थिक स्थिरता को कम होने देना चाहिए। रिपोर्ट के मुताबिक, कुछ वर्षों में भारतीय बैंकिंग और गैर-वित्तीय कॉरपोरेट क्षेत्रों में बहीखाते की दिक्कतों व वैश्विक चुनौतियों के बीच आर्थिक प्रबंधन शानदार रहा है। इसका वृहद आर्थिक स्थिरता बढ़ाने में बड़ा योगदान है।

शुल्क में कटौती करे सरकार : रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि सरकार महंगाई का दबाव कम करने के लिए शुल्कों में कटौती कर सकती है। कल्याणकारी कार्यों पर खर्च बढ़ा सकती है। इसके अलावा, सरकार अपने पूंजीगत खर्च के बढ़े प्रावधान को कायम रख सकती है।

गूगल विवाद में नया मोड़, सीसीआई पर अमेजन के हितों का बचाव करने का आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी। ऐंड्रॉयड बाजार में अपने वर्चस्व का दुरुपयोग करने के आरोपों से जूझ रही गूगल ने भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग पर यूरोपीय आयोग के फैसले की नकल करने की तोहमत लगाकर विवाद को अब नया रंग दे दिया है। कंपनी ने शीर्ष अदालत में दायर अपनी ताजा अपील याचिका में कहा कि सीसीआई एमेजॉन के हितों का बचाव कर रहा है।

गूगल ने एनसीएलएटी के 29 मार्च के आदेश के खिलाफ 26 जून को सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर की। इसके साथ ही उसने सीसीआई के साथ अपने गतिरोध को एक नया मोड़ दिया है। प्रौद्योगिकी कंपनी का कहना है कि एनसीएलएटी ने सीसीआई के आदेश के 'प्रभाव विश्लेषण' पर उचित तरीके से गौर नहीं किया। गूगल ने अपनी अपील याचिका में कहा है, 'ट्रिब्यूनल ने बिल्कुल सही

कहा कि प्रतिस्पर्धा कानून की धारा 4 (वर्चस्व का दुरुपयोग) का उल्लंघन साबित करने के लिए प्रभाव विश्लेषण की आवश्यकता होती है। मगर उसने आयोग के आदेश पर उसे उचित तरीके से लागू नहीं किया। यदि ट्रिब्यूनल ने प्रभाव परीक्षण को लागू किया होता तो उसे पता चलता कि गूगल के समझौते से कोई प्रतिस्पर्धा विरोधी प्रभाव पैदा नहीं हुआ।'

भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग ने 20 अक्टूबर, 2022 को पाया था कि गूगल ने प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002 के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए बाजार में अपने वर्चस्व का दुरुपयोग किया है। आयोग ने उस पर 1,337.76 करोड़ रुपए का जुर्माना भी लगाया था। बाजार नियामक ने भी गूगल को विभिन्न अनुचित कारोबारी प्रथाओं को बंद करने का निर्देश दिया था। सीसीआई ने कंपनी को अपने एंड्रॉयड ऑपरेटिंग सिस्टम के संशोधित संस्करण को जारी करने का भी आदेश दिया जिसे एंड्रॉइड फोर्क्स कहा जाता है। गूगल ने अपील में शिकायत की है कि ट्रिब्यूनल ने प्रासंगिक सबूतों को नजरअंदाज कर दिया और अप्रासंगिक एवं अविश्वसनीय सबूतों पर भरोसा किया। सामने आने वाली एकमात्र प्रतिस्पर्धी कंपनी एमेजॉन थी।

7 महीने में 100 प्रतिशत चढ़े पेटीएम के शेयर, एक्सपर्ट बोले- अब 1160 रुपये तक जाएंगे

नई दिल्ली, एजेंसी। पेटीएम के शेयरों में पिछले कुछ महीने में अच्छी तेजी आई है। पेटीएम के शेयर 24 नवंबर 2022 को 438.35 रुपये पर पहुंचे, जो इसका लाइफ-टाइम लो है। पेटीएम के शेयरों ने इसके बाद अच्छी वापसी की है और अब 860 रुपये के लेवल पर पहुंच गए हैं। पिछले 7 महीने में पेटीएम के शेयरों में करीब 100 पर्सेंट का उछाल आया है। वहीं, इस साल अब तक कंपनी के शेयर 530 रुपये से चढ़कर 860 रुपये पर पहुंच गए हैं। यानी, पेटीएम के शेयरों में 60 पर्सेंट से ज्यादा उछाल आया है। मार्केट एक्सपर्ट्स अब पेटीएम के शेयरों को लेकर बुलिश हैं। उनका कहना है कि पेटीएम के शेयरों में अच्छी तेजी देखने को मिल सकती है। पेटीएम के शेयरों ने मॉर्गन स्टैनेली, बैंक ऑफ अमेरिका और सिटी जैसे प्रमुख ब्रोकरेज हाउसेज को लुभाया है। इन ब्रोकरेज हाउसेज ने पेटीएम के शेयरों को पॉजिटिव रिव्यू दी है और शेयरों को बाय रेटिंग दी है। विदेशी ब्रोकरेज हाउस सिटी ने पेटीएम के शेयरों के लिए 1160 रुपये का टारगेट दिया है। पेटीएम के शेयरों का 52 हफ्ते का हाई लेवल 915 रुपये है। वहीं, कंपनी के शेयरों का 52 हफ्ते का लो लेवल 439.60 रुपये है। बैंक ऑफ अमेरिका ने पेटीएम के शेयरों के लिए 1020 रुपये का टारगेट दिया है। ब्रोकरेज हाउस ने कंपनी की ग्रोथ पर भरोसा जताया है। साथ ही, कहा है कि कॉम्पिटेटिव रिस्क भी सीमित है। ग्लोबल ब्रोकरेज फर्म मॉर्गन स्टैनेली ने पेटीएम के शेयरों को इक्वल-वेट रेटिंग दी है। पेटीएम ने 79 लाख डिवाइसेज के साथ मर्चेंट पेमेंट्स में नया मुकाम हासिल किया है।

एनपीए पर पारदर्शी तरीके से नजर रखें सरकारी बैंक, वित्त मंत्री सीतारमण का बैंक प्रमुखों को निर्देश

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सरकारी बैंकों के प्रमुखों से कहा कि वे बुरे फंसे कर्ज यानी एनपीए की निष्पक्ष एवं पारदर्शी पहचान सुनिश्चित करें।?साथ ही, विकास और लाभप्रदता की स्थिति बनाए रखने के लिए मजबूत जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को अपनाएं।?वित्त मंत्री ने गुरुवार को सरकारी बैंकों के प्रमुखों के साथ बैठक में उनके कामकाज की समीक्षा की और प्रदर्शन में सुधार को लेकर जरूरी सुझाव भी दिए।?इस दौरान सकारात्मक वृहत आर्थिक रुझान, बेहतर कारोबारी धारणा और इन बैंकों के प्रदर्शन पर चर्चा हुई।?

ग्रामीण-कृषि क्षेत्र को दें पर्याप्त कर्ज

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सरकारी बैंकों को खास निर्देश दिया कि वे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के कर्ज (पीएसएल) मानदंडों को पूरा करने के लिए ग्रामीण, कृषि और समाजिक क्षेत्रों को पर्याप्त कर्ज दें। यह भी सुनिश्चित करें कि इन क्षेत्रों को कर्ज देने संबंधी सारे लक्ष्य हासिल हों।?उन्होंने रेहड़ी-पटरी पर दुकान लगाने वालों को भी वित्तीय सुविधा देने पर जोर दिया। पीएमस्वनिधि नाम से एक बैंकिंग कार्यक्रम चलाया जा रहा है। वित्त मंत्री को बताया गया कि इस कार्यक्रम के तहत 33 लाख लोगों को फायदा पहुंचाया जा चुका है।

स्पाइसजेट को स्पट से झटका, पूर्व प्रमोटर को देने होंगे 380 करोड़ रुपये

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने स्पाइसजेट को बड़ा झटका दिया है। कोर्ट ने एयरलाइन कंपनी से अपने पूर्व प्रमोटर कलानिधि मारन को 380 करोड़ रुपये की मध्यस्थता राशि का भुगतान करने का निर्देश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने साथ ही ये भी कहा कि व्यवसाय को व्यावसायिक नैतिकता के साथ चलाया जाना चाहिए। बता दें कि दिल्ली हाईकोर्ट ने जून में 7 साल पुराने शेयर हस्तांतरण विवाद में स्पाइसजेट को मारन को 380 करोड़ रुपये का भुगतान करने को कहा था। अदालत ने एयरलाइन को चार सप्ताह के भीतर अपनी संपत्ति का ब्योरा देने का भी निर्देश दिया। इससे पहले 13 फरवरी को सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड और न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा और जे बी पारदीवाला की पीठ ने स्पाइसजेट को तीन महीने के अंदर 75 करोड़ रुपये मारन और काल एयरवेज को मध्यस्थता राशि के ब्याज के तौर पर देने का निर्देश था। शीर्ष न्यायालय स्पाइसजेट की दिल्ली हाईकोर्ट के दो नवंबर, 2020 के आदेश के खिलाफ अपील पर सुनवाई कर रही थी।

केनरा रोबेको ने इक्विटी अवसरों का लाभ उठाने के लिए 'केनरा रोबेको मल्टी कैप फंड' लॉन्च किया

मुंबई, एजेंसी। भारत के दूसरे सबसे पुराने म्युचुअल फंड, केनरा रोबेको म्युचुअल फंड ने आज केनरा रोबेको मल्टी कैप फंड लॉन्च करने की घोषणा की है। यह एक ऐसा समाधान है, जो निवेशकों को इक्विटी बाजारों का लाभ उठाने में सक्षम बनाने के साथ ही लार्ज, मिड और स्मॉल कैप शेयरों में विविध निवेश के माध्यम से दीर्घकालिक अवधि में पूंजी वृद्धि करता है। नया फंड ऑफर विभिन्न बाजार पूंजीकरण वाली कंपनियों में निवेश करता है। पोर्टफोलियो का सक्रिय प्रबंधन अच्छा रिटर्न हासिल करने में मदद कर सकता है, वहीं विविधीकरण पोर्टफोलियो के संपूर्ण जोखिम को कम करने में मदद करने का काम करता है। केनेरा रोबेको म्युचुअल फंड के सीईओ रजनीश नरुला ने कहा, केनरा रोबेको मल्टी कैप फंड निवेश के एकमुश्त और एसआईपी दोनों तरीकों के माध्यम से दीर्घकालिक धन बनाने के अच्छे अवसरों में से एक हो सकता है। म्युचुअल फंड निवेशक जो जोखिम और रिवॉर्ड के बीच एक अच्छा संतुलन तलाशते हुए विभिन्न बाजार चक्रों के माध्यम से पांच साल या उससे अधिक की अवधि के लिए निवेश में बने रहना चाहते हैं, उन्हें विभिन्न बाजार चक्रों से भारतीय विकास की कहानी का फायदा मिल सकता है, क्योंकि विभिन्न बाजार पूंजीकरणों की कंपनियां इस अनूठे अवसर का लाभ उठाने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। इनमें से किसी भी कैप में ओवरवेट करने के लचीलेपन के साथ एक गतिशील रणनीति के बाद मल्टी-कैप फंड में न्यूनतम 75 प्रतिशत (बड़े, मध्य और छोटे कैप शेयरों में क्रमशः 25 प्रतिशत) की इक्विटी निवेश की सीमा होगी। फंड मैनेजर की निवेश रणनीति मजबूत रिटर्न के साथ पोर्टफोलियो स्थिरता का संयोजन करती है। इक्विटी प्रमुख और फंड मैनेजर श्रीदत्ता भंडवालदार ने कहा, हमारा मानना है कि फंड प्रबंधन जोखिम प्रबंधन और मजबूत रिटर्न का एक स्वस्थ संयोजन है। केनरा रोबेको मल्टी कैप फंड इन दो स्तंभों को संयोजित करने की आकांक्षा करेगा, जिसमें (1) पोर्टफोलियो स्थिरता हिस्सा (बड़े, मध्य और छोटे कैप में साबित कंपाउंडिंग व्यवसायों के माध्यम से जोखिम नियंत्रण) और (2) अल्फा जेनरेशन पार्ट या मजबूत रिटर्न हिस्सा शामिल है। यह उत्पाद निवेशकों को व्यापक बाजार (मिड/स्मॉल कैप) में चुनिंदा रूप से भाग लेने की अनुमति देता है और साथ ही लार्ज कैप के माध्यम से लचीलापन बनाए रखता है, जिससे बाजार चक्रों के माध्यम से अच्छे जोखिम समायोजित रिटर्न का अवसर पैदा होता है।

जीएसटी परिषद सिनेमाघरों में मिलने वाले खाने-पीने के सामान पर घटा सकती है टैक्स की दर

नई दिल्ली, एजेंसी। जीएसटी परिषद होने वाली बैठक में कैंसर के इलाज में उपयोगी व्यक्तिगत रूप से आयातित दवा डिनुटूक्सिमैब को कर से छूट दे सकती है। साथ ही सिनेमाघारों में परोसे जाने वाले भोजन या पेय पदार्थों पर जीएसटी कम करने के बारे में निर्णय ले सकती है। सूत्रों ने यह जानकारी दी।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता वाली परिषद निजी कंपनियों की तरफ से प्रदान की जाने वाली उपग्रह प्रक्षेपण सेवाओं को लेकर जीएसटी छूट पर भी निर्णय कर सकती है। इसके अलावा, 22 प्रतिशत उपकर लगाने के लिए उपयोगी वाहनों की परिभाषा भी स्पष्ट की जा सकती है। परिषद में राज्यों के वित्त मंत्री शामिल हैं।

सूत्रों के अनुसार व्यक्तिगत उपयोग और उत्कृष्टता केंद्रों द्वारा दुर्लभ बीमारियों के उपचार में उपयोग की जाने वाली दवाओं और विशेष चिकित्सा उद्देश्य के लिए भोजन (एफएसएमपी) के आयात को एकीकृत जीएसटी से छूट दिए जाने की संभावना है।

वर्तमान में, ऐसे आयात पर पांच प्रतिशत या 12 प्रतिशत का एकीकृत जीएसटी लगता है। कर निर्धारण से संबद्ध फिटमेंट समिति ने परिषद को 11 जुलाई को होने वाली 50वीं बैठक में इन मामलों में चीजें स्पष्ट करने की सलाह दी है। समिति में केंद्र और राज्यों के कर अधिकारी शामिल हैं।

फिटमेंट समिति की सिफारिशों के अलावा, परिषद ऑनलाइन गेमिंग पर मंत्री समूह की रिपोर्ट पर भी विचार करेगी। साथ ही अपीलीय न्यायाधिकरण की स्थापना के लिए रूपरेखा को अंतिम रूप देगी और बजटीय समर्थन की योजना के तहत 11 पहाड़ी राज्यों में पूर्ण रूप से केंद्रीय जीएसटी और 50 प्रतिशत एकीकृत जीएसटी की भरपाई करने के लिए उद्योग की मांग पर भी विचार करेगी। सूत्रों ने कहा कि फिटमेंट समिति ने 28 प्रतिशत माल एवं सेवा कर (जीएसटी) के अलावा 22 प्रतिशत क्षतिपूर्ति उपकर लगाने के मामले में बहु-उपयोगी वाहन (एमयूवी) या बहुउद्देशीय वाहन या क्रॉसओवर यूटिलिटी वाहन (एक्सयूवी) को स्पोर्ट्स यूटिलिटी वाहन (एसयूवी) की तरह परिभाषित करने की सिफारिश की है।

समिति ने सिफारिश की है कि चाहे वे किसी भी नाम से पुकारे जाएं, सभी उपयोगी वाहनों पर 22 प्रतिशत उपकर लगेगा लेकिन इसके लिए शर्त है कि वे तीन मापदंडों, लंबाई चार मीटर से अधिक, इंजन क्षमता 1,500 सीसी से ज्यादा और ग्राउंड क्लीयरेंस बिना लोड वाली स्थिति में 170 मिमी (मिलीमीटर) से अधिक को पूरा करते हों।

इस साल सात प्रतिशत बढ़ी दोपहिया की बिक्री, ट्रैक्टर की खरीद में 75 फीसदी की बढ़त

नई दिल्ली, एजेंसी। घरेलू बाजार में यात्री और दोपहिया वाहन समेत गाड़ियों की कुल खुदरा बिक्री जून में सालाना आधार पर 10 फीसदी बढ़कर 18,63,868 इकाई पहुंच गई। हालांकि, मासिक आधार पर बिक्री में 7.70 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। पिछले साल जून में कुल 17,01,105 वाहन बिके थे, जबकि मई, 2023 में यह आंकड़ा 20,19,414 इकाई रहा था। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के आंकड़ों के मुताबिक, यात्री वाहनों की बिक्री पिछले माह 5त्न बढ़कर 2,95,299 इकाई पहुंच गई। जून, 2022 में घरेलू बाजार में 2,81,811 वाहन बिके थे। फाडा के अध्यक्ष मनीष राज सिंघानिया ने कहा, मासिक आधार पर बिक्री में गिरावट वाहन बाजार में नरमी का इशारा करता है। सिंघानिया ने कहा कि मासिक आधार पर दोपहिया वाहनों की बिक्री जून में 12 फीसदी घट गई। इसके अलावा, इलेक्ट्रिक वाहनों (ई-वाहन) की बिक्री में भी मासिक आधार पर 56 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। इसकी प्रमुख वजह सरकार की ओर से फेम योजना के तहत मिलने वाली सब्सिडी में कटौती है। टोयोटा किर्लोस्कर ने इनोवा, क्रिस्टा और फॉर्च्यूनर जैसे वाहनों की कीमतों में एक फीसदी की बढ़ोतरी की है।?नई कीमत 5 जुलाई से लागू हो गई?है। कंपनी ने बृहस्पतिवार को बताया कि कई तरह की लागत बढ़ने के कारण उसे यह कदम उठाना पड़ा है। हालांकि, ग्राहकों पर वह इसका सीमित भार ही डाल रही है।

फैंस को मिली बड़ी राहत, ओयो ने किया बड़ा ऐलान

वनडे विश्व कप के मेजबान शहरों में आगामी तीन महीनों में 500 नए होटल जोड़ेगा

दुबई (एजेंसी)। आईसीसी विश्व कप 2023 के शुरू होने से पहले फैंस के लिए राहत भरी खबर सामने आई है। दरअसल, जिन शहरों में मैच हैं वहां दर्शकों को ठहरने के लिए माथापच्ची ना करनी पड़े, इसके लिए ओयो ने शुक्रवार, 7 जुलाई को ऐलान किया कि वह आगामी वनडे विश्व कप के मेजबान शहरों में आगामी तीन महीनों में 500 नए होटल जोड़ेगा, जो 5 अक्टूबर से शुरू होने वाला है। नरेंद्र मोदी स्टेडियम के पास जो होटल हैं, उनकी बुकिंग अभी से कईयों में फुल हो चुकी है। इससे 15 अक्टूबर को भारत बनाम पाकिस्तान मैच देखने के लिए आने वाले बाहरी दर्शक परेशान नजर आए। ऐसे में ओबायओ ने नए होटलों को अपने साथ जोड़ने का फैसला किया। अपने राजस्व को मजबूत करने के संभावित अवसर को देखते हुए, कंपनियां रुचि दिखा रही हैं, और इसलिए ओबायओ को स्थिति का लाभ उठाने के लिए शीघ्रता से कार्य करने की जरूरी है। उनके प्रवक्ता ने पहले ही नए विकास की पुष्टि कर दी है और कहा है कि उनका मुख्य एजेंडा विश्व कप के दौरान आरामदायक और किफायती आवास प्रदान करना है।

किफायती कमरा उपलब्ध होगा : प्रवक्ता ने मीडिया को बताया, ओयो क्रिकेट विश्व कप की मांग को पूरा करने के लिए अगले तीन महीनों में मेजबान शहरों में 500 होटल जोड़ेगा। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हर कोई जो अपनी पसंदीदा टीमों को देखने के लिए दूर से सफर कर रहा है, उसे आरामदायक और किफायती कमरा उपलब्ध हो।

मेकमाईट्रिप ने भी दिखाई दिलचस्पी: ओयो की तरह, ऑनलाइन ट्रैवल सेवा प्रदाता मैक माई ट्रिप ने भी टूर्नामेंट के दौरान प्रशंसकों को आरामदायक प्रवास के लिए आमंत्रित किया है। कंपनी ने एक नई सुविधा भी जोड़ी है जो शहर में क्रिकेट स्टेडियम से आवास की दूरी को दर्शाएगी ताकि प्रशंसकों को सबसे उपयुक्त आवास विकल्प ढूंढने में मदद मिल सके। मेकमाईट्रिप के मुख्य व्यवसाय अधिकारी परीक्षित चौधरी ने कहा, हमने देश भर के चुनिंदा शहरों में अक्टूबर और नवंबर के दौरान होमस्टे प्रोपर्टियों की खोज में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है। यह एक अच्छा संकेत है और यह दर्शाता है कि क्रिकेट प्रशंसक आवास विकल्प के रूप में होमस्टे तलाशने के लिए पहले से कहीं अधिक इच्छुक हैं। उन्होंने कहा, अक्टूबर और नवंबर में होने वाले मैचों की जगहों पर होमस्टे का एक बड़ा हिस्सा अभी भी क्रिकेट प्रेमियों के लिए किफायती कीमत पर उपलब्ध है।

मिशेल मार्श का शतक

आस्ट्रेलिया 263 पर सिमटी

लार्ड्स (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर मिशेल मार्श ने इंग्लैंड की खराब कैचिंग का पूरा फायदा उठाते हुए शतक जड़ा जिससे मेहमान टीम ने तीसरे एशेज क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन शानदार शतक लगाकर अपनी टीम को संकट से निकाल लिया। 5 टेस्ट की श्रृंखला में 0-2 से पिछड़ रहे इंग्लैंड ने 85 रन तक ऑस्ट्रेलिया के चार विकेट झटक लिए थे लेकिन मार्श ने क्रिस वोक्स की गेंद पर जो रूट से मिले जीवनदान का पूरा फायदा उठाते हुए शतक जड़ा।

चोटिल खिलाड़ी के विकल्प के तौर पर लगभग चार साल में पहला टेस्ट खेल रहे मार्श ने 118 रन बनाए। रूट अगर 12 रन के निजी स्कोर पर लंच के तुरंत बाद मार्श का कैच पकड़ लेते तो ऑस्ट्रेलिया का स्कोर पांच विकेट पर 98 रन हो जाता। मार्श ने 118 गेंद की अपनी आक्रामक पारी के दौरान 17 चौके और चार छक्के मारे। इससे पहले इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। डेविड वार्नर ने स्टुअर्ट ब्रॉड की मैच की पहली गेंद पर चौका जड़ा लेकिन इसी ओवर की पांचवीं गेंद पर इस तेज गेंदबाज ने उन्हें दूसरी स्लिप में क्राउली के हाथों कैच करा दिया। मैच फिटनेस से जुड़ी चिंताओं के कारण पहले दो टेस्ट से बाहर रहे मार्क वुड ने अपनी तेज गति से बल्लेबाजों को परेशान किया। उन्होंने शुरुआती तीन ओवर मेडन फेंके और पहला रन 23वीं गेंद पर दिया। वुड ने तेज और स्विंग होती फुल लेंथ गेंद पर सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा (13) को बोल्ड करके ऑस्ट्रेलिया को दूसरा झटका दिया। स्टीव स्मिथ 22, ट्रेविस हेड 39, एलेक्स कैरी 8, मिचेल स्टार्क 2, कप्तान पैट कमिंस 0, टोड मर्फी 13 रन ही बना पाए जिससे ऑस्ट्रेलिया 263 रन पर सिमट गई।

रिंकू सिंह और गायकवाड़ के लिए खुशखबरी, टी-20 मैचों की सीरीज में खेलते हुए आएंगे नजर

नईदिल्ली (एजेंसी)। रिंकू सिंह और रुतुराज गायकवाड़ के लिए खुशखबरी सामने आई है। आयरलैंड के खिलाफ 18, 20 और 23 अगस्त को खेली जाने वाली तीन टी-20 मैचों की सीरीज के लिए ये दोनों युवा खिलाड़ी उड़ान भरेंगे। आईपीएल में कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए शानदार प्रदर्शन करने वाले सिंह का आगामी वेस्टइंडीज दौरे के लिए चयन न होने से सभी में गुस्सा पैदा हो गया था। भारतीय क्रिकेट हालांकि, चयन समिति वेस्टइंडीज के खिलाफ युवा टीम नहीं उतारना चाहती थी।

इसके बजाय, वे सभी को सीरीज दर सीरीज आजमाना चाहते थे। साथ ही, वे चाहते हैं कि खिलाड़ी लंबे सीजन से पहले तरोताजा रहें। बीसीसीआई के एक सूत्र ने कहा, रिंकू और आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन करने वाले अन्य खिलाड़ी आयरलैंड के लिए उड़ान भरेंगे क्योंकि चयन समिति सभी को एक चरण में आजमाना नहीं चाहती है। भारतीय वनडे टीम के सात खिलाड़ी हैं जो टी20 नहीं खेलेंगे क्योंकि आगे चलकर वे खिलाड़ी हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे अगस्त के अंत में एशिया कप खेलेंगे।

ऋषभ पंत ने काटा केक, रैना ने रिश्ते को बताया अटूट बंधन, ऐसे मिली धोनी को जन्मदिन की बधाई

नईदिल्ली (एजेंसी)। 2011 विश्व कप विजेता भारत के कप्तान एमएस धोनी शुक्रवार, 7 जुलाई को 42 साल के हो गए हैं। उच्च दबाव वाली परिस्थितियों में अपनी शांति के लिए जाने जाने वाले कैप्टन कूल की दुनिया भर के क्रिकेटरों और प्रशंसकों द्वारा प्रशंसा की जाती है।

धोनी, जिन्होंने 2020 में क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की, उनके पास तीनों आईसीसी व्हाइट-बॉल टूर्नामेंट वनडे विश्व कप, टी20 विश्व कप और चैंपियंस ट्रॉफी में जीत हासिल करने वाले एकमात्र कप्तान के रूप में एक अनूठा रिकॉर्ड है। धोनी के जन्मदिन के मौके पर भारत के विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत ने उनकी तरफ से केक काटकर खास दिन मनाया। पंत ने एक इंस्टाग्राम पोस्ट में कहा, जन्मदिन मुबारक हो माही भाई। आप तो हो नहीं पास आपके लिए केक कट लेता हूं। जन्मदिन मुबारक हो।

पंत, जो अभी भी चोटों से उबर रहे हैं, ने एक इंस्टाग्राम स्टोरी में एक नोट भी लिखा। पंत ने कहा, देश भर के कई लोगों के लिए प्रेरणा। आपने भारतीय क्रिकेट के लिए जो कुछ भी किया है, उसके लिए धन्यवाद। जन्मदिन मुबारक हो माही भाई। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग ने ट्विटर पर धोनी को उनके विशेष दिन की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने लिखा, सूर्य भगवान के पास अपने स्वर्गीय रथ को खींचने के लिए 7 घोड़े हैं। ऋग्वेद में दुनिया के 7 हिस्से, 7 ऋतुएं और 7 किले, 7 बुनियादी संगीत स्वर, शादी में 7 फेरे, दुनिया के 7 आश्चर्य हैं। और 7वें पर 7वें महीने का दिन- एक महान शख्स धोनी का जन्मदिन। धोनी के पूर्व भारत और सीएसके टीम के साथी सुरेश रैना ने लिखा, मेरे बड़े भाई एमएस धोनी को जन्मदिन की शुभकामनाएं ! पिच साझा करने से लेकर हमारे सपने साझा करने तक, हमने जो बंधन बनाया है वह अटूट है। एक नेता और एक दोस्त के रूप में आपकी ताकत , मेरा मार्गदर्शक प्रकाश रहा है। आने वाला वर्ष आपके लिए खुशी, सफलता और अच्छा स्वास्थ्य लेकर आए। चमकते रहो, नेतृत्व करते रहो और अपना जादू फैलाते रहो।

सुपर यूनाइटेड रैपिड और ब्लिट्ज़ शतरंज , आनंद को एकल बढ़त

जाग्रेब , क्रोशिया (एजेंसी)। ग्रांड चैस टूर के तीसरे पड़ाव सुपर यूनाइटेड रैपिड और ब्लिट्ज़ शतरंज टूर्नामेंट के चार राउंड के बाद भारत के पाँच बार के विश्व चैम्पियन विश्वनाथन आनंद सबसे आगे चल रहे है चार राउंड के बाद तीन जीत और एक ड्रॉ के साथ आनंद 7 अंक बनाकर पहले स्थान पर चल रहे है । आनंद नें खेल की शुरुआत काले मोहरो से अलीरेजा फिरौजा से ड्रॉ खेलकर की पर इसके बाद सफ़ेद मोहरो से रोमानिया के रिचर्ड रापोर्ट को उन्होने सिसिलियन ओपनिंग में बड़े शानदार अंदाज में पराजित किया , तीसरे राउंड में उन्होने मेजबान देश के कोंस्टंटिन लुपुलेस्कु को काले मोहरो से पराजित करते हुए दूसरी जीत दर्ज की जबकि चौंथे राउंड में उन्होने क्रोशिया के इवान सारिक को हराकर लगातार तीसरी जीत दर्ज की । किसी जीसीटी प्रतियोगिता में पहली बार खेल रहे भारत के 17 वर्षीय नंबर दो खिलाड़ी डी गुकेश के लिए टूर की शुरुआत कार्लसन के खिलाफ हार से हुई पर उसके बाद उन्होने यान नेपोमनिशी और अलीरेजा फिरौजा और रिचर्ड रापोर्ट से ड्रॉ खेलते हुए वापसी की ।फिलहाल 4 राउंड के बाद आनंद 7 अंक ,पोलैंड के यान डूड़ा 6 अंक, यूएसए के फबियानों करूआना और रोमानिया के रिचर्ड रापोर्ट 5 अंक बनाकर खेल रहे है।

चार देशों के हॉकी टूर्नामेंट के लिए भारतीय टीम घोषित

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्पेन में 25 जुलाई से शुरू होने वाले चार देशों के हॉकी टूर्नामेंट के लिए कप्तान हरमनप्रीत सिंह टीम के नेतृत्व में 24 सदस्यीय भारतीय हॉकी टीम की घोषणा कर दी गई। अनुभवी मिडफील्डर हार्दिक सिंह उपकप्तान होंगे। हॉकी इंडिया ने शुक्रवार को 24 सदस्यीय भारतीय पुरुष हॉकी टीम की घोषणा की जो 25 से 30 जुलाई तक टेरासा, स्पेन में आयोजित होने वाले टूर्नामेंट में भाग लेगी। भारत चार देशों के टूर्नामेंट में इंग्लैंड, नीदरलैंड और मेजबान स्पेन के खिलाफ खेलेगा जो बहुप्रतीक्षित हीरो एशियन चैंपियंस ट्रॉफी चेन्नई 2023 से पहले भारतीय टीम के लिए तैयारी कार्यक्रम के रूप में काम करेगा। टीम का नेतृत्व शीर्ष ड्रैगफ्लिकर और डिफेंडर हरमनप्रीत सिंह करेंगे और उप कप्तानी शानदार मिडफील्डर हार्दिक सिंह करेंगे। गोलकीपिंग की जिम्मेदारी श्रीजेश परट्टू रवींद्रन और कृष्ण बहादुर पाठक की प्रतिभाशाली जोड़ी को सौंपी जाएगी, जबकि डिफेंडरों की सूची में हरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, जरमनप्रीत सिंह, मनप्रीत सिंह, संजय शामिल हैं। इसके अलावा, बेल्जियम में एफआईएच प्रो लीग मैचों में चूकने वाले डिफेंडर वरुण कुमार और नीलम संजीव ज़ेस को भी टीम में रखा गया है।

इस बीच, मिडफील्ड का नियंत्रण हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, शमशेर सिंह, राज कुमार पाल जैसे ऊर्जावान और गतिशील खिलाड़ियों द्वारा किया जाएगा। इसके अलावा, बेल्जियम में एफआईएच प्रो लीग मैच मिस करने के बाद सुमित और नीलकंठ शर्मा टीम में वापस आ गए हैं। फॉरवर्ड पंक्ति में ललित कुमार उपाध्याय, मनदीप सिंह, गुरजंत सिंह, सुखजीत सिंह, अभिषेक, पवन, दिलप्रीत सिंह, सिमरनजीत सिंह और कार्थी सेल्वम की घातक आक्रमण क्षमता शामिल है।।

टीम चयन पर बोलते हुए, मुख्य कोच क्रेग फुल्टन ने कहा, ''हमने सावधानीपूर्वक एक संतुलित टीम चुनी है जो अनुभव और युवा ऊर्जा को एक साथ लाती है। हमारा उद्देश्य एक एकजुट इकाई बनाना है जो उच्चतम स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सके। उन्होने कहा '' स्पेन में चार देशों का टूर्नामेंट हमें अपनी रणनीतियों को बेहतर बनाने और शीर्ष-गुणवत्ता वाले विरोधियों के खिलाफ अपने कौशल का परीक्षण करने के लिए सही मंच प्रदान करेगा। यह हमें उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करेगा जिनमें सुधार की आवश्यकता है, इस प्रकार यह एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी और एशियाई खेल के लिये हमारी तैयारियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

धोनी सिर्फ 30 लाख कमाना चाहते थे वसीम जाफर ने सुनाई एक अनसुनी कहानी

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व कप्तान एमएस धोनी निश्चित रूप से टीम का प्रतिनिधित्व करने वाले सबसे बेहतरीन क्रिकेटरों में से एक हैं। उन्होंने भारत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया और उनके नेतृत्व में मेन इन ब्लू ने कई प्रशंसाएं अर्जित कीं। सिर्फ एक कप्तान के रूप में ही नहीं, वह एक शानदार क्रिकेटर भी थे और 41 साल की उम्र में भी उनका विकेटकीपिंग कौशल शीर्ष पर है, जैसा कि इंडियन प्रीमियर लीग के हालिया संस्करण में देखा गया था।

चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान 7 जुलाई, 2023 को अपना 42वां जन्मदिन मनाया। दुनिया भर से शुभकामनाएं मिल रही हैं और उनके प्रशंसक, दोस्त और अनुयायी दिग्गज के लिए अपना प्यार बरसा रहे हैं। तमाम शुभकामनाओं के बीच, भारत के पूर्व क्रिकेटर वसीम जाफर ने वर्ष 2005 से धोनी के बारे में एक अनसुनी कहानी का खुलासा किया, जब उस समय धोनी ने जाफर की पत्नी से कहा था कि वह 30 लाख रुपए कमाना चाहते हैं और अपना शेष जीवन शांति से अपने घर रांची में जीना चाहते हैं।

जाफर की पत्नी से धोनी खूब बातें करते थे: स्पोर्ट्सकीड़ा के साथ एक एक्सक्लूसिव इंटरव्यू में जाफर ने कहा, मुझे याद है कि मैंने वर्ष 2005 में अपनी वापसी की थी, और धोनी टीम में नए थे क्योंकि उन्होंने 2004 के अंत (दिसंबर 2004) में वनडे क्रिकेट खेलकर अपनी शुरुआत की थी। मैं तब टेस्ट क्रिकेट खेलता था। हम पीछे बैठते थे। मैं, मेरी पत्नी, दिनेश कार्तिक, उनकी पत्नी, धोनी और आरपी सिंह, हम सभी पिछली कुछ सीटों पर बैठते थे। धोनी मेरी पत्नी से काफी बातें करते थे क्योंकि हम साथ बैठते थे और हम सब खूब बातें करते थे।

एमएस धोनी की बायोपिक हिट रही और पूरी दुनिया 42 वर्षीय धोनी की पृष्ठभूमि की कहानी जानती है। धोनी रेलवे में नौकरी करते थे और काम और प्रैक्टिस के बीच तालमेल बिठाते थे। लेकिन एक समय ऐसा आया जब उन्होंने पूरी तरह से अपने खेल पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी। एक बार जब उन्हें भारतीय राष्ट्रीय टीम में मौका मिला तो उन्होंने इसका पूरा फायदा उठाया।

लॉडर्स टेस्ट के 'लांगरूम' कांड के बाद एमसीसी ने अपने सदस्यों के प्रवेश पर लगाई पाबंदी

लंदन (एजेंसी)। एमसीसी ने 'लांग रूम' में अपने सदस्यों के प्रवेश पर रोक लगाते हुए कहा है कि उन्होंने लॉडर्स टेस्ट के दौरान आस्ट्रेलियाई क्रिकेटरों को अपशब्द कहकर क्लब को शर्मसार किया है और इस 'अस्वीकार्य' व्यवहार की वजह से कड़ी कार्रवाई की जायेगी । एमसीसी ने अपने कुछ सदस्यों के इस बर्ताव के कारण आस्ट्रेलियाई टीम से माफी मांगी और तीन सदस्यो को निलंबित भी किया । दूसरे एशेज टेस्ट के पांचवें दिन लांग रूम में कुछ आस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों को उन्होंने अपशब्द कहे थे ।

एमसीसी अध्यक्ष ब्रूस सी ब्राउन ने क्लब के सदसयों को लिखे ईमेल में कहा ,'' कुछ सदस्यों के बर्ताव का हमारे क्लब की ख्याति पर काफी बुरा असर पड़ा है । कैमरे पर दिखाये गए इन सदस्यों ने क्लब को शर्मसार किया है । 'गार्डियन' ने कहा कि ब्राउन ने ईमेल में लिखा ,''हमारा क्लब क्रिकेट के प्रचार और प्रसार के लिये सकारात्मक रवैया अपनाने पर विश्वास रखता है लेकिन इन सदस्यों की हरकत से हमारे प्रयासों को धक्का लगा है ।

लांग रूम एमसीसी सदस्यो और उनके मेहमानों के लिये आरक्षित क्षेत्र है । लॉडर्स टेस्ट के पांचवें दिन जॉनी बेयरस्टो की विवादित स्टम्पिंग के बाद आस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों उस्मान ख्वाजा और डेविड वॉर्नर की लांग रूम में दर्शकों के साथ तीखी बहस हो गई थी । एमसीसी ने खिलाड़ियों के ड्रेसिंग रूम से पिच पर आने के रास्ते में सदस्यों का प्रवेश वर्जित कर दिया है । इसके अलावा टीमों के परिसर में आने के समय सदस्य सीढियों का प्रयोग नहीं कर सकेंगे । ये नियम शनिवार को आस्ट्रेलिया और इंग्लैंड की महिला टीमों के बीच टी20 मैच से लागू होंगे ।

धोनी ने 42वां जन्मदिन मनाया, वो 7 मौके जब गुस्से में आए 'कैप्टन कूल'

● अंपायर की भी लगा दी थी क्लास

चेन्नई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को कैप्टन कूल के नाम से भी जाना जाता है। इसका कारण है कि वह खेल के दौरान मैदान पर शांत रहते है और गुस्से को अपने खेल पर हावी नहीं होने देते। लेकिन कई बार ऐसा हुआ है जब धोनी खुद को कूल नहीं रख पाए और मैदान पर भड़के हुए दिखाई दिए। आज धोनी अपना 42वां जन्मदिन मना रहे हैं तो आईए जानते हैं वह 7 मौके जब धोनी कूल नहीं रह पाए।

1. विश्व कप 2011 के फाइनल मैच में भारत को जीत के लिए 22 रन की जरूरत थी। धोनी ने एक गेंद को लॉन्ग ऑन पर हिट किया और दो रन लेना चाहते थे लेकिन युवराज ने दूसरा रन लेने से मना कर दिया। उस वक्त धोनी युवराज पर गुस्सा हुए थे। इस पर युवराज ने भी नाराजगी जताई थी।

2. वर्ष 2011-12 में ब्रिस्बेन में ऑस्ट्रेलिया के साथ हुए मैच में विकेटकीपर धोनी ने सुरेश रैना की गेंद पर माइक हसी की स्टंप के लिए अपील की। थर्ड अंपायर के आउट करार देने पर मैदानी अंपायर ने फैसला बदल दिया और धोनी गुस्से में आ गए थे।

3. आईपीएल 2015 के दौरान चेन्नई सुपर किंग्स और राजस्थान रॉयल्स के बीच एमए चिदंबरम स्टेडियम में मैच के दौरान आखिरी ओवर में चेन्नई को 27 रन की जरूरत थी। गेंद ड्वेन ब्रावो के हाथ में थी। क्रिस मोरिस ने पहली ही गेंद को हिट किया, यह नो बॉल भी थी। गेंद छक्के पर चली गई। मौरिस ने अगली गेंद को मिड विकेट पर मारा। रवींद्र जडेजा ने गेंद को पकड़ने में ढीला रुख अपनाया और मौरिस ने दूसरा रन ले लिया। इस दौरान भी धोनी गुस्से में आ गए थे और जडेजा को यहां गुस्से भरी नजरों से देखा था।

4. साल 2018 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टी20 के 19वें ओवर की पहली गेंद पर मनीष पांडे ने डेन पैटर्सन की गेंद पर सिंगल लिया। धोनी को लगा कि दो रन लिए जा सकते हैं और उन्होंने दूसरे रन के लिए पांडे को बुलाया, लेकिन पांडे ने ध्यान नहीं दिया। इस पर धोनी गुस्से में आ गए और कहा कि गेंद पर ध्यान दो ना कि कहीं और।

5. श्रीलंका के खिलाफ खेले गए टी20 मैच में कुलदीप और चहल की जमकर धुनाई हो रही थी। कुलदीप को जब लगातार चौके-छक्के पड़ रहे थे तो धोनी उसके पास गए और कहा कवर्स हटाकर कवर्स डीप कर लो और प्वॉइंट ऊपर रख लो। इस पर कुलदीप ने मना कर दिया। तब भी धोनी गुस्से में आ गए थे और कुलदीप से कहा था कि मैं पागल हूं यहां पर 300 वनडे खेला हूं।

6. आईपीएल 2019 में चेन्नई सुपरकिंग्स और किंग्स इलेवन पंजाब के बीच हुए मुकाबले में पंजाब को जीत के लिए 12 गेंदों में 39 रन की जरूरत थी। धोनी ने गेंद दीपक चाहर को थमाई। दीपक ने पहली गेंद ही नो बॉल फेंकी। सरफराज ने इस गेंद पर चौका जड़ दिया। अगली गेंद भी नो बॉल थी। इस पर सरफराज ने 2 रन बनाए। धोनी इसके बाद सुरेश रैना के साथ गुस्से में दीपक चाहर के पास गए थे।

7. आईपीएल 2019 में चेन्नई सुपर किंग्स और राजस्थान रॉयल्स के बीच चल रहे एक मैच के दौरान धोनी का गुस्सा लोगों ने देखा। चेन्नई को तीन गेंदों में 8 रन की जरुरत थी और बेन स्टोक्स की एक गेंद को अंपायर ने नो बॉल दे दिया। लेकिन स्क्वेयर लेग पर खड़े अंपायर ने उसे सही करार दिया। इसके बाद डगआउट में बैठे धोनी गुस्से में मैदान तक पहुंच गए और अंपायर से बहस करने लगे।

अदिति अशोक यूएस वुमैंस ओपन के पहले दौर के बाद संयुक्त 39वें स्थान पर

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत की अदिति अशोक यूएस वुमैंस ओपन गोल्फ के पहले दौर में दो ओवर 74 का स्कोर करके संयुक्त 39वें स्थान पर हैं । पहले दौर के कई मुकाबले अभी पूरे नहीं हुए हैं ।

बेंगलुरू की अदिति किसी मेजर टूर्नामेंट में शीर्ष दस में नहीं रही हैं । यहां भी उन्होंने 11वें, 12वें और 18वें होल पर बोगी किये । वह 2019 के बाद यहां पहली बार खेल रही है । उन्होंने 2019 में कट में प्रवेश किया था और संयुक्त 39वें स्थान पर रही थीं लेकिन 2017 में कट में जगह नहीं बना सकी थी ।

छह घंटे से कम नींद लेते हैं तो व्यायाम भी फायदेमंद नहीं, शोध में हुआ चौंकाने वाला खुलासा

नईदिल्ली, एजेंसी। अच्छी सेहत के लिए पर्याप्त नींद लेना जरूरी है। एक नए अध्ययन में दावा किया गया कि अगर रोजाना छह घंटे से कम सोते हैं तो व्यायाम करने पर भी फायदा नहीं मिलेगा। द लैंसेट हेल्दी लॉन्गविटी जर्नल में यह शोध प्रकाशित हुआ है। कम नींद के कारण शारीरिक गतिविधियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ब्रिटेन के यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन (यूसीएल) के शोधकर्ताओं ने अध्ययन किया। इस दौरान शोधकर्ताओं ने 50 वर्ष और उससे अधिक आयु के 8,958 लोगों को शामिल किया और 10 वर्षों तक उनकी गतिविधियों पर नजर रखा। शोधकर्ताओं ने विश्लेषण किया कि नींद और शारीरिक गतिविधि की आदतों के अलग-अलग संयोजन समय के साथ लोगों के कार्य को कैसे प्रभावित करते हैं। टीम ने पाया कि जो लोग शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय थे और कम नींद लेते थे (औसतन छह घंटे से कम) उनकी शारीरिक स्थिति में तेजी से गिरावट आई। यानी 10 साल बाद उनका शरीर उन दोस्तों के बराबर था, जो कम शारीरिक गतिविधि करते थे। यह अध्ययन पिछले शोध के अनुरूप पाया गया कि हर रात छह से आठ घंटे की नींद बेहतर कार्य क्षमता से जुड़ी हुई थी। अध्ययन के दौरान प्रतिभागियों से कई सवाल पूछे गए। जैसे कि वे सप्ताह में रात में कितनी देर तक सोते हैं। इसके बाद उन्हें तीन समूहों छोटी नींद (छह घंटे से कम), मध्यम नींद (छह से आठ घंटे) और लंबी नींद (आठ घंटे से अधिक) में बांटा गया। इस दौरान प्रतिभागी अपनी नींद और शारीरिक गतिविधि पर निर्भर थे। इसमें पाया गया कि जिन्होंने कम नींद ली, वे समय के साथ कम सक्रिय रहे। शोधकर्ताओं ने पाया कि जो लोग शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय थे, उनका कार्य बेहतर था, चाहे वे कितनी भी देर तक सोए हों। उनमें 10 साल की अवधि में बदलाव आया है। यानि छह घंटे से कम नींद वालों में तेजी से गिरावट हुई। यह 50 और 60 वर्ष के लोगों के अधिक था। यूसीएल की लेखिका मिकाएला ब्लूमबर्ग ने कहा, इससे पता चलता है कि शारीरिक गतिविधि का लाभ प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नींद लेना आवश्यक है। यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य के बारे में सोचते समय नींद और शारीरिक गतिविधि पर एक साथ विचार करना कितना महत्वपूर्ण है।

कर्नाटक में फ्री बस टिकट पाने के लिए हिंदू शख्स ने पहना बुर्का, पकड़ाया

धारवाड़, एजेंसी। गुरुवार को कर्नाटक के धारवाड़ जिले में एक अजीब घटना हुई। एक बस स्टॉप पर बुर्का पहने एक हिंदू व्यक्ति को पकड़ा गया। वीरभद्रैया मठपति नामक व्यक्ति ने कर्नाटक सरकार की शक्ति योजना के तहत मुफ्त बस यात्रा करने के लिए बुर्का पहना था। वीरभद्रैया बस स्टॉप पर अकेले बैठा था तभी यात्रियों की नजर उस पर पड़ी और उन्हें शक होने लगा। उसने दावा किया कि उसने भीख मांगने के लिए बुर्का पहना था। हालांकि, वीरभद्रैया के जवाब से लोग संतुष्ट नहीं हुए। लोगों का शक और गहरा गया कि वह शक्ति योजना के तहत मुफ्त बस टिकट प्राप्त करने के लिए यह भेष अपनाया था। वीरभद्रैया के पास एक महिला के आधार कार्ड की फोटोकॉपी भी थी। आपको बता दें कि महिलाओं के लिए मुफ्त बस सेवा प्रदान करना कर्नाटक में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस द्वारा किए गए पांच चुनावी वादों में से एक था।

दिल्ली के तीस हजारी फायरिंग मामले में दो गिरफ्तार

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली पुलिस ने तीस हजारी अदालत परिसर में गोलीबारी की घटना में शामिल दो वकीलों को गिरफ्तार कर लिया है। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। वकीलों की पहचान दिल्ली बार एसोसिएशन के पूर्व उपाध्यक्ष मनीष शर्मा और ललित शर्मा के रूप में की गई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि उन्हें अदालत में पेश किया जाएगा। गुरुवार को, अदालत ने तीन आरोपियों अमन सिंह, रवि गुप्ता और सचिन सांगवान को चार दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया, जो तीस हजारी अदालत में गोलीबारी में शामिल वकीलों के समूह का हिस्सा थे। 5 जुलाई को तीस हजारी कोर्ट में वकीलों के दो गुट आपस में भिड़ गए थे और गोलीबारी की। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसमें सफेद शर्ट और काली पैंट पहने एक व्यक्ति हवा में फायरिंग कर रहा है, उसके साथ अन्य लोग पत्थर और लकड़ी के तख्ते फेंक रहे हैं। मुख्य रूप से वकील की पोशाक में लोगों को लाठियां लहराते और आपस में उलझते देखा जा सकता है। एक अन्य वीडियो में उस स्थान पर गोलियों के खोखे बिखरे हुए दिखाई दे रहे हैं। पुलिस के अनुसार, बार एसोसिएशन के सचिव अतुल शर्मा और वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनीष शर्मा के बीच आपसी दुश्मनी को लेकर झगड़ा हो गया। पुलिस उपायुक्त (उत्तर) सागर सिंह कलसी ने बताया कि तीस हजारी में गोलीबारी की घटना के बाद आरोपियों को पकड़ने के लिए पुलिस ने रात भर ऑपरेशन चलाया। डीसीपी ने कहा, पुलिस टीम ने इनपुट के आधार पर तकनीकी सहायता ली और भलस्वा, स्वरूप नगर, हैदरपुर, शालीमार बाग और विकासपुरी इलाकों में तलाशी अभियान चलाया और अमन सिंह, सचिन सांगवान और रवि गुप्ता को पकड़ने में कामयाबी हासिल की। डीसीपी ने कहा, वे बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों के प्रतिद्वंद्वी समूह से संबंधित हैं। उनके कब्जे से तीन देशी पिस्टल, चार जिंदा कारतूस और दो कारें जब्त की गई हैं। अधिकारी ने कहा कि तीस हजारी अदालत में दंगे में लिप्त पाए गए।

कांग्रेस ने मणिपुर हिंसा पर अमेरिकी राजदूत की टिप्पणी पर केंद्र की आलोचना की

नई दिल्ली, एजेंसी। मणिपुर हिंसा को लेकर भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी की टिप?पणी के एक दिन बाद विपक्षी कांग्रेस ने केंद्र सरकार की आलोचना करते हुए शुक्रवार को कहा कि देश के आंतरिक मामलों के बारे में किसी अमेरिकी राजदूत द्वारा इस तरह की बयानबाजी पहले कभी नहीं की गई है। कांग्रेस नेता मनीष तिवारी ने सरकार की आलोचना की और एक ट्वीट में कहा, जहां तक मुझे याद है, सार्वजनिक जीवन में कम से कम चार दशक पहले तक मैंने कभी किसी अमेरिकी राजदूत को भारत के आंतरिक मामलों के बारे में इस तरह का बयान देते नहीं सुना है। पूर्व केंद्रीय मंत्री तिवारी ने कहा, हमने दशकों तक पंजाब, जम्मू-कश्मीर, उत्तर पूर्व में चुनौतियों का सामना किया और चतुराई तथा बुद्धिमत्ता से उन पर विजय प्राप्त की। यहां तक कि जब 1990 के दशक में रॉबिन राफेल जम्मू-कश्मीर पर बड़बोले थे, तब भी भारत में अमेरिकी राजदूत सतर्क थे। कांग्रेस नेता ने कहा, मुझे संदेह है कि क्या भारत में नए अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी अमेरिका-भारत संबंधों के जटिल और यातनापूर्ण इतिहास तथा हमारे आंतरिक मामलों में कथित या वास्तविक, नेक इरादे या दुर्भावनापूर्ण हस्तक्षेप के बारे में हमारी संवेदनशीलता से अवगत हैं। इससे पहले गार्सेटी ने मणिपुर हिंसा पर बोलते हुए गुरुवार को कोलकाता में कहा था, मुझे नहीं लगता कि यह रणनीतिक चिंताओं के बारे में है, यह मानवीय चिंताओं के बारे में है। जब इस प्रकार की हिंसा में बच्चे या व्यक्ति मरते हैं तो आपको इसकी परवाह करने के लिए भारतीय होने की आवश्यकता नहीं है। हम शांति को कई अच्छी चीजों के लिए एक मिसाल के रूप में जानते हैं। पूर्वोत्तर और पूर्व में बहुत प्रगति हुई है...

कांग्रेस गहलोत के चेहरे पर चुनाव क्यों नहीं लड़ना चाहती? सचिन पायलट का दबाव या रणनीति

जयपुर, एजेंसी।
राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इस बार के विधानसभा चुनाव में सीएम फेस नहीं होंगे। कांग्रेस पार्टी बिना चेहरे के ही विधानसभा चुनाव में जनता के बीच जाएगी। सियासी जानकारों का कहना है कि कांग्रेस आलाकमान ने सचिन पायलट के दबाव में गहलोत को सीएम फेस घोषित नहीं करने का निर्णय लिया है। इससे पहले दो विधानसभा चुनाव सीएम गहलोत के चेहरे पर ही लड़े गए थे। गहलोत के मुख्यमंत्री रहते पार्टी 2 बार चुनाव हार चुकी है। राजनीतिक विश्लेषकों का तर्क है कि गहलोत को अगर कांग्रेस आगे करती है तो गुर्जर समेत कई जातियों के वोट खिसकने का डर था। 2018 के चुनाव में बीजेपी के परंपरागत वोट

बैंक माने जाने वाले गुर्जर समुदाय ने कांग्रेस के पक्ष में जमकर वोट किया था। राज्य में 30-40 सीटों पर गुर्जर समुदाय का प्रभाव है।

बता दें, कि कई महीने पहले एआईसीसी ने एक वीडियो शेयर कर गहलोत सरकार की उपलब्धियों का बखान किया था। संकेत यही था कि चुनाव सीएम गहलोत के नेतृत्व में ही लड़ा जाएगा। सीएम गहलोत भी कहते रहे हैं कि मुख्यमंत्री के चेहरे पर ही विधानसभा चुनाव लड़ा जाता है, लेकिन कांग्रेस आलाकमान ने अब बिना सीएम फेस ही चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है। गुरुवार को कांग्रेस के संगठन महामंत्री केसी वेणुगोपाल का कहना है कि राजस्थान में विधानसभा चुनाव सीएम अशोक गहलोत के नेतृत्व में नहीं लड़ा जाएगा। कांग्रेस पार्टी सामूहिकता पर चुनाव लड़ती है। राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे की अध्यक्षता में हुई बैठक में कांग्रेत की करीब 30 नेताओं के साथ मंत्रणा के बाद वेणुगोपाल ने प्रेस वार्ता में साफ कहा कि गहलोत सीएम चेहरा नहीं होंगे। सियासी जानकारों का कहना है कि सचिन पायलट की नाराजगी दूर करने के लिए ही यह निर्णय लिया है। सचिन पायलट की प्रेशर पॉलिटिक्स काम आ गई है। गुरुवार को सचिन पायलट ने दिल्ली में मीडिया से बात करते हुए साफ कहा कि उनकी बातों को गंभीरता से लिया है। मिलकर चुनाव लड़ेंगे। सरकार रिपीट होगी। सचिन पायलट 2013 चुनाव में कांग्रेस को मिली करारी हार के बाद राजस्थान के अध्यक्ष बनाकर दिल्ली से भेजे गए थे। इसके बाद पायलट राजस्थान में ही हैं। अध्यक्ष रहते पायलट ने वसुंधरा के गढ़ पूर्वी राजस्थान में मजबूत पकड़ बना ली। पूर्वी राजस्थान के 8 जिले दौसा, करौली, भरतपुर, टोंक, जयपुर, अलवर, सवाई माधोपुर और धौलपुर में विधानसभा की कुल 58 सीटें हैं। गहलोत को सीएम फेस घोषित नहीं करने का लाभ पार्टी को मिल सकता है।

भारतीय जनता पार्टी के पास 105 विधायक हैं

महाराष्ट्र में ताबड़तोड़ झटकों से सहमा विपक्ष, लोकसभा चुनाव में भाजपा को कितना फायदा

मुंबई, एजेंसी।
शिवसेना और एनसीपी में विभाजन के बाद महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के पास अब कुल 185 विधायक हैं। भारतीय जनता पार्टी के पास 105 विधायक हैं। वहीं, एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के 40 और अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के खेमे के 40 विधायकों का समर्थन सरकार को है। अब बड़ा सवाल यह है कि क्या यह नया गठजोड़ महाराष्ट्र में भाजपा के हित में साबित होगा या नहीं?

भाजपा और शिवसेना ने 2019 का लोकसभा चुनाव में साथ लड़ा। 48 में से 41 सीटों पर जीत मिली थी। भाजपा 23 और शिवसेना 18 सीटें जीतीं। 2019 में ही होने वाले विधानसभा चुनाव में भी यही स्थिति बनी। एनडीए के खाते में 161 सीटें आईं। बीजेपी 25.75प्रतिशत वोट शेयर के साथ 105 सीटें हासिल कीं। वहीं, शिवसेना 56 सीटों और 16.41प्रतिशत वोट शेयर के साथ दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनी। हालांकि, बाद में शिवसेना का रास्ता अलग हो गया। महाराष्ट्र में शिवसेना, एनसीपी और कांग्रेस की सरकार बनी। इस राजनीतिक गठबंधन का भविष्य भी लंबा नहीं रहा। तीन बड़ी पार्टियों और उनके वोट बैंक के एक साथ आने से भाजपा के लिए लोकसभा की राह मुश्लिक दिखने लगी थी। इसी समय महाराष्ट्र में बड़ा सियासी हलचल पैदा होता है। एकनाथ शिंदे के बागी तेवर ने उद्धव ठाकरे से मुख्यमंत्री की कुर्सी छीन ली। बाद में शिंदे की अगुवाई में बीजेपी की सरकार बनी। एकनाथ शिंदे के साथ 56 में से 40 विधायक आए।

महाराष्ट्र में शिवसेना एक प्रमुख हिंदुवादी पार्टी है। इसके कई विधायक एमवीए की विचारधारा और राजनीतिक शैली के साथ सहज नहीं थे। एनसीपी और कांग्रेस की धर्मनिरपेक्ष वाली राजनीति उन्हें रास नहीं आ रही थी। यही कारण हैं कि विद्रोही विधायकों ने महाराष्ट्र में नई सरकार बनाने के लिए भाजपा के साथ गठबंधन करने का फैसला किया। शिंदे को मुख्यमंत्री के रूप में चुना गया। चुनाव आयोग द्वारा विद्रोही गुट को पार्टी का नाम और चुनाव चिह्न दिए जाने के बाद शिवसेना दो भागों में विभाजित हो गई। शिवसेना को मुंबई और कोंकण क्षेत्रों में प्रभावशाली माना जाता है। मुंबई, ठाणे और कल्याण में भी एक प्रमुख राजनीतिक ताकत माना जाता है। मराठा समुदाय, हिंदुत्व के अनुयायी और शहरी मध्यम वर्ग को इसके मुख्य समर्थकों के रूप में देखा जाता है। भाजपा ने 39 विधायकों, 12 सांसदों और शिवसेना के संगठनात्मक ढांचे के एक हिस्से के साथ एकनाथ शिंदे पर बड़ा दांव लगाया है।

एकनाथ शिंदे इन इलाकों में मजबूत: एकनाथ शिंदे को ठाणे और कल्याण-डोंबिवली नगरपालिका क्षेत्रों में एक मजबूत नेता के रूप में देखा जाता है। यहां कई नगरसेवक और पार्टी कार्यकर्ताओं ने उनका समर्थन किया है। इन इलाकों बाल ठाकरे का भी वर्चस्व था, लेकिन 2019 के चुनाव में बांद्रा पूर्व विधानसभा सीट पर शिवसेना हार गई थी। आपको बता दें कि ठाकरे परिवार का निवास मातोश्री बांद्रा पूर्व में ही है। इस क्षेत्र को उनके गृह क्षेत्र के रूप में देखा जाता है। मतदाताओं से उद्धव ठाकरे ने भी अपील की थी।

एकनाथ शिंदे ने शिवसेना के 70प्रतिशत उम्मीदवार यानी विधानसभा चुनाव में पार्टी को मिले 16.41प्रतिशत वोटों में से लगभग 12प्रतिशत अपने साथ ले आए। भाजपा 2024 के लोकसभा चुनाव में इस चुनावी अंकगणित को भुनाने की कोशिश करेगी।

नेपाल के रास्ते एंट्री...एनसीआर में ठिकाना, आदि शर्मा बन नोएडा में रह रहा था चीनी नागरिक; ऐसे हुआ खुलासा

नोएडा एजेंसी।
नोएडा एसटीएफ ने लगातार 13 दिनों तक छापेमारी करने के बाद भारत में अवैध तरीके से घुसे चीन के नागरिक को ग्रेटर नोएडा से गिरफ्तार किया है। उसने भारतीय आधार कार्ड और पैन कार्ड बनवाकर पासपोर्ट के लिए आवेदन भी कर दिया था। एसटीएफ, पुलिस और गुप्तचर एजेंसियां उससे गहनता से पूछताछ कर रही हैं।

एसटीएफ को चीन के शंघाई में रहने वाले वांग हांगजिई के घुसपैठ करने की सूचना मिली थी। वह ग्रेटर नोएडा में आदि शर्मा के नाम से रह रहा था। इंस्पेक्टर सचिन के नेतृत्व में एसटीएफ की टीम उसे तलाशने में जुटी थी। एसटीएफ ने बुधवार देर रात ग्रेटर नोएडा के सूरजपुर थाना क्षेत्र से उसे गिरफ्तार कर सूरजपुर पुलिस को सौंप दिया। केंद्रीय एजेंसियों को भी इसकी सूचना दे दी गई है। एसटीएफ के अनुसार, चीन के रहने वाले वांग हांगजिई ने भारत में घुसपैठ करने के बाद फर्जी तरीके से यहां की नागरिकता के दस्तावेज हासिल कर लिए। इसके पीछे क्या उद्देश्य था, इसको लेकर अभी जांच जारी है। एसटीएफ के अनुसार उसने पहले दिल्ली और बाद में नोएडा के पते पर दस्तावेज बनवाए। अभी तक हुई पूछताछ में उसने बताया है कि वह यहां पर मोबाइल के धंधे से जुड़ा था और इससे जुड़ी इंडस्ट्रियों के लिए काम करता था। एसटीएफ के अधिकारियों ने इसके पास से भारतीय आधार कार्ड और पैन कार्ड बरामद कर लिए हैं और पूछताछ की जा रही है। एसटीएफ की नोएडा यूनिट ने 23 जून को चीन और तिब्बत के नागरिकों के फर्जी तरीके से भारतीय पासपोर्ट और अन्य दस्तावेज बनाने वाले एक गिरोह का खुलासा करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया था। जांच के दौरान पता चला कि उन्होंने एक चीनी नागरिक का आदि शर्मा के नाम से फर्जी आधार और पैन कार्ड बनाया है। गिरफ्तार अकबर के पास से पैन कार्ड के लिए आवेदन की गई स्लिप मिली, जिस पर आवेदक का नाम आदि शर्मा पुत्र अरुण शर्मा निवासी अरुणा नगर मजनूं का टीला नार्थ दिल्ली लिखा था। इसका एक पैन कार्ड और आधार भी मिला। पैन कार्ड दिल्ली के पते पर और आधार कार्ड नोएडा के सेक्टर 93 बी के पते पर बना था। इसके बाद से ही एसटीएफ उसकी तलाश में जुटी थी। नेपाल के रास्ते ही भारत की सीमा में अवैध रूप से विदेशी नागरिक प्रवेश कर रहे हैं। पाक की सीमा हैदर भी चार बच्चों के साथ नेपाल के रास्ते से ही गौतमबुद्धनगर तक पहुंची। चीन के 13 नागरिकों का गिरोह पकड़ा था।

ऐसी सेवाएं जो इस्लाम में हराम, दूल्हे के परिवार के लिए आर्थिक बोझ; ब्यूटी सैलून पर तालिबान

काबुल, एजेंसी। तालिबान अफगानिस्तान में महिलाओं के 'ब्यूटी सैलून' पर बैन की वजह बताई है। उसने कहा है कि ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि ये ऐसी सेवाएं देते हैं जो इस्लाम में हराम हैं। साथ ही विवाह के दौरान दूल्हे के परिवार के लिए यह आर्थिक परेशानी का कारण भी बनते हैं। तालिबान का यह बयान ऐसे वक्त आया है जब कुछ दिन पहले ही उसने इस बात की पुष्टि की थी उसने देश में इस तरह के सभी सैलून को अपना करोबार समेटने और दुकान बंद करने के लिए एक महीने का वक्त दिया है। वर्चु एंड वाइस मंत्रालय के प्रवक्ता सादिक अकिफ महजर ने इस बारे में जानकारी दी। उन्होंने ऐसे कई सैलून को सूचीबद्ध किया और कहा कि भवों को आकार देना, मेकअप का इस्तेमाल करना, किसी महिला के प्राकृतिक बालों को बढ़ाने के लिए दूसरों के बाल का इस्तेमाल करना इस्लाम के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि ब्यूटी सैलून विवाह के दौरान दूल्हे के परिवार के लिए आर्थिक परेशानी का कारण बनते हैं क्योंकि यहां दुल्हन के मेकअप का खर्चा दूल्हे के परिवार को उठाना होता है। तालिबान के इस फरमान पर अंतरराष्ट्रीय अधिकारियों ने महिला उद्यमियों पर इसके प्रभाव को लेकर चिंता जताई है। अफगान महिलाओं एवं लड़कियों की आजादी और उनके अधिकारों पर पाबंदी लगाने वाला यह हालिया फैसला है। इससे पहले तालिबान महिलाओं एवं लड़कियों की शिक्षा, सार्वजनिक स्थान पर जाने और रोजगार के अधिकतर तरीकों पर पाबंदी लगा चुका है।

भारतीय दूतावास पर हमले की अमेरिकी सांसदों ने की निंदा

वाशिंगटन, एजेंसी।
अमेरिकी सांसदों और प्रभावशाली भारतीय-अमेरिकियों ने सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास में आगजनी के प्रयास की निंदा की और इस आपराधिक कृत्य को करने वाले लोगों के खिलाफ शीघ्र कार्रवाई की मांग की। उन्होंने अमेरिका में भारत के राजदूत तरणजीत सिंह संधू के खिलाफ हिंसक बयानबाजी की भी आलोचना की और कहा कि स्वतंत्र भाषण का मतलब हिंसा भड़काने या संपत्ति को नुकसान पहुंचाने का लाइसेंस नहीं है। खालिस्तान समर्थकों द्वारा दो जुलाई को ट्विटर पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास में आगजनी की घटना को दिखाया गया है। वीडियो में हिंसा से हिंसा उत्पन्न होती है शब्द लिखे हुए हैं। साथ ही कनाडा स्थित खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएफ) के प्रमुख हरदीप सिंह निज्जर की मौत से संबंधित समाचार लेख भी दिखाए गए हैं।

भारत के सबसे वांछित आतंकवादियों में से एक निज्जर के सिर पर 10 लाख रुपये का नकद इनाम था। उसकी पिछले महीने कनाडा में एक गुरुद्वारे के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। गुरुवार को जारी एक संयुक्त बयान में भारत और भारतीय-अमेरिकियों पर कांग्रेसनल कॉकस के सह-अध्यक्ष, कांग्रेसी रो खन्ना और माइकल वाल्ट्ज ने कहा कि राजनयिक सुविधाओं के खिलाफ हिंसा बर्दाश्त नहीं की जाएगी।उन्होंने कहा, इंडिया कॉकस के सह-अध्यक्ष के रूप में हम सैन

फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास में आगजनी और बर्बरता के प्रयास और राजदूत संधू सहित भारतीय राजनयिकों को निशाना बनाकर हिंसक बयानबाजी वाले पोस्टर को सोशल मीडिया पर प्रसारित करने की कड़ी निंदा करते हैं। हम प्रत्येक अमेरिकी के लिए स्वतंत्र भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का समर्थन करते हैं, लेकिन यह संपत्ति को नुकसान पहुंचाने या हिंसा भड़काने का लाइसेंस नहीं है। हिंसा अपराध है और इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हम विदेश विभाग से भारतीय वाणिज्य दूतावास में हुए हमले में शामिल लोगों को जवाबदेह ठहराने का आग्रह करते हैं। गुरुवार तक भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हमले में शामिल लोगों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। व्हाइट हाउस की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के एक प्रवक्ता ने कहा कि अमेरिका राजनयिकों की सुरक्षा को बहुत गंभीरता से लेता है। प्रवक्ता ने बताया, हम संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले राजनयिकों की सुरक्षा को बहुत गंभीरता से लेते हैं और राजनयिक कर्मियों के खिलाफ बर्बरता या हिंसा के कृत्यों की कड़ी निंदा करते हैं। हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए भारतीय-अमेरिकी कांग्रेसी थानेदार ने कहा, हिंसा और आतंक पैदा करने के प्रयास लोकतंत्र में अस्वीकार्य हैं। कांग्रेसी रिच मैककॉर्मिक ने कहा कि यह हमला घृणित और अस्वीकार्य है।उन्होंने एक ट्वीट में कहा, अमेरिकी हमारे सहयोगियों और हमारे देशभक्त भारतीय-अमेरिकी समुदाय के साथ खड़े हैं।

मणिपुर पर अमेरिका बोला-भारत ने मदद मांगी तो हम तैयार, :चिंता जताने के लिए भारतीय होना जरूरी नहीं, कांग्रेस बोली- यूएस दखल न दे

न्यूयार्क एजेंसी।
अमेरिका ने गुरुवार को मणिपुर में जारी हिंसा पर चिंता जाहिर की है। भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने कहा है कि अगर भारत मदद मांगता है तो हम उसके लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा- हम जानते हैं कि ये भारत का आंतरिक मसला है, हम जल्द से जल्द शांति की उम्मीद करते हैं। वहां के हालातों पर हमें कोई रणनीतिक चिंता नहीं है, हमें लोगों की चिंता है।

दरअसल, कोलकाता में एक कार्यक्रम के दौरान एक पत्रकार ने उनसे मणिपुर पर सवाल पूछा था। इसके जवाब में गार्सेटी ने ये बातें कही। उन्होंने यह भी कहा कि मणिपुर के बच्चों और वहां मर रहे लोगों पर चिंता जाहिर करने के लिए किसी का भारतीय होना ही जरूरी नहीं है।

गार्सेटी ने ये भी कहा है कि भारत के नॉर्थ-ईस्ट में पिछले कुछ सालों में काफी तरक्की हुई है। शांति किसी भी इलाके के लिए काफी बेहतर चीजें लाती है। अगर मणिपुर में हिंसा खत्म होती है और शांति स्थापित होती है तो हम वहां निवेश करेंगे। हम नए प्रोजेक्टस भी लाने के लिए तैयार हैं। गार्सेटी ने लोकतंत्र पर भी अपनी बात रखी । उन्होंने कहा- लोकतंत्र काफी

मुश्किल है, अल्पसंख्यकों के अधिकारों की हिफाजत करना काफी मुश्किल काम है। अमेरिका के राजदूत एरिक गार्सेटी के बयान पर कांग्रेस ने पलटवाट किया है। कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने कहा है प्रधानमंत्री मोदी को मणिपुर जाना चाहिए था। हम इस मुद्दे को संसद में भी उठाएंगे।

उन्होंने कहा- भारत कई चुनौतियों से गुजर रहा है, पर हमें पसंद नहीं की कोई हमारे मामलों में दखलंदाजी करे। अमेरिका में गन से होने वाली हिंसा में कई लोग मारे जाते हैं। नस्लीय दंगे होते हैं, लेकिन हमने कभी उन्हें इस पर लेक्चर नहीं दिया। नए राजदूत को भारत-अमेरिका के रिश्तों के इतिहास की जानकारी रखनी चाहिए।

खालिस्तान के मुद्दे पर घिरा कनाडा; जस्टिन ट्रूडो की सफाई पर भारत की दो-टूक

टोरंटो एजेंसी।
कनाडा में हाल के दिन बढ़ी खालिस्तानी एक्टिविटी को लेकर भारत ने कई बार सवाल उठाए। इस दौरान कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की आलोचना हुई। जिसका जबाव देते हुए उन्होंने कहा कि उनके देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा की जाती है। भारतीय विदेश मंत्रालय की तरफ से जस्टिन ट्रूडो के बयान पर प्रतिक्रिया जाहिर की गई है। भारत ने कनाडा में खालिस्तानी तत्वों की गतिविधियां बढ़ने और हिंसक घटनाओं को अस्वीकार्य करार देते हुए कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर आतंकवादी तत्वों को स्थान नहीं दिया जाना चाहिए। राजनयिकों को लेकर धमकी भरे पोस्टर और मिशनों पर हिंसा की घटनाओं पर आपत्ति व्यक्त करते हुए कहा कि दूसरे देशों में राजनयिकों, अपने मिशन की सुरक्षा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और मेजबान देशों से वियना संधि के अनुरूप दूतावासों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की उम्मीद की जाती है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने साप्ताहिक प्रेस वार्ता में कहा,

भारतीय राजनयिकों, मिशन के खिलाफ हिंसा भड़काने वाले पोस्टर अस्वीकार्य हैं। यह एक गंभीर मुद्दा है और हमने संबंधित देशों के समक्ष इस विषय को उठाया है। उन्होंने कहा, हमारी अपेक्षा है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर आतंकवादी, चरमपंथी तत्वों को कोई स्थान नहीं दिया जाए। बागची ने कहा कि राजनयिकों, वाणिज्य दूतावासों, उच्चायोगों को लेकर पोस्टर लगाने का मुद्दा काफी गंभीर है, जिनमें हिंसा के लिए उकसाने, धमकी देने की बात की गई है।

उन्होंने कहा कि ऐसे मुद्दों पर कनाडा, ब्रिटेन, अमेरिका, आस्ट्रेलिया से बात की गई है, कुछ जगहों से तत्काल कार्रवाई की सूचना मिली है और कुछ स्थानों को लेकर अपेक्षा है कि कार्रवाई की जायेगी। बागची ने कहा कि अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हमले की घटना को भी वहां के प्रशासन के समक्ष उठाया गया और वहां से उच्च स्तर पर प्रतिक्रिया आई है तथा ऐसे कृत्य को उन्होंने आपराधिक बताया है। कुछ दिन पहले ही भारत ने नयी दिल्ली में कनाडा के उच्चायुक्त को तलब किया था और कनाडा में खालिस्तान समर्थकों की बढ़ती गतिविधियों पर एक डिमार्शे (आपत्ति जताने वाला पत्र) जारी किया था। वहीं, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडू ने बृहस्पतिवार को कहा कि उनके देश ने आतंकवाद के खिलाफ हमेशा गंभीर कदम उठाया है और वह ऐसा करता रहेगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह मानना गलत है कि उनकी सरकार का खालिस्तान समर्थकों और देश में आतंकवादियों के खिलाफ नरम रुख है। खालिस्तान समर्थकों के धमकी भरे पोस्टरों एवं पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या से जुड़ी झांकी निकाले जाने की घटना के बारे में पूछे जाने पर कनाडा के प्रधानमंत्री ने कहा कि उनका देश विविधताओं से भरा है और अभिव्यवक्ति की स्वतंत्रता बनाये रखने के साथ हम हिंसा एवं सभी स्वरूपों में चरमपंथ को हतोत्साहित करेंगे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129